

# ਆਸਾਨ ਓੜ

ਓੜ ਉਮਰਓ ਐਰ ਝਿਯਾਰਤੇ ਮਈਨਾ ਮੁਨਘਰਓ



ਤਾਲੀਫ਼

ਓਝਰਤ ਮਵਲਾਨਾ ਓਫ਼ਿਝੁਰਓਮਾਨ ਪਾਲਨਪੂਰੀ (ਓਓਓਓਓ)

وَاتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ (سورة البقرة)

तर्जमा : “और पूरा करो उज और उमरउ  
अद्लाउ के लिये.”

# आसान उज

उज उमरउ और  
जियारते मदीना मुनव्वरउ

उज के आ'माल व अरकान को दर्ज बदर्ज (step by step)  
बयान किया गया है के हाज को हर अक अमल के बाद दूसरा  
अमल क्या करना है. इससे किताब न सिर्फ आसान होगी  
बल्के गाईड का काम करेगी. ईन्शा अद्लाउ

तावीफ़

उजरत भवलाना डिफ़्जुरहमान पालनपूरी (काकोसी)

નામે કિતાબ : આસાન હજ

તાલીફ : હઝરત મવલાના હિફ્તુરુહમાન  
પાલનપૂરી (કાકોસી)

કંપોઝિંગ : ઈદારા ફૈઝે અબરાર, મુશ્તાક નગર,  
વલસાડ ૦૨૬૩૨-૨૪૧૧૮૭/  
૯૪૨૬૨૫૭૮૭૮

સફહાત : ૧૬૯

ઇલ્તેમાસ

કારિબીન સે ગુઝારિશ હે કે કિતાબ મેં કિસી તરહ  
કી કોઈ ગલતી દેખેં, યા કોઈ મશ્વરા દેના યાહેં તો  
ઝરૂર આગાહ ફરમાએં તાકે આઈન્દા એડિશન મેં  
ઉસકા લિહાઝ કિયા જાએ.

ફકત હિફ્તુરુહમાન પાલનપૂરી (કાકોસી)  
૦૯૩૨૩૮૭૨૧૬૧

ગુઝારિશ

જો સાહબ આસાન હજ ઉર્દૂ, હિન્દી યા  
ગુજરાતી ઝબાનમેં છપવાના ચાહતે હોં તો  
કિતાબમેં બગૈર ઘટાએ બઢાએ છાપનેકી  
મોઅલ્લિક્ક કી તરફસે ઈજાઝત હે.

હિફ્તુર્હમાન કાકોસી

મો. ૦૯૩૨૩૮૭૨૧૬૧

મિલને કે પતે

સ્ટાકિસ્ટ

મકતબા મિલ્લત દેવબંદ ઝિલા સહારનપૂર યૂપી

ફોન : ૯૩૩૬૨૨૫૨૬૮

ફિરદૌસ કિતાબઘર બમ્બઈ

ફોન : ૯૮૯૨૧૮૪૨૫૮

## ફેડરિસ્ટ

અનાવીન	સ.નં.
દુઆઈય્યા કલિમાત	૧
અર્જો હાલ	૨
નઝમ : તસવ્વુરે કઅબા	૩
નઅત : સરકારે મદીના	૪
(હજ કી અસલ તૈયારી ક્યા હે ?)	૬
હજજે મબરૂર ક્યા હે ?	૮
અહલાહ કા અઝીમ ઈન્આમ	૯
હજ વ ઉમરહ કે ફઝાઈલ	૧૨
હજ ન કરને પર વઅીદ	૧૪
સફરે હજ સે પેહલે ઝરૂરી કામ	૧૫
ઘર સે રવાનગી	૧૮
એહરામ કા તરીકા ઓર તરતીબ	૧૯
હજ કી તીન સૂરતેં	૨૧
હજ કી તીનોં કિસ્મોં મેં ફર્ક	૨૨
નિયત કેસે કરેં ?	૨૩

अहराम की पाबंदियां क्या हैं ?	२५
औरत का अहराम	२७
मक्का की तरफ़ रवानगी और जिदह	२८
जिदह से मक्का ओअज़्जमा	३०
मक्का मोअज़्जमा में दाખला	३१
अयतुद्वलाह पर छाज़री	३३
(उमरह और उसका तरीका)	३५
तवाफ़ का तरीका	३६
तवाफ़ के बाद द्वा रकात	४०
उमरह का तीसरा काम	४३
उमरह का चौथा काम.	४५
उमरह के बाद से अय्यामे हज तक	४८
मक्का में नमाज़ कैसी पढ़ेंगे ? कसर या पूरी	५१
(हज के पांच दिन)	५३
हज का पहला दिन ८/ ज़िल हिज्जा	५५
हज का दूसरा दिन ९/ ज़िल हिज्जा	५७
मुजदलिज़ा की तरफ़ रवानगी	६२

७४ का तीसरा दिन १०/ जिल डिज्जा	६४
६स तारीख का पेडला काम	६६
६स जिल डिज्जा का दूसरा काम	६८
६स जिल डिज्जा का तीसरा काम	६८
६स जिल डिज्जा का योथा काम	७०
तवाड़े जियारत के बाद सभी	७१
७४ का योथा दिन ११/ जिल डिज्जा	७४
७४ का पांचवां दिन १२/ जिल डिज्जा	७५
तवाड़े विदाअ	७७
नकश-अ-७४ व उमरुड	७८
(जियारते मदीना मुनव्वरुड)	८२
दियारे उभीब का सफ़र	८३
मदीना तय्यिबुड में दाखला	८४
मस्जिदे नब्वी में छाजरी	८५
मस्जिदे नब्वी के सुतून और रियाजुल जन्नड	८७
रोज़-अ-अकदस पर दुइद व सलाम	८८
दूसरों की तरफ़ से रोज़-अ-अकदस पर सलाम	८९

उत्तरत अबूबक सिदीक रद्वि. पर सलाम	८१
उत्तरत उमरे झरुक रद्वि. पर सलाम	८२
जियारते जन्नतुल बकीअ	८३
मस्जिदे नब्वी में नमाज का सवाब	८६
मस्जिदे नब्वी में यालीस नमाजें	८६
मदीना तय्यिबड से वापसी	८७
उज्जे बदल के इजाईल व मसाईल	८८
ईषादत की तीन क्स्में हैं	८८
मकामाते कबूलियते हुआ	१०२
मक्का के तारीफी व मुतबर्क मकामात	१०४
मदीना के तारीफी और मुतबर्क मकामात	११०
तवाइ के सात इेरों की और मोका मडल की हुआयें	११७
घर से निकलने की हुआ	११७
सवारी पर सवार डोने की हुआ	११८
दौराने सइर पढते रेडने की हुआ	११८
डुडूटे डरम में दाबिल डोने की हुआ	१२०
तवाइ शुरु करने की हुआ	१२०



तवाङ के सात ફેરો की दुआओं	१२१
तवाङ के पेहले यक्कर की दुआ	१२२
रुकने यमानी और उजरे अस्वद के दरम्यान पढने की दुआ	१२३
तवाङ के दूसरे यक्कर की दुआ	१२४
तवाङ के तीसरे यक्कर की दुआ	१२६
तवाङ के चौथे यक्कर की दुआ	१२७
तवाङ के पांचवें यक्कर की दुआ	१२८
तवाङ के छठे यक्कर की दुआ	१३१
तवाङ के सातवें यक्कर की दुआ	१३३
तवाङ की द्वा रकत के बाद मकामे ईब्राहीम पर पढने की दुआ	१३४
मुलतजिम पर पढने की दुआ	१३६
मीजाबे रहमत के नीचे पढने की दुआ	१३७
जमजम पीने की दुआ	१३८
सफ़ा पर पढने की दुआ	१३८
सफ़ा और मरवह पर ञडे छोकर पढने की दुआ	१३८
मीलैन अफज़रैन के दरम्यान पढने की दुआ	१४०
मीलैन अफज़रैन के बाद मरवह की तरफ़ यलने की दुआ	१४०

अरझत की तरङ्ग जाते हुअे पढने की दुआ	१४१
जबले रडमत पर नजर पडते वक्त पढने की दुआ	१४२
पैदाने अरझत में सभसे अङ्गल दुआ	१४३
मुजदलिझा की रात में पढने की दुआ	१४५
मुजदलिझा से मिना पडोंयकर पढने की दुआ	१४६
जमरात की रमी के ढाद की दुआ	१४७
उलक की दुआ	१४७
मक्का मोअज़्जमा से वापसी की दुआ	१४८
मदीना मुनव्वरह के करीब पडोंयकर पढने की दुआ	१४८
मदीना मुनव्वरह में दाभले के वक्त पढने की दुआ	१५०
रोज़-अे-अकदस पर सलात व सलाम	१५१
रसूलुल्लाह सल. के वसीले से शझअत की दुआ	१५४
दूसरों की तरङ्ग से सलाम	१५५
उजरत अबूबक सिदीक रदि. पर सलाम	१५६
उजरत उमर झरूक रदि. पर सलाम	१५६
जन्नतुल बकीअवालों पर अल्झाजे सलाम	१५७
मदीना मुनव्वरह से वापसी की दुआ	१५८
मोअख्लिङ्ग की दीगर मुझीद किताबें	१६१

## दुआँय्या कलिमात

शयभे तरीकत हजरत मवलाना कमरुज़्जमां  
साहब एलाहाबादी (दा.ब)

अर्ज हे के मवलाना डिफ़्तुर्रहमान साहब कासमी पालनपूरी (काकोसी) की तस्नीफ़ “आसान हज” पर सरसरी निगाह डाली जिससे बभूबी अंदाज़ा हुवा के माशा अल्लाह मुसन्निफ़ ने निहायत वाज़ेह और आसान तरीके से हज के इजाएल व मसाएल को तहरीर इरमाया हे. जिससे एन्शा अल्लाह जुम्ला दुज्जाले किराम को हज व उमरह के सिलसिले में बेहतरीन रहबरी व रहनुमाई मयस्सर होगी.

एस लिये दुज्जाले किराम से गुज़ारिश हे के एसको अपने पास रभें और मुतालआ करें. एन्शा अल्लाह एससे मकबूल व मब़रूर हज की दौलत नसीब होगी और अल्लाह तआला की रज़ा व प्शुनूदी का शई होगा.

एसकी एफ़ादियत व कबूलियत के लिये दिल से दुआ करता हूँ और मवलाना डिफ़्तुर्रहमान साहब के लिये भी दुआ करता हूँ के अल्लाह तआला उनकी सखी को कबूल इरमाये (आमीन) और मजीद कुतुबे नाफ़िआ की तस्नीफ़ मईमत इरमाये. आमीन

वरसलाम

मुहम्मद कमरुज़्जमां एलाहाबादी

१६/ सफ़रुल मुज़्ज़र १४२७ हिजरी.

## अर्जे डाल

डज के मौजूअ पर उलमा ने छोटी बडी बडोत सी किताबें लिखी हैं, सारी ही किताबें अपनी जगह पर और अपने मौजूअ के लिहाज से निहायत मुझीद और कीमती हैं.

जैरे नजर किताब “आसान डज” ईसी सिलसिले की अेक कडी डे, ईसमें भास तौर पर अवाम की जडनियत को सामने रफते डुअे निहायत ही आसान जडान में “डज व उमरड” और “जियारते मदीना” को बयान किया गया डे, और अंटाज अैसा ईफ्तियार किया गया डे के ईन्शा अल्लाड पढनेवाले ये मडसूस किये बगैर नहीं रहेंगे के वो तन्हा डज नहीं कर रहे हैं बल्के अेक अख्श रझीक उनकी पूरी पूरी रहबरी कर रहा डे, और उन्हें डज के अरकान अटा करने में लुत्फ आ रहा डे. ईसी के साथ डज व उमरड का नकशा, मकामाते कबूलियते डुआ और मक्का मदीना के तारीफी व मुतबरक मकामात की मुफ्तसर तौर पर निशानदिही भी की गई डे, और अभीर में घर से निकलने से लेकर लौटने तक मौका मडल की जामेअ डुआओं भी दर्ज की गई हैं. अल्लाड तआला ईस किताब को शई कबूलियत से नवाजकर उम्मत के डक में नाईअ बनाडे. वमा जालिक अलल्लाडि बियअजीज.

ओं डुआ अज मन व अज जुम्ला जहां आमीन बाद.

डिइजुरडमान पालनपूरी (काकोसी)

अइल्लाडु अन्डू व अन वालिदयडि.

## नज़्म (तसव्वुरे क़म्बुआ)

अज़ :- हज़रत उरुज़ कादरी

तसव्वुर में तेरे हे लुल्ह ईतना तुज़मे क्या होगा  
तेरे दीवार व दर हैं आँना ईसकी तज़ल्ली का  
जमाले लम यज़ल का मज़हरे मभसूस तू हे जब  
तेरा जब सामना होगा तउप उठेगा मेरा दिल  
नदामत के पसीने मेरी पेशानी पे उभरेंगे  
खिपट कर तेरे दामन से कड़ूंगा अपनी सभ डालत  
पुकार उठूंगा रब्बुल बैत रब्बुल बैत आबिर को  
वो हीने हक के जिस का तू ही मरकज़ सभसे पेहला हे  
तेरे दीदार से कल्बे हज़ीं का गुंया वा होगा  
मेरी यश्मे बसीरत के लिये तू आँना होगा  
तेरे आँन-अ-रहमत में जुद इनुमा होगा  
मेरी आंभों से अश्केगम मुसलसल बेह रहा होगा  
मेरा दिल अपनी ईश्यां परवरी पर जल उठा होगा  
न जाने किस तरह मुजसे बयान मुद्आ होगा  
तेरे मालिक की रहमत मेरा तन्हा आसरा होगा  
निसार उस दिन पर मेरा सरापा हो रहा होगा  
बिलक कर केह रहा हे जाने क्या क्या तेरे गोशे में  
अजब अंदाज़ हे ईसका ये कोई दिल जला होगा

## नअत (सरकारे मदीना)

अळ :- मवलाना नसीमअउमद इरीदी

सरापा यमन हे दियारे मदीना

दवाम आशना हे बछारे मदीना

मदीने के झूलों को क्या पूछते हो

रगे गुल हे उर नोके पारे मदीना

दिलों पर हे जिसकी हुकूमत का सिक्का

जहे शौकते ताजदारे मदीना

किसी चीज की उसको उसरत नहीं हे

मयस्सर हो जिसको गुबारे मदीना

ये मस्जिद ये मिम्बर ये रोजा ये गुंबद

हे फिरदौस उर यादगारे मदीना

વહાં કી ઝમીં અર્શ સે ભી હે આ'લા  
જહાં દફન હે તાજદારે મદીના

તજજુદ તિલાવત તઝરુઅ દુઆએં  
ખોશા સઈયે શબ ઝિંદા દારે મદીના

હુનેનો તખૂક ઓર બદ્રો ઉહદ મેં  
સફ આરા હુએ શેહ સવારે મદીના

કિબારે મદીના તો યૂં હી બડે હેં  
બડોં સે બડે હેં સિગારે મદીના

તમન્ના હે ઉમ્રે રવાં અપની ગુઝરે  
બ હમરાહે લયલો નહારે મદીના

ફરીદી ચલો ચલ કે રોઝે પે કેહના  
સલામ આપ પર તાજદારે મદીના

## उज की असल तैयारी क्या है ?

उज ज़ोत ही अहम और ज़ी इजाहत है, इसी लिये उज के आ'माल के शुरू की दुआओं में ये अल्फ़ाज़ हैं :

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”

“ऐ अल्लाह ! मैं उज का इरादा करता हूँ तू इसको आसान इरमा और कबूल इरमा.”

आप صلى الله عليه وسلم ने आसानी ली अल्लाह से मांगी और कबूलियत ली मांगी, लिहाज़ा उमें ली अपनी दुआओं में ये अल्फ़ाज़ लाने हैं के ऐ अल्लाह ! उज को आसान इरमा और कबूल इरमा.

उज ज़ा इरीज़ा है, इसके ज़डे ज़डे इज़ाईल हैं, इस लिये इसको सीखकर करना है, समज़ कर करना है, और उज में जाने से पेडले उमें अपने हिल की केइयात बनानी हैं, इस तौर पर के उमारा हिल अल्लाह की तरफ़ मुतवज़्जे हो, दीन का शौक व रग़बत पैदा हो, दुज़ूर से मोडब्बत में इज़ाज़ा हो, और आपके तरीकों के इत्तेबाअ में मज़ा आने लगे, नमाज़ और दुआओं में अेउतेमाम



હોને લગે, નમાઝોં કો જાનદાર બનાને કી ફિક્ક પૈદા હો જાએ, ઓર યે ઉસી વક્ત હો સકતા હે જબ હજ સે પેહલે હમ અપને માહોલ સે યકસૂ હોકર કુછ દિન, દીન કી મેહનત ઓર ફિકોં મેં નૂરાની માહોલ મેં ગુઝારેં તાકે દિલ કી કૈફિયાત સહીહ હોં ઓર કુછ રોઝ મુકમ્મલ યકસૂ હોકર હજ કા તરીકા, ઉસકે આ'માલ, અરકાન ઓર મુતબરક જગહોં કે આદાબ સીખેં.

કિતની બડી મહરૂમી કી ખાત હોગી કે હમ ઈતના બડા સફર કરેં, ઈતના બડા ખર્ચ કરેં, ઈતની બડી અહમ ઈબાદત કા ફરીઝા અદા કરેં ઓર બેફિકી કે સાથ હો, બગૈર સમજે સીખે હો, બગૈર દિલ કી કૈફિયાત બનાએ હુએ હો, જિસકા નતીજા યે હોતા હે કે ઉન મુબારક જગહોં કે કીમતી અવકાત ભી બેફિકી કે સાથ ગુઝર જાતે હેં, ન તાઅત વ ઈબાદાત મેં હુઝૂરિ-એ-કલ્બ નસીબ હોતા હે, ન ગુનાહોં સે બચને કા કોઈ ખાસ એહતેમામ હોતા હે, બસ યૂં હી એક સૈર વ તફરીહ કી શકલ બન કે રેહ જાતી હે. અલ્લાહુમ્મહફ્ઝના મિન્હુ.

મુતબરક મકામાત કી તાઅત વ ઈબાદત પર જૈસે

હઝારોં ગુના ઈઝાફે કે સાથ અજ મિલતા હે, ઐસે હી વહાં કી બેફિકી, નાફરમાની ઓર ગુનાહ પર પકડ ભી સખ્ત હે. લેકિન ઈસસે ભી લાપરવાહી હોતી હે. ઈસકા નતીજા યે હોતા હે કે હજ સે લૌટને કે બાદ વો દિલ જમ્મી હાસિલ નહીં હોતી, ઓર ઈતની અઝીમ ઈબાદત કરને કે બાદ ભી વો ચીઝ હાસિલ નહીં હોતી જો એક હાજી કો હાસિલ હોની ચાહિયે, ઓર વો કેફિયત નહીં બનતી જો અલ્લાહ કે ધ્યાન કે સાથ હુઝૂર કે નૂરાની તરીકોં કે મુતાબિક ઝિંદગી ગુઝારને પર ઓર દુન્યા સે બેરગબતી ઓર આબિરત કી ફિકોંવાલી રાહ પર ડાલ દે જબ કે હજ સે યહી મતલૂબ હે.

## હજજે મબરૂર ક્યા હે ?

રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને ઈરશાદ ફરમાયા :

“الْحَجُّ الْمَبْرُورُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةُ”

“હજજે મબરૂર કા બદલા સિવાએ જન્નત કે કુછ નહીં હે.”

(બુખારી)

હજજે મબરૂર કી તશરીહ મેં બહોત સારે અકવાલ હેં, ઉનમેં એક કૌલ હઝરત હસન બસરી રહમતુલ્લાહિ

अलयल का ले के लज्जे मभरुर से मुराद औसा लज ले के उस लज के बाद डाली की जिंदगी में तब्दीली आ जाये, दुन्या से बेरगबती और आभिरत की तलब और शौक पैदा हो जाये.

बडोत से लोग इस गलतईहमी में रेहते हैं के वहां जाकर मोअल्लिम सिखायेगा, या वहां लोगों से सीखलेंगे, इस जुशईहमी में नहीं रेहना याहिये बल्के पेहले ही तैयारी कर लेना याहिये.

## अल्लाह का अजीम ईन्आम

बडोत दिनों से सुन रहे थे, बयपन में पढा था के मक्का अेक शहर ले, जहां हमारे नबी पैदा हुये, जहां अल्लाह का घर ले, आज आपके लिये वो दिन करीब आ गये के आप अपनी आंभों से देखेंगे. अल्लाह तआला ने आप लउरत को अपने घर की जियारत के लिये मुन्तभब किया ये अल्लाह का कितना अजीम ईन्आम ले. क्या इसकी कदरदानी जरूरी नहीं ले ? अल्लाह के कितने बंदे हैं जो बेयारे जिंदगीभर तमन्नाओं करते हैं, अरमान रभते हैं, उनकी आरजू और तमन्नाओं पूरी नहीं होती

और दुनिया से बल बसते हैं। ये सआदत हर अक के  
 मुकदर में नहीं होती। कितने लोग हैं जो आज भी इसके  
 लिये तडपते हैं। क्या आप पर उसका भुसूसी डैजान नहीं  
 है ? लिखाजा इसकी कदरदानी और झिंक व अहतेमाम  
 करें के इराईज की पूरी पाबंटी, नवाझिल का अहतेमाम,  
 भिदमते बल्क का जजबा, हरम के बाशिंदों का  
 अहतेराम, अहले मदीना की ता'जीम और उनकी  
 भिदमत, लोगों की राहत रसानी, किसी को अदना  
 तकलीफ देने से परहेज, किसी की सप्त सुस्त बात पर  
 और नागवारियों पर सभ्र व जप्त और भाई करने का  
 मिजाज, कमजोरों, मा'जूरों की भिदमत, बे कसों, बे  
 बसों की दस्तगीरी, मोहताजों की मदद, हमसायों की  
 मुकम्मल रियायत **يُؤْتِرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ**  
**{ بِهْمُ خِصَاصَةٌ }** का मुकम्मल मुजाहरा, सिझते  
 हमीदल, सभ्र, शुक्र, तवक्कुल, तवाजुअ व अब्दियत,  
 आजिजी और ईन्किसारी, जिंक, ईस्तीगना, दुआओं की  
 कसरत, हर मौके पर निगाह सिई अल्लाह पर और  
 अपनी जात की मुकम्मल नई, इन तमाम उभूर की भश्क

करें, और इसकी रियायत के साथ सफ़र पूरा हो, उज का सफ़र भी और ज़िंदगी का सफ़र भी. ये तो जैसे उमूर हें के बरसहा बरस इसकी तैयारी की जाये तो कोई बड़ी बात नहीं, कुछ अजब नहीं के सेंकड़ों अल्लाह के बंटों की तरह हमको भी इसका अहसास हो और हम भी सूझी की ज़बान में इस तरह गोया हों.

ये उसरत रेह गइं पेहले से उज करना न सीमा था कइंन बरदोश जा, पड़ोया मगर मरना न सीमा था न रहबर था न रहरव था न मंजिल आश्ना था मैं मुहब्बत का समंदर दिल् की कश्ती नापुटा था मैं उवाअें थीं तलातुम था सझीना उगमगाता था बडा गेहरा समंदर था जिधर नज़रें उठाता था वो मोती तेहनशीं थे मैं मुसाफ़िर जिनका ज़ोया था कहां मोती कहां मैं प्हुट सझीना ही दुबोया था

लिहाजा पेहले ये तैयारियां करलें, यही असल तैयारी हे, ये नहीं के अपना सामान एकट्टा करें, बेग तैयार करें, सामान की दौड धुप में लग जाअें, पाने पीने की अश्या मुहय्या करें, ये तैयारी नहीं हे बल्के ये तो ज़रूरियात हें.

## હજ વ ઉમરહ કે ફઝાઈલ

હઝરત અબૂ હુરૈરહ رضي الله عنه સે રિવાયત હે કે રસૂલુલ્લાહ صلى الله عليه وسلم ને ફરમાયા : “જો શખ્સ અલ્લાહ કી ખુશનૂદી કે લિયે હજ કરે ઓર (અસ્નાએ હજ મેં) ફહશગોઈ સે બચે ઓર નાફરમાની ન કરે તો વો ગુનાહોં સે ચૈસા પાક હોકર લોટેગા જેસે ઉસ દિન પાક થા જબ ઉસકી માં ને જના થા.”

(બુખારી, મુસ્લિમ)

હઝરત બુરયદહ رضي الله عنه સે રિવાયત હે રસૂલુલ્લાહ صلى الله عليه وسلم ને ઈરશાદ ફરમાયા : “હજ મેં ખર્ચ કરના જિહાદ મેં ખર્ચ કરને કી તરહ હે.”

હઝરત જાબિર رضي الله عنه સે રિવાયત હે કે હુઝૂર صلى الله عليه وسلم ને ઈરશાદ ફરમાયા : “હાજી કભી ફકીર નહીં હો સકતા.”

(તબરાની)

હઝરત ઉમ્મે સલમહ રદિયલ્લાહુ અન્હા કી એક હદીસ મેં હે કે “હજ ઓર ઉમરહ કી કસરત ફક કો રોકતી હે.”

હઝરત અબૂ હુરૈરહ رضي الله عنه સે રિવાયત હે કે રસૂલુલ્લાહ صلى الله عليه وسلم ને ઈરશાદ ફરમાયા : “હજ વ ઉમરહ કરનેવાલે

अल्लाह तआला के मेहमान हैं, अगर वो अल्लाह तआला से द्रुआ करें तो कबूल इरमाये, अगर वो मगफिरत तलब करें तो वो उनकी मगफिरत इरमाये.”

(ईप्ने माज)

उजरत अब्दुल्लाह ईप्ने उमर رضي الله عنه से रिवायत हे के रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने ईरशाह इरमाया : “जब डाज्ज से तुम्हारी मुलाकात होतो उसके अपने घरमें पड़ोयने से पेहले उसको सलाम करो और मुसाइहा करो और उससे अपनी मगफिरत की द्रुआ की दरभास्त करो, क्यूं के वो ईस डाल में हे उसके गुनाहों की मगफिरत हो युकी हे.

(मिशकत)

उजरत अबू मूसा अश्अरी رضي الله عنه की अेक रिवायत में हे के रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने ईरशाह इरमाया के : “डाज्ज की सिफारिश उसके घराने के यार सौ आदमियों के बारे में कबूल होती हे और डाज्ज अपने गुनाहों से अैसा पाक हो जाता हे जैसा के पैदाईश के दिन था.

उजरत अबू डुरैरड رضي الله عنه से रिवायत हे के : “जो शप्स डज या उमरड के ईरादे से या राडेभुदा में जिहाद

के लिये निकला फिर रास्ते में इन्तेकाल हो गया तो अल्लाह तआला की तरफ से उसके लिये वही अज्र व सवाब लिख दिया जाता है जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करनेवाले और अज्र व उमरह करनेवाले के लिये होता है.

(बयहकी)

अक उदीस में है के : “अज्र में जो भी भय होता है उसका सवाब सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है.

उजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के हुजूर ﷺ ने फरमाया : “जो शप्स अज्र का इरादा करे उसको जल्दी करना चाहिये.

### अज्र न करने पर वअीह

उजरत अली ﷺ से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : “जिस शप्स के पास इतना भय हो और सवारी का इन्तेजाम हो के बयतुल्लाह शरीफ़ जा सके और फिर वो अज्र न करे तो कोई इर्क नहीं इस बात में के वो यलूदी होकर मर जाये या नसरानी होकर मरे. इसके बाद हुजूर ने अपने इस इरशाह की ताअीह में ये आयत पढी :



وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ  
 سَبِيْلًا وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ

(آل عمران)

તર્જમા : અલ્લાહ જલ્લ શાનહૂ કે વાસ્તે લોગોં કે ઝિમ્મે બયતુલ્લાહ કા હજ (ફઝ) હે જો વહાં પહોંચનેકી તાકત રખતા હો ઓર જો મુન્કર હો તો (અલ્લાહ તઆલા કા ક્યા નુકસાન હે) અલ્લાહ તઆલા તમામ જહાનોં સે ગની હે (ઉનકો ક્યા પરવાહ ?)

હઝરત ઈબ્ને ઉમર રદિયલ્લાહુ અન્હુમા સે નકલ ક્રિયા ગયા હે કે જો શખ્સ તંદુરસ્ત હો ઓર પૈસેવાલા હો કે હજ કો જા સકે ઓર ફિર બગૈર હજ ક્રિએ મર જાએ, ક્યામત કે દિન ઉસકી પૈશાની પર કાફિર લિખા હુવા હોગા. ઈસકે બાદ ઉન્હોંને વો આયતે શરીફા પઢી જો ઊપર ગુઝરી. (દુરે મન્સૂર)

**સફરે હજ સે પેહલે ઝરૂરી કામ**

હજ કા સફર શુરૂ કરને સે પેહલે કુછ કામ ઝરૂર કરલેં જિનકા કરના શરઅન ઝરૂરી હે.

पेडला काम : - तो ये करलें के एस मुबारक सफ़र में अपनी निर्यत दुरुस्त करलें, निर्यत सिर्फ़ ये डो के अल्लाह के हुकूम को पूरा करने के लिये और उसको राजी करने के लिये मैं उज्र कर रहा हूँ. दुन्या की ईज़त, शोहरत, नाम व नमूद, दिवावा, कोई तिज़ारती झंझा, या दुन्या की कोई गर्ज बिन्दुकुल न डो, वरना ईतना बडा अमल और ईतनी बडी कुर्बानी जायेअ और बरबाद डो जाओगी, क्यूं के जिस अमल में निर्यत झसिद डोती डे वो अमल अल्लाह के यहाँ मरदूद डो जाता डे. लिहाजा निर्यत को ખૂબ टटोलें और दुरुस्त करलें.

दूसरा काम : - ये कर लें के रवानगी से पेडले अपने तमाम छोटे बडे कुनाडों से ખૂબ सखी पक्की तौबा कर लें, ખૂબ गिडगिडाकर नदामत के साथ अपने गुनाडों का ईकरार करते हुअे आईन्दा न करने के अज़म के साथ अल्लाह तआला से माफी मांग लें. ताके आप गुनाडों की गंदगी से साफ़ सुथरे डोकर अपने मौला के दरबार में पडोंयें.

तीसरा काम : - ये के अल्लाह के जिन बंटों के हुकूम

आपके जिम्मे हैं, जिनकी कभी एक तर्की हुई हो, सताया हो, जिनका कभी दिल दुखाया हो, जिनका अपने ऊपर कोई माली एक बाकी रह गया हो, किसी का कर्ज अपने जिम्मे हो, उन तमाम से मिल कर मआमला साफ़ कर लें, ખૂબ माझी तलाझी कर लें. और जिनका किसी तरह का कोई हज निकल रहा है उनको अदा करें. और जिन उमूर के मुतअद्विक वसियत करनी हो उनके मुतअद्विक वसियतनामा लिख दें. इन तमाम उमूर को पूरे अहतेमाम के साथ करें. इनमें कोई शर्म व आर न करें ताके हज आपके लिये दुन्या में काभ्याणी और सालेह जिंदगी का जरिया बने.

## हुज्जते किराम से गुजारिश

हुज्जते किराम से गुजारिश है के सफ़रे हज से पेहले जहां आप हज का तरीका और उसके अरकान सीख रहे हों, वहीं जनाजह की नमाज भी पूरी सीख लें, पास कर जनाजह की दुआओं, क्यूं के हरम में हर नमाज के बाद जनाजह की नमाज होती है और इसकी बडी इज्जत है, लिहाजा सीख लेना चाडिये.

## घर से रवानगी

अब आप अपने घर से रवाना हो रहे हैं, वो मुबारक घड़ी आ गई है, रवानगी से पहले हो सके तो दो रक़ात नज़ल पढ़ले और नमाज़ के बाद सज़र में सड़ूलत व आज़ियत की, गुनाहों से बचने की, उज़ की कबूलियत की दुआ करें. निकलने से पहले अपना सामान पूरा मुनज़ज़म कर लें, ज़रूरियात का सामान ले लें, ज़ियादा भोज न बनायें, और जो चीज़ें मन्नूअ हैं वो न लें. मसलन : चाकू, भंजर, तेल, घी, विडियो, आडियो केसेट वगैरा, ताके कस्टम में परेशानी न हो, और अपने सामान को अच्छे बेग में बांधकर उस पर बडे हुज़ुफ़ में पूरा अड्रेस (पता) लिखें, मुल्क का नाम भी ज़रूर लिखें. बेग पर ऐसी कोई अलामत रखे के देखते ही अपने सामान को पहचान सकें. और घर से दुआ याद हो तो पढ़ कर निकलें :

”بِسْمِ اللَّهِ أَمَنْتُ بِاللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ  
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ“

याद न हो तो सिर्फ

“بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ”

पढ लें, सवारी का पेडले से नजम रभें और इलाईट के वक्त से तीन यार घंटे पेडले ही अेरपोर्ट पर पडोंय जाअें, और अेडराम अगर हो सके तो घर से ही बांधकर निकले या अेरपोर्ट पर जाकर बांधें, अेरपोर्ट पर भी पूरा ईन्तेजाम रेडता है, वहां पर हमारे दअवत के साथी मुस्तकिल डाजियों की बिदमत में रेडते हैं, वो पूरी रडबरी करते हैं, अेडराम भी बांधवाते है, (अल्लाह उनको जजाअे भैर दे) इलाईट के वक्त से पेडले आपको अंदर ले लेंगे, आपके सामान की आपके सामने जांय डोगी और कस्टम डोकर वो सामान उसी इलाईट के लगेज में पडोंय जाअेगा जिस इलाईट में आप सवार डोंगे.

## अेडराम का तरीका और तरतीब

डज और डभरड में सबसे पेडला अमल अेडराम है. डज या डभरड की नियत से तल्लियड पढने को

अहराम केहते हैं (मजाजन धन दो यादरों को भी अहराम केह देते हैं) अहराम बांधने से पेहले हजामत, जेरेनाइ, लभें और नाभून तरशवाकर झरिग हो जाअें, अहराम से पेहले गुस्ल मस्नून हे, न हो सके तो वुजू ही कर लें.

अहराम में दो यादरें होती हैं बगैर सिली हुँ, अक यादर को तेहबंद की तरह बांध लें और दूसरी यादर को ओढ लें, ये अहराम बंध गया. मगर याद रभें अभी अहराम शुरू नहीं हुवा, अहराम शुरू होगा नियत करने से और तखियह (लब्बयक केहने) से, अहराम बांधने के बाद ओपर की यादर से सर ढांककर दो रकात नइल नमाज पढ लें, अगर मकरुह वक्त न हो. और टोपी पडेनकर भी पढ सकते हैं, क्यूं के अभी अहराम शुरू नहीं हुवा. इसके बाद आपको नियत और तखियह पढना हे. तखियह यानी :

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ  
الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ (مسلم)

याहे तो झौरन नियत कर के तल्लियल केल लें या इलाईट में सवार डोने के बाढ भीकलत आने से पेडले.

जडल में भीकलत आने से पेडले कप्तलन की तरफ से डलजियों को ईत्तेललल डी जलती डे के “अड आड भीकलत से करीड डडोंड रडे डें.” डगर आड ईसकल ईन्तेडलर न करें डलके इललईट में सवार डोते डी नियत कर लें और तीन डरतडल डरल डुलंड आवलड से लडडडक डढ लें. जब आडने नियत और तल्लियल केल लललल तो अड अेडरलड शुरु डो गडल, अड आड डर अेडरलड की डलडंडी लग गई. अड डो डलतें आडको सडजनी डें. नियत कैसे करनल ? और अेडरलड की डलडंडलल कडल डें ?

## डज की तीन सूरतें

नियत को सडजने से पेडले डे डलत सडजलें के डज तीन तरड कल डोतल डे.

डे डलल : - सलई डज की नियत से अेडरलड डलंधनल, ईसको “डजजे ईइरलढ” केडते डें.

डूसरल : - डज व डडरड कल अेक सलथ अेडरलड डलंधनल, डलनी अेडरलड डलंधकर डज और डडरड की अेक सलथ

નિયત કરના, ઇસકો “હજ્જે કિરાન” કેહતે હૈં. ઇન દોનોં સૂરતોં મેં એહરામ કી પાબંદિયાં એહરામ બાંધને સે લેકર હજ્જ સે ફરિગ હોને તક રેહતી હે, યાની લમ્બે વક્ત તક એહરામ બાકી રેહતા હે, જો આમ તૌર પર મુશ્કિલ હોતા હે. ઓર એક

તીસરી સૂરત : - જો આસાન હે, કે એહરામ બાંધકર ઉમરહ કી નિયત કર લેં, મક્કા પહોંચ કર ઉમરહ કર કે એહરામ ખત્મ ફિર ૮/ ઝિલ હિજ્જા સે પેહલે હજ્જ કી નિયત કરકે એહરામ બાંધેં ઓર હજ્જ પૂરા કરકે એહરામ ખત્મ, ઇસકો “હજ્જે તમતુઅ” કેહતે હૈં. યે આસાન હે, ઓર અવામ કે લિયે ઇસમેં સહૂલત હે. લિહાજા ઇસ કિતાબ મેં તમતુઅ કા તરીકા તફ્સીલ સે લિખા જા રહા હે. ઇસી કે સાથ ઇફરાદ ઓર કિરાન કી ભી વજાહત હે.

### હજ્જ કી તીનોં કિસ્મોં મેં ફર્ક

એક ફર્ક : - તો ઇન તીનોં મેં નિયત મેં હે, કે ઇફરાદ મેં સિર્ફ હજ્જ કી નિયત હોતી હે. કિરાન મેં હજ્જ વ ઉમરહ દોનોં કી એક સાથ નિયત હોતી હે. ઓર તમતુઅ મેં એહરામ બાંધકર પેહલે ઉમરહ કી નિયત હોતી હે.



दूसरा बड़ा इर्क : - ये है के ईश्राह और किरान में  
अहराम शुरु से उज के भत्म तक रहेगा और तमतुअ में  
उमरह करके अहराम पुल जायेगा और ८/ जिल  
हिये तक हाज्ज बगैर अहराम के रहेगा, फिर ८/ जिल  
हिये को उज का अहराम बांधेगा. और

तीसरा इर्क : - ये है के किरान और तमतुअ में कुर्बानी  
वाजिब है और ईश्राह में कुर्बानी वाजिब नहीं बल्के  
मुस्तहब है.

तीनों में अइजल किरान है, मगर अहराम की पाबंदी  
से बचना मुश्किल होता है, इस लिये अवाम को तमतुअ  
की राय दी जाती है. तीनों किस्मों में उज व उमरह के  
आ'माल व अहकाम और अहराम के मसा'ल यकसां हैं.

### नियत कैसे करें

आपका उज "तमतुअ" है, तो यूँके आपको मक्का  
जाकर पेहले उमरह करना है इस लिये ये अहराम  
आपका उमरह का है, तो नियत यूँ करें, अरबी में कहें  
या उर्दू में या अपनी ज़बान में

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُرَّةَ فَيَسِّرْهَا لِي وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي”  
 ओ अल्लाह ! मैं उमरुह की निथत करता हूँ, तू आसान  
 इरमा और कबूल इरमा.

जिनका उज इरराह हे, वो इस तरुह निथत करें :

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”  
 और जिनका उज किरान हे वो उमरुह और उज की  
 अक साथ इस तरुह निथत करें :

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُرَّةَ وَالْحَجَّ فَيَسِّرْهُمَا لِي وَ  
 تَقَبَّلْهُمَا مِنِّي”

जुब निथत हो गइ तो निथत के साथ ही थोड़ी  
 जुलंद आवाज से तीन भरतबा “लब्बयक” पढ़ें, और  
 औरतें आडिस्ता पढ़ें.

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ  
 الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

तरुमा : “हाजिर हूँ, ओ अल्लाह ! हाजिर हूँ, तेरा  
 कोइ शरीक नहीं, मैं हाजिर हूँ, सारी ता'रीकें और सब

नेअमतें तेरी ही हैं और मुल्क व बादशाहत तेरी ही हैं, तेरा कोई शरीक नहीं.”

ईस दुआ को तल्बियह केहते हैं, ये उज व उमरह की भास दुआ हे. ईसको बार बार और हर मोके पर पढना हे. गोया उज में अइजल जिक यही हे.

तल्बियह उजरत ईब्राहीम عليه السلام की पुकार का जवाब हे, ईब्राहीम عليه السلام ने अल्लाह के हुकम से अल्लाह के बंदों को पुकारा था के “आओ ! अल्लाह के दर पर डाजरी हो.” पस जो बंदे उज व उमरह में तल्बियह पढते हैं तो गोया यूं केहते हैं : औ अल्लाह ! तूने अपने बंदे उजरत ईब्राहीम عليه السلام से आवाज लगवाकर हमको बुलाया था तो हम डाजिर हैं, डाजिर हैं, तेरे सामने डाजिर हैं.

## ओहराम की पाबंदियां क्या हैं ?

जब आपने ओहराम बांधकर नियत कर ली और तल्बियह पढ लिया तो आप पर ओहराम की पाबंदियां लग गईं.

(१) अब आप सर और येहरा नहीं ठांक सकते, औरत

सिई येहरा न ढांके, यानी उस पर कपडा न लगाअे,  
औरत के लिये सर को छुपाना जरूरी हे.

(२) अब आप भुशू नहीं लगा सकते, न सुंध सकते हैं,  
ये हुकम मर्द औरत दोनों के लिये हे.

(३) अब आप अपना येहरा, सर या बदन के किसी  
हिस्से का बाल नहीं तोड सकते, ईसी तरह नाभून नहीं  
काट सकते, ये हुकम मर्द व औरत दोनों के लिये हे.

(४) अब आप सिला हुवा कपडा नहीं पडेन सकते, जैसे  
: कुर्ता, पाईजामा, कोट, पतलून, बनियान वगैरा,  
ये हुकम सिई मर्दों के लिये हे.

(५) अब आप न बीवी से सोडबत कर सकते हैं, न  
मियां बीवी के तअल्लुकातवाली बातें कर सकते हैं,  
ये हुकम मर्द व औरत दोनों के लिये हे.

(६) ईसी तरह अब आप अैसा जूता नहीं बडेन सकते  
जो पांव की उभरी हुई उडी को ढांप दे. जूता भूट न  
पेहनं, स्लीपर जैसे यप्पल पेहनं, ये हुकम सिई  
मर्दों के लिये हे.

(७) अब आप हरम की घास, पौदा या दरभ्त की टेहन

નહીં તોડ સકતે, યે હુકમ મર્દ વ ઓરત દોનોં કે લિયે હે.

(૮) અબ આપ હરમ મેં કિસી ભી જાનવર કા શિકાર યા શિકાર કી તરફ ઈશારા નહીં કર સકતે. યહાં તક કે અપને બદન યા સર કી જૂં ભી નહીં માર સકતે. યે હુકમ ભી મર્દ વ ઓરત દોનોં કે લિયે હે.

તો ગોયા આઠ પાબંદિયાં મર્દોં પર હે ઓર છે પાબંદિયાં ઓરતોં પર હે. લિહાઝા એહરામ કી હાલત મેં ઈન પાબંદિયોં કા પૂરા ખ્યાલ રખેં ઓર એહરામ કી હાલત મેં અપને આપકો ઈબાદત, નેકિયોં ઓર અચ્છી આદતોં કા પાબંદ બનાએં. ઉલમાને લિખા હે કે એહરામ કી હાલત મેં હાજી જો આદત ઈખ્તિયાર કરતા હે ઉસકા અસર મૌત તક બાકી રેહતા હે.

## ઓરત કા એહરામ

યાદ રખો ! ઓરત કા એહરામ સિર્ફ ઉસકે ચેહરે કા ખુલા રખના હે. ઓરત અપને સિલે હુએ કપડોં મેં રહેગી. મોઝે, દસ્તાને ઓર ઝેવરાત ભી પહેન સકતી હે. હાં ! ચેહરા ખુલા રખના ઝરૂરી હે, લેકિન ઐસા ભી ન હો કે

બેપર્દગી હો, પર્દા ભી ઝરૂરી હે. લિહાજા સર પર કેપનુમા નકાબ ડાલે કે જિસસે પર્દા હો જાએ ઓર કપડા ભી મુંહ પર ન લગે. ઐસા નકાબ બાઝાર મેં મિલ જાતા હે. ઓરત કો સિર્ફ ચેહરા ખુલા રખના હે. સર કો ઢાંકના ઝરૂરી હે, ઈસ લિયે બેહતર યે હે કે સર પર છોટા રૂમાલ બાંધ દે, તાકે સર ન ખુલે. લેકિન યાદ રખો ! યેએહરામ નહીં હે, ઈસ લિયે વુજૂ મેં ઈસકો મસહ કરતે વક્ત ખોલના ઝરૂરી હે.

અગર ઓરત નાપાકી કી હાલત મેં હો, તો ઉસી હાલત મેં એહરામ બાંધે ઓર દો રકાત એહરામ કી ન પઢે. ફિર મક્કા પહોંચને કે બાદ જબ તક પાક ન હો મસ્જિદે હરામ મેં ન જાએ. જબ પાક હો જાએ તો ગુસ્લ કરકે મસ્જિદ મેં જાએ. તવાફ વ સમી કરે.

બહોત સારે લોગ છોટે બચ્ચોં કો ભી હજ મેં લે જાતે હેં, તો નાબાલિગ બચ્ચા અગર હોશિયાર ઓર સમજદાર હે, તો વો ખુદ એહરામ બાંધે ઓર તમામ અરકાન વ અફઆલ બાલિગ કી તરહ અદા કરે. અગર નાસમજ ઓર છોટા હે તો ઉસકા સરપરસ્ત ઉસકી તરફ સે એહરામ બાંધે ઓર તમામ અરકાન મેં ઉસકી ભી નિયત કરલે.

## मक्का की तरफ़ रवानगी और ज़िदह

हज और उमरह का पेहला काम यानी अहराम आपने बांध दिया, अब आपको मक्का पहांचने तक कोर्ष पास काम नहीं करना हे, अस अहराम की पाबांदियों का प्याल रभें और अल्लाह के ध्यान व तवज्जुहके साथ, शौक व मोहब्बत से लब्बयक पढते रहें, ये तकरीबन पांच घंटे का सफ़र हे. ईसके बाद आप ज़िदह उतरेंगे, कुछ घंटे आपकी पासपोर्ट, कस्टम वगैरा की कारवाँयां होंगी, वहीं आपको मोअल्लिम का नाम, नंबर कार्ड और और मक्का में बिदिंग/ होटल और कमरे का नंबर दिया जाअगा. वहां ज़रा होशियार रेह कर किसी से पूछताछ कर सारी कारवाँ करवावें, ईसके बाद कस्टम सेड से अपने सामान को पेहचान कर अेक तरफ़ करवें, फिर वहां के कारकुन वो सामान उस अस में रभेंगे जिस अस में आप सवार होकर मक्का पहांचेंगे. ज़िदह उतर कर आपके हिल की अज्जब कैफ़ियत होगी, ખुशी होगी, और होनी ही याहिये के आप अब बहोत करीब आ गअे. ज़िदह से मक्का मुकर्रमह का रास्ता सिर्फ़ देड हो घंटे का हे.

## જિદહ સે મક્કા મોઅઝ્ઝમા

જિદહ સે બસ મેં સવાર હોકર જબ આપ રવાના હોંગે તો મક્કા આને સે બીસ કિલોમીટર પેહલે વો જગહ આતી હે જહાં સે હરમ કી હદ શુરૂ હો જાતી હે. ઇસી કે કરીબ હુદૈબિયહ કા વો મકામ બી હે જહાં હુઝૂર ﷺ કો કુફ્ફારે મક્કા ને ઉમરહ કરને સે રોક દિયા થા ઓર એક દરખ્ત કે નીચે આપ ﷺ ને સહાબા રદિયલ્લાહુ અન્હુમ સે મૌત પર બયઅત લી થી. જિસકો “બયઅતે રિઝવાન” કેહતે હે. કુર્આન મેં ભી ઇસકા ઝિક્ર હે. યહાં સે હરમ કી હદ શુરૂ હોજાતી હે. ઇસ જગહ એક મસ્જિદ ભી બની હુઈ હે, સડક કે કિનારે પર બડે હુઝૂફ મેં લિખા ભી હે “هَذَا حُدُّ الْحَرَمِ” યે હરમે પાક કી હદ હે. મગર યે હુદૈબિયહવાલી જગહ જિદહ સે મક્કા મોઅઝ્ઝમાહ આનેવાલી પુરાની સડક પર હે, ઇસકે કરીબ નથી સડક બની હુઈ હે વહાં પર હરમ કી હદ બતાને કે લિયે સડક પર રહલ કી શકલ બની હુઈ હે, આમ તૌર પર બસેં ઓર ગાડિયાં નથી સડક સે મક્કા આતી હે.



બહરહાલ જબ યે જગહ આએ તો ખૂબ શૌક વ મોહબ્બત ઓર ખૌફ વ અદબ કી કેફિયત કે સાથ ગુઝરે ઓર અલ્લાહ સે દુઆ કરે કે “એ અલ્લાહ ! યે તેરા ઓર તેરે રસૂલ કા હરમ હે, ઈસમેં જાનવરોં કો ભી અમન હે, તૂ ઈસકી બરકત ઓર હુરમત સે મેરે ગોશત, પોસ્ત ઓર સારે જિસ્મ પર જહન્નમ કી આગ હરામ કરદે ઓર કયામત કે અજાબ સે મુજે અમન દે દે.” અગર અરબી મેં યાદ હો તો અરબી મેં કહેં :

”اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا حَرْمُكَ وَحَرْمُ رَسُولِكَ فَحَرِّمِ  
لَحْيِي وَدَمِي وَعَظْمِي وَبَشْرِي عَلَى النَّارِ اللَّهُمَّ آمِنِي  
عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ“

(કાઝી ખાન : ૧/૩૧૫)

હુદ્દહે કૂચ-એ-મહબૂબ હેં વહીં સે શુર  
જહાં સે પડને લગેં પાંવ ડગમગાએ હુએ  
મક્કા મોઅઝ્ઝમાં મેં દાખલા

થોડી દેર કે બાદ આપકો મક્કા કી ખૂબ સૂરત ઈમારતેં નઝર આને લગેંગી, અબ આપ ઈસ મુકદ્દસ શહર મેં

दाबिल ङो गअे जङां का यप्पा यप्पा आपको ँस्लाम की तस्वीर और ङुजूर صلى الله عليه وسلم और सढाढा की कुढानियों से मुनव्वर नऊर आअेगा.

निढायत आजिजी के साथ ँस्तिगङर के साथ “लढढयक” केढते ङुअे दाबिल ङों, ढौङ और अढढ के साथ अल्लाढ से दुआ करें के “अै अल्लाढ ! मुजे ँस ढाक और मुढारक शढर में सुकून व ँत्मीनान से रेढना नसीढ ँरमा, यढां के ङुकूक और आढाढ की तौङीक दे और ङलाल रोजी अता ँरमा.”

मोअद्लिम की ढस आपको आपकी ढिद्लिंग तक ँडोढ देगी, ँसके ढाढ आप अपनी रढाँश को देढ लें, अपना सामान वगैरा तरतीढ से रढकर अपनी ऊरुरियात से ँरिग ङो ज्ञअें, और यूँके आप ढर थकन ङोगी तो थोढा ढढोत आराम करके ँर मस्जिदे ङराम की तरङ ज्ञअें, ँस ढौके ढर ङाञ्च ढढोत जलढाजी करते ङैं, थके ङारे ँौरन ङी ङरम में ल्गाते ङैं, आप लोगों की देढा देढी ढिल्कुल न करें ढल्के आराम करके ङशुशाश ढशुशाश ङोकर ङरम में ज्ञअें.

ये बात ध्यान में रखें के मक्का में पहुँचते ही मोअद्लिम की तरफ़ से जो पीला पटका मिलेगा उसको अभीर तक हाथ पर बांधे रखें और जो कार्ड मिलेगा उसको संभालकर रखें यही आपका पासपोर्ट और पता है.

### अयतुल्लाह पर हाजरी

अपने कमरे से बावजू होकर मस्जिद हाराम की तरफ़ चलें, किसी भी दरवाजे से भुशूअ व भुजूअ से दाखिल हों, दाखिल होते वक्त

بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

केहकर दायें पांव अंदर रखें और ये दुआ पढ़ें :

“اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَاْفْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ”

(ترمذی: 41/1)

दाखिले के वक्त जान-अ-कअबा पर जब पहुँची निगाह पड़ती है तो उस वक्त की दुआ अल्लाह पाक कबूल फ़रमाते हैं. बेहतर ये है के सबसे पहुँची दुआ ये करलें के “अ अल्लाह ! मौत तक मेरी तमाम ज़रूरत दुआओं को जो मेरे हक में बेहतर हों और जो तुझे पसंद

હોં કબૂલ ફરમા.” યા યૂં કહેં “એ અલ્લાહ ! મુજે મુસ્તજાબુદ્ દઅવાત બનાદે.”

“اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ”

કેહકર હાથ ઉઠાકર ખૂબ દુઆએં કરેં, જિતની દેર દુઆ કર સકતે હેં, ઓર જો દુઆએં કર સકતે હેં, ઇન્શા અલ્લાહ ઇસ વક્ત કી સારી દુઆએં આપકી કબૂલ હેં. અગર યાદ હોં તો યે દુઆભી શામિલ કરલેં.

”اللَّهُمَّ زِدْ بَيْتَكَ هَذَا تَشْرِيفًا وَتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا  
وَمُهَابَةً وَزِدْ مَنْ شَرَّفَهُ وَكَرَّمَهُ مِنْ حَجَّةٍ أَوْ اعْتَمَرَهُ  
تَشْرِيفًا وَتَكْرِيمًا وَبِرًّا، اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ  
السَّلَامُ فَحِينَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ، أَعُوذُ بِرَبِّ الْبَيْتِ  
مِنَ الدِّينِ وَالْفَقْرِ وَمِنْ ضَيْقِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ  
القَبْرِ“

(قاضی خان)  
તર્જમા : “એ અલ્લાહ ! અપને મુકદ્દસ ઘર કી ઇઝ્જત વ અઝમત, શરાફત વ હયબત મેં તરક્કી ફરમા,

और उज व उमरु करनेवालों में जो इसकी अजमत व तकरीम करें उनको भी शराफत व अजमत और नेकी अता इरमा. ऐ अल्लाह ! तेरा ही नाम सलाम हे और सलामती तेरी हु तरफ से हे, तू हम पर सलामती भेज. मैं इस मुकदस घर के रब की पनाह लेता हूँ कर्जे से और मोहताज से और सीने की तंगी से और कफ्र के अजाब से.”

### उमरु और उसका तरीका

अब आपको उमरु करना हे, उमरु बहोत आसान हे, उमरु में आपको सिर्फ़ यार काम करने हैं. इसको जहन में बिठालो.

(१) पेहला काम : नियत और लब्बयक के साथ ओहराम बांधना, ओहराम तो आपका बंधा हुवा हे.

(२) दूसरा काम : बयतुल्लाह का तवाफ़ करना हे, रमल और इज़तिबाअ के साथ.

तवाफ़:केहते हैं बयतुल्लाह के गिर्ट सात यक्कर लगाने को. रमल :केहते हैं कांधे छिलाते हुअे करीब करीब कदम रभकर जरा अकड कर यलना. रमल तवाफ़ के पेहले तीन यक्करों में छोता हे.

ઈત્તિબાઈ :કેહતે હૈં એહરામ કી ઊપરવાલી યાદર કો દાહની બગલ કે નીચે સે નિકાલકર બાઈં કંધે પર ડાલના. ઈત્તિબાઈ તવાઈ કે સાતોં ચક્કર મેં હોતા હે.

(૩) તીસરા કામ : સફા વ મરવહ કે દરમ્યાન સચી કરના.

(૪) ચોથા કામ : હજામત બનવાના. યાની સર કે બાલ મુંડવાના યા કતરવાના.

બસ યે ચાર કામ કર દિયે તો આપકા ઉમરહ હો ગયા. અબ અચ્છી તરહ સમજેં કે તવાઈ કેસે કરના ?

### તવાઈ કા તરીકા

બયતુલ્લાહ કે ચાર કોને હૈં, એક કોને પર હજરે અસ્વદ હે, ઓર હજરે અસ્વદ કી તરફ રુખ કરેંગે તો દાહની તરફ રુકને ઈરાકી હે ઓર બાઈીં તરફ રુકને યમાની હે, રુકને ઈરાકી કે બાદવાલે કોને કો રુકને શામી કેહતે હૈં.

જબ તવાઈ શુરૂ કરેં તો હજરે અસ્વદ પર આઈેં, ઉસ વક્ત એહરામ મેં ઈત્તિબાઈ કરલેં, યાની દાહની બગલ સે યાદર નિકાલકર બાઈેં કંધે પર ડાલ લેં, હજરે અસ્વદ કે સામને ઈસ તરહ ખડે હોં કે કઅબા કી તરફ રુખ હો

और पूरा उजरे अस्वद दाहनी तरफ़ डो, फिर तवाफ़ की  
नियत करें :

‘اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الطَّوَّافَ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي’

“अै अल्लाह ! मैं तवाफ़ की नियत करता हूँ तू इसको  
आसान इरमा और इसको कभूल इरमा.”

नियत करके दाहनी तरफ़ ँतना डटे के उजरे अस्वद  
बिल्कुल सामने आ जाये, फिर जैसे नमाज में डाय उठाते  
हैं ँस तरड डाय उठाकर ये दुआ पढ़ें :

‘بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَبِاللَّهِ الْحَسَدُ’

फिर ँनों डाय उजरे अस्वद पर ँस तरड रभें जैसे  
सजदे में रभे जाते हैं, और ँनों डथेलियों के भीय में सर  
रभकर उजरे अस्वद को अदभ के साथ ढोसा दें. लीड की  
वजह से अगर उजरे अस्वद को ढोसा देना मुशिकल डो  
तो सिर्फ़ डाय लगाकर डाय को ढोसा दें, लेकिन आज कल  
ये लीड मुशिकल डे. उजरे अस्वद के पास पडोंयना डी  
मुशिकल डे. तो ँस सूरत में दूर से उजरे अस्वद के  
सामने डो जायें, उजरे अस्वद के सामने डोने के लिये

ઉસ લાઈટ કો દેખે જો હજરે અસ્વદ કી સીધ મેં ઊપર  
 લગી હુઈ હે. ફિર અપની જગહ ખડે ખડે દુઆ પઢકર  
 અપની હથેલિયોં સે હજરે અસ્વદ કી તરફ ઈશારા કરેં, યે  
 ખ્યાલ કરકે કે હથેલિયાં હજરે અસ્વદ પર હેં, ફિર  
 હથેલિયોં કો ખોસા દેં, ફિર દાહની તરફ બયતુલ્લાહ કા  
 તવાફ શુરૂ કરેં, ઓર તવાફ કા એક ચક્કર પૂરા કરકે જબ  
 હજરે અસ્વદ કે પાસ આ જાએં તો ફિર હજરે અસ્વદ કા  
 ઈસ્તિલામ કરેં, યાની દુઆ પઢકર હાથ સે ઈશારા કરકે  
 હથેલિયોં કો ખોસા દેં તો આપકા એક ચક્કર ઓર દો  
 ખોસે હુએ, ઈસ તરહ સાત ચક્કર પૂરે કરેં, તો સાત  
 ચક્કર હોંગે ઓર આઠ ખોસે, આપકા તવાફ હો ગયા,  
 પેહલા ઓર આખરી ઈસ્તિલામ યાની ખોસા બહોત  
 એહતેમામ સે કરેં, યે બહોત મોઅક્કદ હે.

યે ખાત ભી યાદ રખેં કે તવાફ કે દૌરાન સીના યા પીઠ  
 બયતુલ્લાહ કી તરફ ન કરેં, ઈસસે તવાફ ફાસિદ હો જાતા  
 હે, ઈસકો દો ખારહ કરના પડેગા. હાં ! હજરે અસ્વદ કે  
 ખોસે કે વક્ત સીના, પીઠ ઓર ચેહરા હજરે અસ્વદ કી  
 તરફ કરના મના નહીં હે, બલકે મસ્નૂન હે.



નીઝ તવાફ કે દૌરાન અપને સામને કી તરફ દેખતા રહે, ઈધર ઉધર દેખના મકરૂહ ઓર ખિલાફે અદબ હે, તવાફ કે દૌરાન બયતુલ્લાહ કી તરફ મુંહ કરના મકરૂહે તહરીમી હે.

ઈસી તરહ આપ દેખેંગે કે બહોત સારે લોગ રુકને યમાની કો ભી બોસા દેતે હૈં ઓર દૂરસે ધૂતે હૈ. ઈસમેં મસ્અલા યેહે કે જબ આપ રુકને યમાની પર પહોંચેં તો ઉસકો દોનોં હાથ યા સિર્ફ દાએં હાથ સે ધૂ લેના સુન્નત હે. ઉસકો બોસા ન દેં, યે સુન્નત નહીં હે બલ્કે હાથ લગાના સુન્નત હે, વો ભી કરીબ સે, અગર આપ દૂર હેં તો ઈશારે સે ધૂના ભી નહીં હે. (ઈઝાહુતહાવી, બદાઈઉસ્સનાઈઅ)

યે બાત ઝહન મેં રખેં કે આપ જો લખ્બયક પઢતે રેહતે થે વો ઉમરહ કા તવાફ હોતે હી બંદ કરદેં, અબ ન પઢેં. યે બાત ભી યાદ રખેં કે ઈઝ્તિબાઅ યાની દાહની બગલ સે ચાદર નિકાલકર બાએં કંધે પર રખના યે સાતોં ચક્કરોં મેં હોગા. ઓર રમલ યાની અકડકર ચલના પેહલે તીન ચક્કરોં મેં હોગા.

तवाइ के दौरान दुआओं पढते रहें जो याद हों, अगर कुछ याद न हों तो **”سُبْحَانَ اللَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ”** पढते रहें.

नोट : - तवाइ के सातों यक्करो की दुआओं और ईसी तरह मौका मल्ल की दुआओं किताब के अभीर में लिपी जा रही हैं, हो सके तो उनको भी याद करलें.

### तवाइ के दौरान सलाम व कलाम

तवाइ के दौरान अगर किसी दोस्त से मुलाकात हो जाये तो उससे सलाम व मुसाइहा कर सकते हैं, और ज़रत के बक़्द बातचीत कर सकते हैं, ईसी तरह मस्यला मसाइल पूछ सकते हैं, अपनी बातचीत कर सकते हैं, लेकिन बात चीत के दौरान सामने निगाह रेहनी याहिये, ईधर उधर मुडना मना हे, बहोत ज़ियादा, बे ज़रत बात चीत करना मक़्ज़ु हे. (ईजाज़ुल मनासिक, गुनियह)

### तवाइ के बाद दो रकात

तवाइ के बाद आप मकामे ईब्राहीम की तरफ़ आये, अगर याद हो तो ये आयत पढ़ें :

## { وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى }

अगर मकामे ईब्राहीम के पीछे सड़लत से जगह मिल जाये तो ठीक है, वरना जहां जगह मिले दो रकत तवाइफ़ की पढ़ें, नमाज़ पढ़ते वक़्त जो ईज़्तिबाअ था यानी बगल झुला था उसको ढांक दें, डर तवाइफ़ के ખत्म पर दो रकत वाजिब है, याहे नईली तवाइफ़ हो, नमाज़ पडकर ખूब गिडगिडाकर अल्लाह से दुआओं करें, ईसके बाद अगर सड़लत हो तो मुलतज़िम पर जाओं, डज़रे अस्वद और कम्बा के दरवाज़े के भीय में ढाई गज़ के करीब बयतुल्लाह की दीवार का जो खिस्सा है उसको मुलतज़िम केहते हैं, ये दुआ की कभूलियत की ખास जगह है, ईससे रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ईस तरह लिपट जाते थे जिस तरह बर्या मां के सीने से लिपट जाता है, अगर मोका मिले तो लिपट जाओं, सीना उससे लगाओं, कल्मी दाहना कल्मी बायां इन्फ़सार उस पर रभें और ખूब रो रोकर दुआ करें, मगर ईस तरह जाने की कोशिश डरगिज़ न करें के दूसरों को तकलीफ़ पड़ोये, या ખुद के लिये ખतरा हो जाये. डर

अमल में इसका प्याल रखें.

इसके बाद जमजम पर आएं, अब तो वो कूवां नहीं  
है, जगह जगह पर नल लगे हुए हैं, बयतुल्लाह की  
तरफ़ मुंह करके पेट भरकर जमजम का पानी पीएं. शुरु  
में “बिस्मिल्लाह” और अभीर में “अल्लहुमुलिल्लाह”  
पढ़ें और ये हुआ पढ़ें :

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا

وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ“

“अै अल्लाह ! मुझे इल्म नाफ़ेअ अता इरमा,  
वुस्अत वाली रोज़ी अता इरमा और हर बीमारी से  
शिफ़ा दे.”

जमजम का पानी बैठकर

पीएं या ञडे डोकर ?

आम तौर पर लोग ञडे डोकर ही पीते हैं, बल्के ञडे  
डोने का अेडतेमाम करते हैं और इसको सुन्नत समजते  
हैं, तो इस सिलसिले में मस्अला ज्ञानना याडिये के

उमरुम का पानी भी बैठकर पीना सुन्नत है, अलबत्ता  
 षडे डोकर भी पी सकते हैं, जाईउ है.

## उमरुड का तीसरा काम

आपको उमरुड में यार काम करने थे, दो काम आपने  
 कर लिये, अहराम और तवाई.

अब तीसरा काम है सईा भरवह के दरम्यान सअी  
 करना. यानी सईा पहाड से भरवह पहाडी तक और  
 भरवह से सईा तक चलना है.

जिस तरुड तवाई शुडू करने से पेडले आपने उजरे  
 अस्वद का ईस्तिलाम किया था, या हाथ से ईशारा करके  
 उथेलियों को ओसा दिया था, ईसी तरुड ओसा देकर सईा  
 पहाडी पर आएं, ये ओसा देना न भूलें, ये सुन्नत है,  
 सईा पर चढकर सअी की निथ्यत करलें :

”اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ السَّعْيَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ  
 بِسَبْعَةِ أَشْوَاطٍ لِلَّهِ تَعَالَى فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي“  
 “अै अल्लाह ! मैं सईा व भरवह की सअी की निथ्यत  
 करता हूं सात यकूरो के साथ अल्लाह तआला के लिये, तू

ईसको आसान इरमा और कभूल इरमा.”

हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की ईत्तेबाअ में बेहतर हे के आप भी कहेँ :

”أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ  
مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ“

ईर सझ पर यढकर बयतुल्लाह की तरङ्ग रुष करके दोनों हाथ उठाकर अल्लाह से दुआ करें. ये जगह भी दुआ के कभूलियत की हे. उसके बाद नीचे उतर कर मरवह की तरङ्ग यलें, सञ्जी के दरम्यान थोथा कलिमा, तीसरा कलिमा और ये दुआ पढते रहें

”رَبِّ اغْفِرْ وَاِرْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ

إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ“

”अै परवरद्विगार ! बष्श हे और रहम इरमा और उमारी जो गलतियां तेरे ईल्म में हें उनसे दरगुजर इरमा, तू बडोत गालिब और बडा ताकतवर हे और बडा करीम हे.”

सझ से कुछ दूर यल कर ढो डरे सुतून नजर आअेंगे, उनको “भीलैन अणजरैन” केडते हें, वहां से जरा दौडकर यलें, उसके बाद ढो डरे सुतून और नजर आअेंगे वहां पडोंयकर दौडना बंढ कर हें अपनी रइतार यलें. ये हुकम सिई मर्दों के लिये डे, औरतें अपनी रइतार से यलें. मरवड पडोंयकर ल्मी बयतुल्लाड की तरइ रुभ करके ढोनों डाय उठाकर भूभ दुआअें करें जैसे सझ पर की थी, ये ल्मी कभूलियत की जगड डे. ये आपका अेक डेरा हुवा, डिर मरवड से सझ पर जाअें तो दूसरा डेरा डोगा, डस तरड सात डेरे पूरे करें. सातवां डेरा मरवड पर भत्म डोगा, डर डेरे में सझ और मरवड पर डसी तरड दुआ करते रहें, डर डेरे में तकरीबन पय्थीस आयात के भकद्र दुआ करें, और डर डेरे में ढो डरे सुतून के भीय में दौडते हुअे यलें, डर डेरे में जिक व दुआ करते रहें भामोश न रहें.

## उमरड का योथा काम

अभ तीसरा काम सअी ल्मी डो गया, डसके बाद वडीं बाभे मरवड पर डज्जाम भौजूड आपका डन्तेजार कर रहे डोंगे, उनसे अपने सर के बाल मुंडवा दीजिअे, डलक

બેહતર હે, ચોથા કામ ભી હો ગયા, અબ આપકા ઉમરહ પૂરા હો ગયા, એહરામ કી સારી પાબંદિયાં અબ ખત્મ હો ગઈ, અપને ઘર પર આ જાએં, નહા ધોકર અપને કપડે પહેન લેં, ખુશ્બૂ ઓર ઈત્ર લગાએં, અબ આપકે લિયે વો સબ ચીઝેં જાઈઝ હો ગઈ જો એહરામ કી વજહ સે મના થીં.

ઔરતોં કે લિયે સર મુંડવાના નહીં હે, બલકે થોડે બાલ કાટના હે, યાની અપની ચોટી કે નિચલે હિસ્સે સે એક પોરે કે બરાબર બાલ કાટે, તકરીબન દેઢ ઈંચ. અબ ઔરતોં પર ભી એહરામ કી પાબંદિયાં ખત્મ હો ગઈ.

### હલક ઓર કસ્ર કી મુખ્તલિફ સૂરતેં

હલક યાની સર કે બાલ ઉસ્તુરે સે સાફ કરના, ઔર કસ્ર યાની સર કે બાલ મુંડવાના, એહરામ ખોલને કે લિયે હલક યા કસ્ર ઝરૂરી હે. ઈસકા મસ્નૂન તરીકા યે હે કે પૂરે સર કે બાલ મુંડવા દિએ જાએં, યા પૂરે સર કે બાલ બરાબર કરકે કટવા દિએ જાએં, હલક કરના કસ્ર સે ઝિયાદા બેહતર હે, ઈસકા સવાબ ઝિયાદા હે, આપ હરમ મેં દેખેંગે કે લોગ મુખ્તલિફ તરહ સે હલક ઓર કસ્ર કરતે હેં, આપ દેખા દેખી ન કરેં, મસ્અલા અચ્છી તરહ સમજલેં, ઈસકી કઈ સૂરતેં હેં :



(१) सर के बाल अगर बडे हैं तो आप कस कर सकते हैं, यानी बाल केंथी से कटवा सकते हैं, मगर लंबाई में कम अऊ कम उंगली के पोरे के बराबर कटाना वाजिब है, अगर आपके सर के बाल उंगली के पोरे से छोटे हैं तो फिर डलक करना वाजिब है, केंथी से काटने से अहराम नहीं भुलेगा. (अहसनुल इतावा)

(२) दूसरी सूरत ये के पूरे सर को यार हिस्सा करके अक हिस्से के बराबर, या उससे जियादा कटवाया जाये तो ऐसी सूरत में अहराम तो भुल जायेगा मगर मकड़हे तहरीमी का गुनाह डोगा. (गुनियतुन्नासिक)

(३) तीसरी सूरत सर के योथाई हिस्से से कम बाल कटवाये जायें, तो ऐसी सूरत में इमाम अबूहनीफ़ा रह. के नजदीक उसका अहराम नहीं भुलेगा, वो शम्स हराम में ही समजा जायेगा, अब हराम के बिलाइ काम करने से उस पर ज़ुर्माना वाजिब होता रहेगा.

(अहसनुल इतावा/ इतावा रहीमियह)

(४) योथी सूरत सर के बाल उगे ही नहीं हैं बल्के गंजा

हे, या पांच सात घंटे पेडले उमरड करके डलक कर  
दिया हे , अब फिर दो बारड उमरड कर रडा हे,  
तो ऐसी सूरतमें पूरे सर पर उस्तुरा डेरना वाजिब  
हे. (शामी/ इत्तुल कदीर)

खिडाजा आप अगर कस्र करते हैं तो अक उंगली के  
पोरे के बराबर बाल पूरे सर से बराबर काटें, और  
अगर सर पर बाल उंगली के पोरे से छोटे हैं तो पूरे सर  
का डलक करवाले.

### उमरड के बाद से अय्यामे डज तक

उमरड से शरिग डोकर आप ८/जिल डिज्जा तक  
मक्का मोअज़्जमा में बगैर अडराम के रहेंगे, अब आप  
पर कोई पाबंदी नहीं हे, इन दिनों में अपने अवकात को  
भूब गनीमत समजें, कुज़ूल कामों में, धर उधर की  
मजलिसों में, बरीद व इरोप्त और शोपिंग में कीमती  
वक्त जायेअ न करें, पांचों नमाजों के बाजमाअत डरम  
में पढने का अडतेमाम करें, जिक व तिलावत, नईल  
नमाजें और धबादत के लिये इससे बेडतर कौनसी  
जगड डो सकती हे ? अगर कुछ नहीं करते तो डरम में

बैठकर बयतुल्लाह को सिर्फ़ टैपते ही रहें, रोज़ाना  
 बयतुल्लाह पर अेक सौ बीस (१२०) रहमतें नाज़िल  
 डोती हैं, साठ तवाफ़ करनेवालों पर, यालीस नमाज़  
 पढनेवालों पर और बीस रहमतें बयतुल्लाह को  
 टैपनेवालों पर उतरती हैं. एन दिनोँ में आप तवाफ़ की  
 पूब कसरत करें. क्यूँ के तवाफ़ ऐसी एबाहत हे ज़ो डर  
 जगड मयस्सर नहीं आ सकती. फिर क्या पता आँहन्दा  
 यहाँ की डाररी और तवाफ़ की सआहत मुकदर हे या  
 नहीं. एस लिये अेक अेक लम्हे की, अेक अेक मिनट की  
 पूब कदर करें, नइली तवाफ़ अपने लिये ली करें, अपने  
 मरडूमिन के लिये ली करें.

एसी तरड आप नइली उमरड ली कर सकते हैं.  
 एसकी शकल ये डोगी के आप मक्का से बाडर जाकर  
 अेडराम बांधकर आवें, मक्का के यारों तरइ डरम की डद  
 हे और निशानात लगे डुअे हैं. मदीना की तरइ तन्नीम  
 डरम की डद हे. तन्नीम मक्का से तीन मील पर हे.  
 डुजूर صلى الله عليه وسلم ने डररत आँश رضى الله عنها को उनके लार्  
 अब्दुर्डमान के साथ उमरड करने के लिये लेजा था तो

तन्त्रीम पर आर्मी और यहाँ से अहराम बांधकर उमरुड किया. मक्कावाले आम तौर से यहीं से अहराम बांधते हैं. यहाँ उजरत आर्षशा رضی اللہ عنہا के नाम से मस्जिद आर्षशा भी बनी हुई है.

ईसी तरुड मक्का से तार्ई की तरई नव मील की मसाईत पर अक मकाम है जोअरानड, ये भी उरम की उड है. हुजूर صلى الله عليه وسلم ने तार्ई की तरई से आते हुअे यहाँ से अहराम बांधकर उमरुड किया था. उरम से बाहर मक्का में दोनों जगह के लिये आसानी से सवारियां मिलती हैं. तन्त्रीम से अहराम बांधकर उमरुड करें तो ईसको उई आम में छोटा उमरुड केडते हैं, और जोअरानड से अरहाम बांधकर उमरुड करें तो ईसे बडा उमरुड केडते हैं. (क्यूं के दूर की मसाईत पर जाकर अहराम बांधा है)

बाज लोग बार बार तन्त्रीम जाकर अहराम बांधते हैं, कभी रोजाना और कभी अक दिन में अक से जियादा उमरे कर लेते हैं, कसरत से उमरुड करना ममनूअ तो नहीं बल्के मुस्तुड है, लेकिन कसरत से तवाई करना

कसरत से उमरुड करने से अइजल हे, ईस लिये कसरत तो तवाइ की करें.

भाऊ लोग उज व उमरुड की सअी के अलावा सइ व मरवुड की सअी करते हे, ईसमें सवाअ समजते हे, ये गलत हे, ईसमें कोई सवाअ नहीं, नइली सअी शरअन साअित नहीं हे, अिला इयदा जानको थकाना हे, हां ! नइली तवाइ साअित हे, तवाइ कसरत से करें.

ईसके अलावा दुआओं का अूअ अेडतेमाम करें. पूरी उम्मत के लिये अल्लाड तआला से डिदायत और मसाईल का डल मांगें और अल्लाड को मनवाअें. अडी गिंयी जगड पर आप पडोंये हे, अूअ अडअ से गिडगिडाकर अल्लाड से मांगने का अेडतेमाम करें. आप ईन्शा अल्लाड नामुराड नहीं डोंगे.

मन्नत से, समाजत से, अडअ से मांगो

डरे करीम से साईल को क्या नहीं मिलता

मक्का में नमाऊ कैसी पढेंगे ? कसर या पूरी

भाऊ लोग उज से पेडले मदीना मुनव्वरा जाते हे और भाऊ उज के आड, तो गोया भाऊ को उज से पेडले

मक्का में जियादा रेहने का मौका मिलता है और बाज को उज के बाद, अब अगर मक्का में पंटरह रोज या उससे जियादा कयाम हो रहा है तो आप मुकीम होंगे आप नमाज पूरी पढ़ेंगे.

अगर पंटरह रोज से कम कयाम हो रहा है तो आप मुसाफिर रहेंगे, यानी आप कसर करेंगे.

नोट :- मिना व मुजदलिफ़ा मक्का की हुदूद में दाखिल हो गये. लिहाजा पंटरह दिन शुमार करने में मिना व मुजदलिफ़ा भी शामिल है, इस तरह अगर पंटरह दिन बनते हैं तो आप मुकीम हैं आपको यार रकात पढ़नी है मक्का में मिना व मुजदलिफ़ा और अरशतमें भी, अगर पंटरह दिन से कम है तो आपको कसर करनी है मक्कामें भी मिना व मुजदलिफ़ा और अरशतमें भी.

मस्जिद हुराम में नमाज पढ़ने में ખૂબ ध्यान रखें के कोई औरत आपके दाएं बायें न ખडी हो जाये, क्यूं के वहां औरतों का बहोत इप्तिलात होता है. अेक औरत की वजह से तीन मर्दों की नमाज खराब हो जाती है, औरत के दायाँ तरफ़वाले की, बायाँ तरफ़वाले की, औरत

કે પીછે પઢનેવાલે કી, ઈન તીનોં કી નમાઝ ખરાબહો જાતી હે. હજ કે મોકે પર ખાસ તૌર પર મસ્જિદે હરામ મેં બહોત ખ્યાલ રખેં, મજમેઅ કી ભીડ કી વજહ સે અગરયે યે એહતેયાત બહોત મુશ્કલ હોતી હે મગર ઈતના તો ઝરૂર ખ્યાલ રખેં કે અપને સે અગલી સફ મેં કોઈ ઔરત ન હો, ઔર દાઅેં બાઅેં લગકર ભી કોઈ ઔરત ન ખડી હો, અગર આપસે અગલી સફ મેં યા દાઅેં બાઅેં કોઈ ઔરત આકર ખડી હો જાઅે તો આપ આગે બઢ જાઅેં. અલબત્તા મસ્જિદે નબ્વી મેં ઔરતોં કા બિલ્કુલ અલગ ઈન્તેઝામ હે. મસ્જિદે હરામ મેં તવાફ કી વજહ સે અલગ ઈન્તેઝામ હુકૂમત કે લિયે મુશ્કલ હે.

## હજ કે પાંચ દિન

આઠ ઝિલ હિજ્જા સે હજ કા વક્ત શુરૂ હોતા હે, ૮, ૯, ૧૦, ૧૧ ઔર ૧૨ ઝિલ હિજ્જા ઈન પાંચ દિનોં મેં કુછ આ'માલ વ અરકાન આપકો કરને હેં, ઈસી કો હજ કેહતે હેં. આઠ ઝિલ હિજ્જા સે પેહલે યાની સાત ઝિલ હિજ્જા કો ઈશા કે બાદ સે હી તૈયારી કરલેં, ચૂંકે હાજી ઝિયાદા હોતે હેં તો મોઅલિલમ હઝરાત ઈશા કે બાદ સે

डी हाजियों को बिना लेजाना शुरू कर देते हैं, लिहाजा तमाम जरूरियात से फ़ारिग होकर गुस्ल करलें और अहराम बांधें. जैसे पेहले बांधा था, अक यादर का तेहबंद बनालें और अक यादर ओढलें, और जैसे पेहले सर ढांककर दो रकात पढी थी अब भी पढलें, सलाम ફेरकर यादर सर से उटाकर उज की निय्यत करलें, याहे तो ८/ तारीफ को निय्यत करें, निय्यत ईस तरह करें :

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”

“अे अल्लाह ! मैं उज की निय्यत करता हूँ तू ईसको मेरे लिये आसान फ़रमा और कबूल फ़रमा.”

निय्यत के साथ डी तीन भरतबा ज़रा बुलंद आवाज़ से तल्लियह पढ़ें :

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ

الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

और औरतें आहिस्ता तल्लियह पढ़ें, अब आपका अहराम शुरू हो गया, अब वो सारी पाबंदियां लग गई जो पेहले बयान की गई थीं.



(और जिनका उज ईश्वरद या किरान डे उनका  
अहराम तो पेडले से बंधा हुवा डे.)

अब आप दसवीं या ग्यारहवीं तारीख को कुर्बानी  
करके सर के बाल मुंडवाअंगे तब आपका अहराम ખत्म  
डोगा, अब आपको पेडले की तरड डर मोके पर यलते  
डिरते, डठते डैठते ખूब शौक के साथ और अल्लाड की  
अजमत व मोडडबत के साथ लडडयक पढते रेडना डे,  
और डे ड्याल करके पढना डे के डें डजरत डब्राडीम  
ﷺ की पुकार का अल्लाड को जवाब डे रडा डूं और  
अल्लाड डेरी बात सुन रडा डे.

## उज का पेडला डिन ८/ जिल डिज्जल

अब आप डिना पडोंय गअे, आठ तारीख को जोडर  
से पेडले तकरीबन तडाम डलज डिना पडोंय जाते डें.  
वडं पेडले से डैडे (टेंट) लगेडोते डें. डोअद्लिम की डस  
आपको आपके डैडे डें पडोंया डेगी. और डे ड्याल रडें  
के डज्जले परावेट सवारियों के डोअद्लिम की डस से डी  
सडर करें. डैडल डी सडर न करें, वरना आप अपने  
डैडों की तलाश डें डटक जाअंगे.

ईसका ल्मी प्याल रभें के सामान बडोत थोडा और ऊरुरत का लेकर जायें. मसलन अेक जोडा अेहराम की यादरें, उवा का तकिया, लुंगी, प्लास्टीक का मुसल्ला, यटाई, पर्दा करने के लिये यादरें, ब्रेड, सत्तू, कूट, इरसान, लोटा, साबुन, कंकरी की थेली, यप्पल रभने की थेली वगैरा.

मिना जाने से पेडले मोअल्लिम की बस का नंबर और मिना में आपका भैमा कडां डे पेडयान करलें, और अपना तआरुफीकार्ड डर वक्त साथ रभें, अपने भैमों में पडोंय कर ईस बात का पूरा ध्यान रभें के बेपर्दगी बिल्कुल न डो, ईस लिये भीय में पर्दा डालकर मस्तूरात को अेक तरफ करहें और मर्ह अेक तरफ डो जायें.

मिना मक्का से तीन भील के इस्ले पर डो तर्फ पडाडों के दरम्यान बडोत बडा मैदान डे. मिना में आज आपको पांय नमाजें पढनी डे. जोडर, असर, मगरिब, ईशा और ड/ जिल डिज्जा की इजर. ये पांय नमाजें अपने भैमों में बाजमाअत अदा करें, बस और कोई काम आज मिना में नडीं डे, बाकी वक्त जिक व तिलावत, तस्बीड व दुआ और अल्लाड की याद में गुजारें.

## હજ કા દૂસરા દિન ૯/ ઝિલ હિજ્જા

આજ હજ કા દૂસરા દિન હે. આજ સે અથ્યામે તશરીક ભી શુરુ હો ગએ, લિહાઝા ફજર કી નમાઝ કે બાદ ફૈરન મદ બુલંદ આવાઝ સે ઓર ઓરતેં આહિસ્તા સે તકબીરે તશરીક પઢેં. તકબીરે તશરીક ૯/ ઝિલ હિજ્જા કી ફજર સે ૧૩/ ઝિલ હિજ્જા કી અસર તક હર ફર્ઝ નમાઝ કે બાદ પઢના વાજિબ હે, તકબીરે તશરીક યે હે :

”اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ  
“ أَكْبَرُ وَاللَّهُ الْحَمْدُ

૯/ ઝિલ હિજ્જા કા દિન બડા હી અઝીમુશ્શાન દિન હે. આજ આપકો સૂરજ નિકલને કે બાદ મિના સે અરફાત કી તરફ રવાના હોના હે, અરફાત મિના સે ૬/ મીલ પર એક મૈદાન હે, યહાં ભી પેહલે સે ખૈમે લગે હોતે હેં, વહાં પહોંચ કર અગર ઝરૂરત મહસૂસ હો તો ઝવાલ તક આરામ કરલેં, ફિર જબ ઝવાલ કા વક્ત કરીબ આએ તો બેહતર યે હે ગુસ્લ કરલેં, યાની સિફ બદન પર પાની બહાલેં, બદન ન મલેં.

अरझात में अेक मस्जिद डे “मस्जिदे नमिरड” उसमें ँमामे डज जोडर और असर अेक साथ पढाते हैं, अगर पडोंय सकें तो आपत्मी ँमाम के साथ जोडर और असर अेक साथ पढ़ें, अगर आप ँमाम के साथ नमाज पढते हैं, तो ँसका ष्याल रषें के ँमाम ँस जमाने में सूषा नज्द से आता डे और मुसाफिर रेडता डे, ँस लिये ढोनों नमाजों को ढो ढो रकात करके कसर कराता डे, आपत्मी अगर मुसाफिर हैं यानी पंढरड दिन से कम कयाम डे तो ँमाम के साथ कसर पढलें, और अगर आप मुकीम हैं तो आपको यार रकात पढनी पडेगी. ँमाम जब जोडर की ढो रकात पर सलाम डेर डे तो आप जल्दी से ञडे डोकर ञगैर किराअत के रुकूअ सजडे के साथ ढो रकात पढकर सलाम डेर डें उसके ञाद ँमाम के साथ असर की नमाज में शरीक डो ज्ञअें, और जब ँमाम असर ढो रकात पढाकर सलाम डेर डे तो आप ञडे डोकर ञाकी ढो रकात ँसी तरड पूरी करलें.

ढाज लोग नावाकिल्डियत की वजड से ञावजूद मुकीम डोने के ँमाम के साथ सलाम डेर डेते हैं, अैसी सूरत में

उनकी नमाज़ नहीं होगी, उनको अपनी नमाज़ लौटाना पड़ेगी. (ईजाहुल मनासिक)

मगर आज कल भीड़ बहोत ज़ियादा होती है, भीड़ में हो सकता है के आप अपना भैमा भूल जायें और भटक जायें, इस लिये मुनासिब है के अपने भैमों में जमाअत के साथ जोहर के वक्त में जोहर और असर के वक्त में असर की नमाज़ पढ़ें, यहाँ दोनों नमाज़ें अेक साथ न पढ़ें, इसके बाद जिक्र व दुआ में लग जायें.

अरज़ात के ये बंद घंटे जोहर से मग़रिब तक ये पूरे उज का भुलासा है और नियोड है, ये दुआ की कबूलियत और मग़फ़िरत का दिन है, इस दिन में अल्लाह तआला आस्माने दुन्या पर नुज़ूल फ़रमाते हैं और फ़रिशतों पर फ़त्र करते हैं, लिहाज़ा पूरी तरह अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह रहें.

आज का पास काम दुआ और ईस्तिग़्फ़ार है. गुरुब तक किब्ला रुं भडे भडे जितना भडा रेह सकते हैं, फिर बैठ कर, फिर भडे रेह कर अल्लाह के सामने भूब दुआयें करें, दुआ की किताब पढ़ें, इस दिन में अपने मालिक को

जितना मन्वा सकते हैं मन्वा लें, अपने लिये, घरवालों के लिये, वालिदैन के लिये, रिश्तेदारों के लिये, मोडसिनीन के लिये, दोस्त व अडभाब के लिये, मर्दूमिन के लिये, तमाम उाजियों के लिये और पूरी उम्मत के लिये ખૂબ गिडगिडाकर दृआअें मांगें, जिस उषान में मांग सकते हैं मांगें. अरझात के मैदान में उवाल से गुरुष तक के वक्त में थोडी देर वुकूफ़ करना यानी ठेहरना उज का बडोत बडा इर्र है.

### अरझात के मा'भूलात

अरझात में उाहर के बाद ये चार अमल करें :

(१) योथा कलिमा : - सौ (१००) भरतभा

” لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ “

(२) बिस्मिल्लाह के साथ सूर-अे-र्रफ्लास : सौ (१००)

भरतभा

{ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ لَمْ يُولَدْ ۝ }  
 { يُولَدُ ۝ لَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ }

(3) दुइदे ँब्राहीम : - सौ (१००) भरतबा आभर में  
“वअलयना मअडुम”

” اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا  
صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ  
مَجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ  
وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ  
إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ “

(४) ँस्तगुशरः (१००) भरतबा जो आपको याद डो

” اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَاتُوبُ اِلَيْهِ “

ँसके साथ कुआन की तिलावत, मुनाजाते मकभूल,  
डिअभुल आ'अम ली पढलें. अरश के दिन डुडूर سَلَى الشَّاهِدِ से  
दूध पीना साबित डे, लिडाआ सुन्नत की ँत्तेबाअ में  
आपली अगर मयस्सर डो तो दूध पी लें या कोँ और  
थीअ पा पी लें.

## मुजदलिफ़ा की तरफ़ रवानगी

जब सूरज गुरुज्ज लो जाअे तो मगरिब की नमाज पढे बगैर मुजदलिफ़ा की तरफ़ रवाना लो जाअें, मगरिब की नमाज न अरफ़ात में पढें न रास्ते में बल्के मुजदलिफ़ा पढोंयकर ईशा के वक्त में मगरिब और ईशा अेक साथ पढें, अेक अजान और अेक ईकामत के साथ पढें, यानी अजान के बाद तकबीर केहकर मगरिब की नमाज पढें फिर इर्ज़ पढकर झैरन ईशा की नमाज की जमाअत करें बगैर तकबीर के, ईसके बाद मगरिब की सुन्नतें फिर ईशा की सुन्नतें और वित्र पढें.

मुजदलिफ़ा अरफ़ात से उ/ भील पर अेक मैदान ले, यहां जैमे नहीं लगे होते हैं, ये रात आपको मुजदलिफ़ा में गुजारनी ले, ये रात शबे कद्र से अइजल और जियादा काबिले कद्र ले.

रिवायतों में ले के उज्जतुल विदाअ में रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने अरफ़ात में उम्मत के लिये बहोत कुछ भांगा था, सिवाअे अेक हुआ के अल्लाह ने सारी हुआअें कभूल इरमाली थीं, लेकिन मुजदलिफ़ा में आपने ખૂબ



गिडगिडाकर अल्लाह से द्हुआओं की और उसी द्हुआ को फिर मांगा तो यहाँ पर अल्लाह ने वो द्हुआ ली कभूल करली और आप उम्मत के अंजाम से बहोत ही ખुश और मुतमईन हो गये और शयतान को आपने देखा के बहोत ही वावेला कर रहा हे और अपने सर पर मिट्टी डाल रहा हे.

लिहाजा ईस रात की ली कदर करना हे, आम तौर से ऐसा होता हे के अरइत से थकेहारे आये और यहाँ गेहरी नींद सो गये और पूरी रात सोने में गुजर गई, ऐसा न हो, ईसका प्याल रभें. अगर थकन बहोत जियादा हो तो मगरिब व ईशा पढकर थोडी द्हुआ करके कुछ घंटे आराम करें और सुबह सादिक से पेहले उठकर जिक व द्हुआ में मस्जूद रहें. इजर की नमाज अव्वल वक्त में पढलें, ईसके बाद सूरज निकलने के करीब तक फिर जिक व द्हुआ में मशगूल हो जायें.

इजर के बाद से सूरज निकलने के करीब तक थोडी देर मुजदलिशा में ठेहरना ये इज का वाजिब हे, लिहाजा इजर से पेहले हरगिज मुजदलिशा से न निकलें, वरना

वाजिब छूट जायेगा और दम देना पड़ेगा. और ये बात भी याद रखें के मुजदलिफ़ से ई हाज (हर हाज अपने लिये) सत्तर कंकरियां भी युनलें.

## ७४ का तीसरा दिन १०/ जिल डिज्जा

जब मुजदलिफ़ में सूरा निकलने का वक्त करीब हो जाये तो वहां से मिना की तरफ़ रवाना हो जाये. आज १०/ जिल डिज्जा यानी कुर्बानी का दिन है, ७४ की मशगूली की वजह से ईद की नमाज अल्लाह ने हाजियों से माफ़ कर दी है. आज आपको चार काम करने हों और बड़ोत आसान हों.

(१) रमी (२) कुर्बानी (३) हलक (४) तवाफ़े जियारत

पहले तीन में तरतीब वाजिब है, तवाफ़े जियारत दस की सुबह से बारह की मगरिब तक कभी भी कर सकते हैं. दस की सुबह को मुजदलिफ़ से सीधे जाकर अगर तवाफ़े जियारत करलें फिर आकर ईत्मीनान से बडे शयतान को कंकरियां मारें तो भी सही है. बल्के जमीक कमजोर और मस्तूरात साथ हों तो ईसमें आसानी रहेगी है, क्यूं के मताफ़ में जियादा भीड नहीं रहेगी,

और अगर तवाड़े ज़ियारत बाद में करना चाहें तो भी कोई हज़ नहीं।

बहरहाल आज मिना में सबसे पहले बड़े शयतान को सात कंकरियां मारनी है। मिना में तीन जगहों पर लम्बे सुतून बने हुए हैं उनको जमरात केहते हैं। पहला जमरा मस्जिद पैड़ के करीब है, जिसको जमर-अ-उला केहते हैं। दूसरा उससे आगे है उसको जमर-अ-वुस्ता यानी दरम्यानी जमरा केहते हैं। तीसरा बिल्कुल मिना के अभीर में है जिसको जमर-अ-उकबा यानी बड़ा जमरा केहते हैं।

पहले बड़े शयतान को सात कंकरियां मारना है, इसका अइज़ल वक्त सूरज निकलने के बाद से ज्वाल तक है, मगर इसके बाद भी मार सकते हैं। इसमें जल्दबाजी बिल्कुल न करें, जिस वक्त सहूलत और आसानी हो उस वक्त मारें, वक्त सुबह साढ़िक तक रहेता है, आम तौर पर छहसात इसी मोके पर होते हैं, इस लिये इत्मीनान से काम करें।

दूसरे और तीसरे दिन तीनों शयतान को कंकरियां

मारना है, और वक्त ज्वाल के बाद से सुबह साढ़िक तक है।

ये बात भी याद रखें के शयतान को कंकरियां ठीपर के डिस्से में जाकर मारें, इस मे ज़ियादा सड़लत है। और अत्नी तक जो आप लब्बयक पढ रहे थे बडे शयतान पर पेहली कंकरी के साथ ही लब्बयक बंद करदें।

### दस तारीख का पेहला काम

तो दस तारीख का पेहला काम बडे शयतान को सात कंकरियां मारना है, कंकरी शहादत की उंगली और अंगूठे से पकड़ें और हर कंकरी के साथ ये दुआ पढते जायें :

”بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ رَغْمًا لِلشَّيْطَانِ

وَرِضَى لِلرَّحْمَنِ“

मैं कंकरी मारता हूँ शयतान को जलील करने और रडमान को राजी करने के लिये।

अगर पूरी दुआ याद न हो तो सिर्फ “बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर” कहे, या अपनी ज़बान में कहे “शयतान को जलील करने और रडमान को राजी करने के लिये.” ये बात ज़ेन में रखें के कंकरी सुतून को ही लगे ये

ઝરૂરી નહીં, બલ્કે સુતૂન કે અતરાફ મેં બને હુએ દાયરે મેં ભી ગિર જાએ તો વાજિબ અદા હો જાએગા. યે ખાત ભી સમજલેં કે કંકરિયાં ક્યૂં મારી જાતી હે ?

હઝરત ઈબ્રાહીમ عليه السلام જબ અપને બેટે ઈસ્માઈલ કો ઝબહ કરને ચલે તો સબસે પેહલે શયતાન પેહલે જમરે કે પાસ મિલા ઔર ઈરાદે સે રોકના ચાહા, હઝરત ઈબ્રાહીમ عليه السلام ને સાત કંકરિયાં મારીં તો વો ઝમીન મેં ધંસ ગયા, આગે બઢકર ફિર દૂસરે જમરે કે પાસ નઝર આયા, યહાં ભી સાત કંકરિયાં મારીં વો ઝમીન મેં ધંસ ગયા, ફિર છોટે જમરે કી જગહ નઝર આયા, યહાં ભી સાત કંકરિયાં મારીં ઔર વો ઝમીન મેં ધંસ ગયા.

અલ્લાહ તઆલા કો અપને બંદે ઈબ્રાહીમ عليه السلام કા ઈખ્લાસ ઔર આશિકાના અમલ પસંદ આ ગયા, તો કયામત તક હાજિયોં કો હુદમ દે દિયા કે તુમ ભી ઈન જગહોં પર કંકરિયાં મારો.

**રમી મેં નાઈબ બનાના કબ જાઈઝ હે ?**

કોઈ એસા બીમાર હે ઔર કમઝોર યા બુઢા ઔર અપાહિજ હે જો જમરાત પર પહોંચકર રમી કી તાકત

नहीं रખता तो उसकी तरफ़ से दूसरे को नाँव बनाना  
 जाँव यांनी उसकी कंकरी दूसरा मार सकता है, वो दूसरा  
 आदमी पेहले अपनी कंकरी मारे फिर उसकी मारे, लेकिन  
 अगर औरत तंदुरस्त है सिर्फ़ भीड से घबरा कर या  
 पैदल चलने की थकान की वजह से दूसरे को नाँव बनादे  
 तो जाँव नहीं है बल्के उसको भुट मारनी पड़ेगी, या  
 कोई मर्द मडल भीड या थकान की वजह से दूसरे को  
 नाँव बनादे तो जाँव नहीं है, अगर ऐसा किया तो  
 रमी न होगी और दम वाजिब होगा. (ईजाहुल मनासिक)

## १०/ ज़िल हिज्जा का दूसरा काम

कुर्बानी करना है. आपका उज तमतुअ है तो आप  
 पर कुर्बानी वाजिब है (ईसी तरह किरान करनेवालों पर  
 भी वाजिब है, अलबत्ता ईफ़राद करनेवालों पर वाजिब  
 नहीं मुस्तहब है, करलें तो अच्छा है न करें तो कोई हर्ज  
 नहीं) ये कुर्बानी उज के शुक्राने की है, ईसके अलावा आप  
 पर जो सालाना कुर्बानी है, वो तो बाकी है वो भी करना  
 है, हां! वो कुर्बानी आप अपने वतन में भी करवा सकते हैं.

बहरहाल १०/ तारीख को रमी से इरिग होकर

भेडतर तो ये डे के षुढ कुर्बानगाड पर जाकर अपने डाय से अपनी पसंद का जानवर वुस्अत के मुताबिक ढरीदकर कुर्बानी करें, अगर षुढ नहीं जा सकते तो किसी षास आदमी को वक्त मुतअय्यन करके वकील बना दें. वक्त ँस लिये मुतअय्यन करना डे ताके आप सर मुंडवा सकें. क्यूं के कुर्बानी से पेडले सर नहीं मुंडवा सकते.

डुकूमत की तरफ से जो कुर्बानी के डिस्से लिये जाते हैं, या और कोई प्राँवेड कुर्बानी का जो नज़्म रेडता डे तो वडों पर भी आप कुर्बानी कर सकते हैं, मगर वक्त मुतअय्यन करने में आप डोशियार रहें. जो वक्त आपकी कुर्बानी का वो लोग बताओं तो अेडतियातन उससे ढो घंटा लेट डी अपना डलक करवाओं.

## १०/ ज़िड डिज्जा का तीसरा काम

कुर्बानी के षाद अपने सर के षाल मुंडवावें और औरतें अपने षालों के अभीर डिस्से से सिई अेक उंगल करीब ढेढ ँय षाल काटें, ये डलक डज के वाजिआत में से डे.

१०/ ज़िल डिज्जा को जब आपने शयतान को कंडरियां मारली, कुर्बानी भी करली और सर भी मुंडवा

लिया तो आपका अहराम भत्म हो गया, अब आप सिले हुअे कपडे पहन सकते हैं और वो सब चीजें उलाल हैं जो अहराम की वजह से हराम थीं. मगर अक पाबंटी अभी बाकी है के भीवी अभी उलाल नहीं हुई, जब तवाड़े जियारत कर लेंगे तो भीवी भी उलाल हो जायेगी.

### १०/ जिल डिज्जा का योथा काम

ये बात जहेन में रभे के रमी, कुर्बानी और उलक तीनों में तरतीब वाजिब है. पेहले रमी करना है उसके बाद कुर्बानी फिर उजामत. अगर तरतीब उलटती तो हम वाजिब होगा.

अर्र्छा ! जब तीनों काम हो गये तो आज का योथा काम है तवाड़े जियारत, ये उज का इर्ज है, मक्का जाकर तवाड़े जियारत करलें, ये तवाड़ भी ऐसा है जैसे उमरुह का तवाड़ आपने किया था के उजरे अस्वद के इस्तेलाम से तवाड़ शुरु होगा, सात यक्कर होंगे. हां ! ये तवाड़ यूंके आम तौर पर अपने कपडों में होता है, क्यूं के हाज्ज कुर्बानी करके उलक करवा लेता है और अहराम उतार लेता है, तो इसमें इजतेबाअ न होगा, लेकिन अगर



कुर्बानी करके आपने हलक नहीं किया और अहराम में डी आकर तवाड़े जियारत करते हैं, या रमी और कुर्बानी से पहले तवाड़े जियारत करते हैं तो तवाड़ के पहले तीन यक्करो में रमल होगा यानी कांधे छिलाते हुअे अकडते हुअे यलेंगे और सातों यक्करो में छजतेभाअ होगा यानी दाहनी बगल से अहराम की यादर निकालकर भाअें कांधे पर डालेंगे.

अगर अकडी दिन में यारों काम न हो सके तो कोछ उरज नहीं है, रमी करलें फिर कुर्बानी और हलक. तवाड़े जियारत दूसरे दिन करें, अगर छतना भी न हो सके तो सिई रमी आज करलें, दूसरे दिन कुर्बानी, हलक और तवाड़े जियारत करलें.

## तवाड़े जियारत के बाद सअी

ये बात जडेन में रभे के उमरहवाले तवाड़ के बाद जो सअी है ये उमरह की सअी है. और तवाड़े जियारत के बाद जो सअी है ये हज की सअी है. और नईली तवाड़ जितने भी आप करेंगे उसमें सअी की जरूरत नहीं है. डं ! नईली उमरह करेंगे तो तवाड़ के बाद सअी होगी.

अब सखी करने में ये बात ध्यान में रखें के ईश्राफ, किरान और तमतुअ वाले तीनों तरह के हाजियों ने मक्का में आते ही तवाइ किया था, तो ईश्राफवाले का तो ये तवाइ तवाइ कुदूम था और किरान और तमतुअवालों का ये उमरह का था, इन दोनों ने उस तवाइ के बाद सखी भी की थी, तो ये उमरह की सखी थी, अब तवाइ जियारत करने के बाद तमतुअ और किरानवालों को उज की सखी करना जरूरी है, बिना ये दोनों तवाइ जियारत के बाद सखी भी करेंगे. और ईश्राफवाले ने अगर तवाइ कुदूम के साथ सखी भी की थी तो उसको तवाइ जियारत के बाद सखी करने की जरूरत नहीं उसकी पहली सखी उज की सखी हो जायेगी. और ऐसी सूरत किरान के लिये भी है के अगर किरानवाले ने उमरह का तवाइ व सखी करने के बाद जब तवाइ कुदूम किया तो उसके साथ अगर उसने सखी करली है तो किरानवाले को भी तवाइ जियारत के बाद सखी करने की जरूरत नहीं है, और किरानवाले के लिये ये अइजल है.

ईसी तरह तमतुअवाला भी अगर उज की सखी

पेहले करना याहे तो ट/ जिल डिज्जा को जब उज का  
 अहराम बांधे तो उस वक्त बयतुल्लाह का तवाइ करके  
 सअी ली करले तो ये सअी उज की डो जायेगी. अब  
 इसको तवाइ जियारत के बाद सअी की जरूरत नहीं है,  
 मगर तमत्तुअवाले के लिये सअी बाद में बेहतर है.

नोट : - तवाइ कुदूम सुन्नत है ईश्राफ और  
 किरानवाले के लिये, किरानवाला उमरह का तवाइ व  
 सअी करके तवाइ कुदूम करेगा, तमत्तुअवाले पर तवाइ  
 कुदूम नहीं है.

बहरहाल आपका उज तमत्तुअ है तो आपको तवाइ  
 जियारत के बाद सअी करनी है याहे पेहले करें या बाद  
 में, मगर बाद में बेहतर है.

तवाइ जियारत उज का ईर्ज है, अगर किसी ने तवाइ  
 जियारत नहीं किया और यला गया तो जब तक दो  
 बारह मक्का आकर तवाइ जियारत न करे उसकी बीवी  
 उस पर हराम रहेगी याहे सालहा साल गुजर जायें,  
 तवाइ जियारत १२/ की मगरिब तक कर लेना है, अगर  
 बहोत जियादा लीड डो और आपके साथ जईई लोग या

मस्तूरात छों तो सिई तवाइ ल्मी कर सकते हैं सखी बाढ में करलें.

अगर उज के दौरान औरत को नापाकी की डालत पेश आ जाअे तो वो उज के तमाम उमूर अढा करे सिई तवाइ जियारत उस वक्त तक न करे जब तक पाक न डो जाअे, न डरम में ढाखिल डो, ईस ताभीर से उस पर डम वाजिब न डोगा, न गुनाड डोगा, अलडता पाक डोने के बाढ इर ताभीर न करना याडिये.

## उज का योथा दिन ११/ जिल डिज्जा

आज आपको जियाढा काम नहीं करना डे, अगर डस तारीख को कुर्बानी और तवाइ जियारत नहीं किया था तो ईसको आज करलें, अगर कर लिया था तो डीक डे. आज का काम तीनों शयतान को सात सात कंकरियां मारना डे. वक्त ज्वाल के बाढ से सुब्ड साढिक तक रेडता डे, लिडाजा ईसमें जल्डबाजी न करें. पेडले छोटे शयतान को सात कंकरियां मारें, डर कंकरी के साथ डुआ ल्मी पढते जाअें जो पेडले डताई गई. इर मजमअ से थोडा डडोत डटकर किड्ला ३ डाथ उढाकर डुआ करें. इर डरम्यानी

शयतान को ईसी तरुड सात कंकुरियां डारें और थुडा दूर उटकर दुआ करें. फिर डडे शयतान को डी ईसी तरुड सात कंकुरियां डारें और यडं दुआ न करें, ईसके डुड रात डिना डें डी गुजरें नडुओं और दुआओं के अडतेडड के साथ.

## डुड का डुंयवां दिन १२/ डिल डिडुड

अगर किसी वडड से १०/ और ११/ को आप कुडुडानी और तवाड़े डियारत नडीं कर सके थे तो आज ईससे डरिग डो डुडें. आज डगरिड तक किसी डालत डें तवाड़े डियारत कर लेना डे. अगर आज डगरिड तक नडीं कर सके तो दड डेना डडेगा और तवाड़े डियारत तो करना डी डे, और अगर डगरिड से डेडले आपने तवाड़े डियारत शुडु तो कर दिया डगर डूरा नडीं कर सके तो ईस सूरत डें डगरिड से डेडले आपके यार या उससे डियादा यकर डुअे डें डसलन : डुंय यकर डुअे डो डुडी रेड गअे, तो डो सदक-अे-डिडुर डोने डो डिलो गेडुं के डिसाड से डेना डडेगा, और अगर यार से कड यकर डुअे डसलन : डो या तीन, तो ईस सूरत डें तवाड़ तो

मगरिब के बाद पूरा करलें और दम देना पड़ेगा. इसके बाद आज भी आपको तीनों शयतानों को सात सात कंकरियां मारना है बिल्कुल इसी तरह जैसे कल मार चुके हो, उर कंकरी के साथ हुआ भी पढ़नी है, पेहले और दूसरे शयतान को मार कर मजमअ से हटकर थोड़ी देर हुआ करनी है, तीसरे शयतान को कंकरी मार कर हुआ नहीं करनी है.

आज भी रमी का वक्त ज्वाल से सुब्ह सादिक तक है, लिडाजा जल्दबाजी न करें, रात में भी मार सकते हैं, आज की रमी करने के बाद अगर आप मक्का मुकर्रमा जाना चाहें तो जा सकते हैं.

मगर ये बात याद रखें अगर १२/ तारीख को मक्का जाना है तो मगरिब तक या ईशा के बाद निकल जाएं, अगर रमी में ताभीर हो गई और मिना में सुब्ह सादिक हो गई तो अब तेरहवीं की रमी वाजिब हो गई, अब भगैर रमी के नहीं जा सकते. अलबत्ता तेरह की रमी ज्वाल से पेहले भी कर सकते हैं, मगर बेहतर शकल आप ये अपनाओं के ईत्मीनान से अरकान अदा

करें और तेरहवीं को भी कंकरियां मार कर ही मक्का  
जायें, तो अेक सुन्नत भी अटा ढो जायेगी और  
जल्दबाजी और भागदौड भी नहीं करनी पडेगी.

## रमी की इलीलत

रमी की ढडी इलीलत ढे, ढर कंकरी पर अल्लाड  
तआला अेक मोडलिक, भारी गुनाड माइ करता ढे, जो  
आदमी को ढलाक करने के लिये काई ढोता ढे.

## तवाइे विदाअ

अढ माशा अल्लाड आपका ढज अल्लाड ने पूरा कर  
दिया. अढ आप पर कोई ढास काम ढाकी नहीं रढा,  
सिई अेक काम रेढ गया वो ये के जब आप मक्का से  
रूढसत ढोंगे तो आपको रूढसती तवाइे करना ढे, जिसको  
तवाइे विदाअ केढते हैं. वो भी सिई तवाइे ढे, ढसमें सअी  
नहीं ढे. और ढसमें भी ये सढूलत ढे के ढिल्कुल निकलते  
वक्त अगर मोका नहीं मिल सका तो कोई ढरज नहीं ढे,  
ढज के ढाद मक्का में जितने दिन आप रहेंगे तो ढसमें  
आप नइली तवाइे करेंगे ढी, तो जो आपरी तवाइे आपने

किया है वो रुप्सती तवाइ समजा जायेगा, लेकिन अगर आपको पता है के कितने बजे निकलना है और मोका है तो आपही तवाइ ध्यान के साथ जरूर करलें.

अब आपको जो दिन मक्का में रहने के लिये मिल जायें उसको गनीमत समजें और अल्लाह का शुक्र अदा करें के उसने आपको ये सआदत नसीब की है, दिन रात में जितने हो सके नइली तवाइ करें, नइली उमरुह करें, अपने लिये, अपने वालिदैन के लिये, मोहसिनीन के लिये, रिश्तेदारों के लिये, पूरी उम्मत के लिये ખૂબ दुआयें ली करें, कअबा के सामने नइली नमाजें पढ़ें, बडी मुबारक जगह है, जहां अंबिया के कदम पड़े हैं, नबीयों के सरदार के कदम पड़े हैं, अल्लाहवालों के कदम पड़े हैं, उजरे अस्वद जन्नत का पत्थर है उसको बोसा दें, मुलतजिम से थिमटकर रो रोकर दुआयें करें, हतीम जो पान-ये-कअबा का हिस्सा है उसमें नमाज पढ़ें, मोहब्बत व अजमत से अल्लाह के घर को सिई टैपते डी रहें, क्या पता ईन मुबारक जगहों पर डाजरी की सआदत मयस्सर आती है या नहीं, कितने लोग उम्मीदें



लेकर दुन्या से यले गये और मोका नहीं मिल सका और  
अल्लाह ने आपको सुनेहरी मोका दिया है, इस लिये  
इसको ખૂબ गनीमत समझें और अल्लाह की रहमतों  
और उसकी नेअमतों को जितना लूट सकें लूटें.

मजे लूटो कलीम अब बन पडी है

बडी विंयी जगह किस्मत लडी है

## नकश-अे-उज व उमरह

जैल में अेक नकशा पेश किया जाता है, जिसमें उमरह  
और उज के कामों की निशानदिली के साथ इसकी वजाहत  
है के उमरह और उज में इराईज कितने हैं और  
वाजिभात कितने हैं.

## उमरह का नकशा

उमरह में यार काम करना है : २/ इर्ज और २/ वाजिभ.

१	नियत और तल्लियह के साथ अेहराम	इर्ज
२	रमल और ईजतिबाअ के साथ तवाइ	इर्ज
३	सइ और मरवह के दरम्यान सअी	वाजिभ
४	सर मुंडवाना या कतरवाना	वाजिभ

७४ में पांच दिनों में ८/ काम करने हैं : ३/ इर्ज और  
६/ वाजिब

७४ के तीन इर्ज ये हैं :

(१) नियत तख्मियत के साथ अहराम (२) ८/ जिल  
खिज्जा को जवाल से गुरुब तक थोड़ी देर अरफ़ात में वुक्कू  
(ठहरना) (३) तवाफ़े जियारत

७४ के छे वाजिब ये हैं :

(१) मुजदलिफ़ा में वुक्कू (२) सफ़ा व मरवत के दरम्यान  
सभी (३) शयतानों को कंकरियां मारना (४) कुर्बानी करना  
(५) सर के बाल मुंडवाना या कतरवाना (६) तवाफ़े विदाअ

७४ का नक़शा

७४ का पहला दिन ८/ जिल खिज्जा	अहराम बांधकर मिना पड़ोयना है. मिना में जोहर, अहर, मगरिब, ईशा और ८/ की इर्जर.	इर्ज
७४ का दूसरा दिन ८/ जिल खिज्जा	आज सूरज निकलने के बाद अरफ़ात में जाकर ठहरना है. ईशा के वक्त में मगरिब व ईशा अके साथ मुजदलिफ़ा में पढ़ना.	इर्ज

<p>હજ કા તીસરા દિન ૧૦/ જિલ હિજજા</p>	<p>આજ ફજર સે સૂરજ નિકલને તક થોડી દેર મુઝદલિફા મેં ઠેહરના હે, ફિર મિના મેં જાકર બડે શયતાન કો સાત કંકરિયાં મારના હે, ફિર કુર્બાની કરના હે. ફિર સારે સર કે બાલ મુંડવાના હે યા કતરવાના. ફિર તવાફે ઝિયારત કરના હે. ઈસ તવાફે કે સાથ સચી ભી કરના હે.</p>	<p>વાજિબ વાજિબ વાજિબ વાજિબ વાજિબ ફર્જ</p>
<p>હજ કા ચોથા દિન ૧૧/ જિલ હિજજા</p>	<p>તીનો જમરાત કી રમી કરના હે, કુર્બાની, હલક ઓર તવાફે ઝિયારત અગર દસ કો ન કિયા હો.</p>	<p>વાજિબ</p>
<p>હજ કા પાંચવાં દિન ૧૨/ જિલ હિજજા</p>	<p>આજભી તીનો જમરાત કી રમી કરના હે, કુર્બાની, હલક ઓર તવાફે ઝિયારત અગર પેહલે દો દિન ન હુવા હો તો.</p>	<p>વાજિબ</p>

## ज़ियारते मदीना मुनव्वरा

उज के बाद सबसे अज़ल और सबसे ज़दी सआदत सय्यदुल अंबिया रहुमतुल्लिल आलमीन ताज़दारे मदीना रसूले मकबूल ﷺ के रोज़-अे-अकदस की ज़ियारत हे. रसूलुल्लाह ﷺ की अज़मत व मोडब्बत वो थीज़ हे जिसके बगैर ईमान ही मुकम्मल नहीं डोता, ईसका तकाज़ा ईमानवाले को क़ितरी तौर पर ल्भी डोना याडिये के दियारे अकदस में पडोंयने के बाद रोज़-अे-अकदस की ज़ियारत के बगैर वापस न डो. और ईस पर मज़ीद ये के रोज़-अे-अकदस के सामने डाज़री और सामने डाज़िर डोकर दुइद व सलाम के वो अज़ीमुश्शान ईन्आमात और समरात व डरक़ात ज़े दूर से दुइद व सलाम पढने से डासिल नहीं डो सकते.

रसूलुल्लाह ﷺ ने इरमाया : “जिसने उज किया फिर मेरी क़ब्र की ज़ियारत मेरी वज़ात के बाद की तो गोया उसने मेरी ज़िंदगी में मेरी ज़ियारत की.” (मिशक़ात)

अेक डदीस में ईरशादे नब्वी हे : “जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके वास्ते मेरी शज़ाअत वाज़िब

होगी.”

(सुब्ह)

अेक उदीस में हुजूर ﷺ का ँरशाद हे : “जिसने  
बयतुल्वाह का उज किया और मेरी जियारत न की तो  
उसने मुज पर जुल्म किया.” (शहू बुबाब)

## दियारे उबीब का सकर

जब मदीना तय्यिबह की तरफ यलें तो रास्ते में  
कसरत से दुरद शरीफ पढते रहें और मोहब्बते नबी को  
पैदा करने के लिये अगर आपको जौक हो नअतियह  
अशआर ली ખूब पढें.

ये सकर आपका बस से होगा, बसें और गाडियां यंद  
घंटों में आपको मदीना पड़ोंया देगी, आपको रास्ते में  
कहीं गुस्ल करने या लिबास बदलने का मोका नहीं  
मिलेगा, ँस लिये मुनासिब हे के आप मदीना की  
रवानगी से पहले गुस्ल करलें, मदीना तय्यिबह की  
हाजरी की नियत से अखे कपडे बदल लें, ખुशू  
लगाएं, रास्ते में ખूब जौक व शौक के साथ दुरद व  
सलाम पढते रहें.

हरमैन शरीफ़ेन के कियाम में भास कर मदीना मुनव्वरह में पांय यीजों का भूष अछतेमाम करें ताके ये यीजें हमेशा के लिये आदत बन जायें.

- (१) गुनाहों से बचना (२) दुइद शरीफ़ की कसरत
- (३) एतेबाअे सुन्नत (४) कुर्आन की तिलावत
- (५) दीन की दअवत

## मदीना तय्यिबह में दाभला

जब मदीना तय्यिबह की एमारतें और दरभ्त नजर आने लगें तो जौक व शौक को बेदार करके भूष दुइद शरीफ़ पढ़ें. भुशूअ व भुजूअ और तवाजुअ की कैफ़ियत पैदा करें. जब मदीना मुनव्वरह से करीब होने लगें तो अल्लाह तआला से दूआ करें के :

“अै अल्लाह ! ये तेरे उबीब का शहर हे और तेरे उबीब ने तेरे हुकम से एसको हरम करार दिया हे, एसमें मेरे दाभले और मेरी छाजरी को हर क़िस्म के अजाब से अमान का ज़रिआ बना.”

और मदीना में दाभले के वक्त अल्लाह की तरफ़

मुतवज्जो डोकर भुशूअ व भुजूअ के साथ पढ़ें :

”بِسْمِ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

رَبِّ أَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ

وَأَجْعَلْنِيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا (غنية: २०३)

“अै परवरद्विगार ! मुजे सडीह तौर पर द्दाम्बिल कीजिअे और मुजे सडीह तौर पर निकालिअे और अपनी तरफ से मेरे लिये मददगार बना दीजिअे.”

इर यलते यलते दुआ करें :

“अै अल्लाह जिस करम से तूने मुजे ये दिन दिभाया हे के मैं तेरे लबील के मडबूब शहर में द्दाम्बिल हो रहा हूं, ईसी करम से तू मुजे यहां की पास बरकतें अता इरमा और उन तमाम बातों से मेरी डिइअत इरमा जो इन बरकतों से मडउमी का जरिआ हों.”

**मस्जिद नब्वी में लाजरी**

मदीना मुनव्वरह में भी बसें आपकी आपकी बिदिंग तक पड़ोया देगी. सामान तरतीब से रफकर

ઝરિયાત સે ફારિગ હોકર અગર દાખલે સે પેહલે ગુસ્લ  
 ઓર કપડે બદલને કા મોકા ન મિલા હો તો અબ ગુસ્લ  
 યા વુઝૂ કરકે કપડે બદલ કર સબસે પેહલે મસ્જિદે નખ્વી  
 મેં હાઝિર હોં. મસ્જિદ મેં દાહને પૈર સે દાખિલ હોતે હુએ  
 યે દુઆ પઢેં :

”بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ“

(غنية المناسك: ૧૮)

સબસે પેહલે મસ્જિદ કે ઉસ હિસ્સે મેં જાએ જો  
 રોઝ-એ-અકદસ ઓર મિમ્બર શરીફ કે દરમ્યાન હે,  
 જિસકે મુતઅલ્લિક હુઝૂર ﷺ ને **”رَوْضَةٌ مِّن رِّيَاضِ“**  
**”الْجَنَّةِ“** ફરમાયા હે, યાની **”યે જન્નત કી કિયારયોં મેં**  
**સે એક કિયારી હે.”** રિયાઝુલ જન્નહ કી પેહયાન કે લિયે  
 યહાં સુફેદ કાલીન બિછા હુવા હે, યહાં પહોંચકર દો  
 રકાત તહિય્યતુલ મસ્જિદ અદા કરેં, તહિય્યતુલ મસ્જિદકે  
 બાદ અલ્લાહ તઆલાકા બહોત શુક અદા કરેં, આપ બડી  
 ઊંચી જગહ પહોંચે હેં જિતના શુક અદા કરેં કમ હે.



ઉલમાને લિખા હે કે ઈસ મોકે પર સજદ-એ-શુક ભી કરલેં, ફિર અલ્લાહ તઆલા સે ખૂબ દુઆ કરેં.

મસ્જિદે નબ્વી કે સુતૂન

ઔર રિયાઝુલ જન્નહ

રિયાઝુલ જન્નહ કી પેહચાન કે લિયે યહાં સુફૈદ સંગે મરમર કે છો સુતૂન હેં, જિનકો ઉસ્તુવાનાત કહા જાતા હે, કબૂલિયતે દુઆ કી ખાસ જગહ હે. પેહલા સુતૂન મેહરાબ સે મુતસિલ હે જિસકો ઉસ્તુવાન-એ-હન્નાનહ યા મુખલિકા કેહતે હેં. ઈસ સુતૂન સે ટેક લગાકર હુઝૂર صلی اللہ علیہ وسلم ખુત્બા દિયા કરતે થે.

દૂસરા સુતૂન મેહરાબ કી બાઝી જાનિબ હે. જિસકો ઉસ્તુવાન-એ-આઈશા કેહતે હેં. ઈસ જગહ કે બારે મેં હુઝૂર صلی اللہ علیہ وسلم કા ઈરશાદ હે : “અગર મેં બતાદૂં તો લોગ વહાં નમાઝ કે લિયે કુરાઅંદાઝી કરને લગેંગે, ક્યૂં કે યે જન્નત કા એક ટુકડા હે.” ઈસ જગહ કી નિશાનદિહી હઝરત આઈશા رضی اللہ عنہا ને કી થી ઈસ લિયે ઈસ સુતૂન કો ઉસ્તુવાન-એ-આઈશા કેહતે હેં.

उस्तुवान-अे-आँशा की ढाअीं ज्ञानिढ उस्तुवान-अे-अढू लुढाढड डे. ईस जगड डरत अढू लुढाढड सडलढी ने अेक गलती ढर ढुड को ढजूर के सुतून से ढांढ लिया थल, ईर उनकी तौढल कढूल डोने ढर ढुड डुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने आढको ढोला थल.

रुज-अे-अकडस की जलढी में तीन सुतून डें, आढे जलढी के ढलडर रलललुल जन्नड और आढे जलढी के अंडर के डलस्से में डें.

ढेडलल उस्तुवान-अे-सरीर डे. यडलं आप صلی اللہ علیہ وسلم डललते अे'तेकलडमें यडलई ढर अे'तेकलड ईरढलते थे.

ईसके करीढ डूसरल उस्तुवान-अे-डरस डे. यडलं सडलढल रलत को आप صلی اللہ علیہ وسلم के डुजर-अे-ढुकडस की नलगरलनी करते थे.

और ईससे करीढ उस्तुवान-अे-वुईड डे. यडलं आप صلی اللہ علیہ وسلم ढैरून से आनेवलुं के सलथ ढलतथीत करते, ढुआडडल करते और डीन सलढललल करते.

ये छे सुतून और रललललुल जन्नड कल ढूरल डलस्सल कढूललललते डुआ के ललले ढलस डे, और यडलं नढलं अडल

करना ज़ियादा सवाब का बाअिस है.

## रोज़-अे-अकदस पर दुर्द व सलाम

तखियतुल मस्जिद और दुआ से शरिग होकर पूरे अदब और होश के साथ रोज़-अे-अकदस पर आअें और निहायत अदब के साथ ये समजते हुअे के में भिदमते अकदस में हाजिर हूं और हुजूर ﷺ मेरी बात बनईसे नईस सुन रहे हैं, हल्की आवाज से सलाम अर्ज करें.

जालीमें पीतल के तीन हल्के बने हुअे हैं, उनमें जो बडा है वो हुजूर अकदस ﷺ के येहर-अे-अनवर के सामने है और दूसरे के बराबर में हजरत अबूबक رضي الله عنه हैं और तीसरे के बराबर में हजरत उमरे इरक رضي الله عنه हैं.

ये ध्यान रभें के भीड यहां ज़ियादा होती है तो किसी को तकलीफ़ न पडोये.

सलाम के बारे में जौक मुप्तलिफ़ हैं, बाज लोग मुप्तसर सलाम पसंद करते हैं, उनके लिये यही अख़्श है के मुप्तसर सलाम पेश करें. सलफ़ का आम मजाक यही रहा है. और जो अरबी से वाकिफ़ नहीं हैं उनके लिये

यही बेहतर है के मुफ्तसर सलाम अर्ज करें, और भीउ  
की वजह से मौका भी लम्बे सलाम का नहीं रहेता.

मुफ्तसर तौर पर यूँ सलाम अर्ज करें :

” الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ الصَّلَاةُ  
وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ. الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ  
عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا  
سَيِّدَ وُلْدِ آدَمَ “  
(فتح القدير: १११/३)

नोट : -अगर कोई लम्बा सलाम अर्ज करना चाहे तो  
किताब के अर्शीर में लिखा गया है वहाँ देखले.

सलाम अर्ज करने के बाद छुट्टर ﷺ से शफ़ात की  
दरखास्त करें के “या रसूलल्लाह ! मैं आपके सामने  
अपने गुनाहों से तौबा करता हूँ और माफ़ी मांगता हूँ,  
आपभी मेरे लिये ईस्तिग़्फ़ार इरमाअें और अल्लाह के  
दरबार में आपका वसीला चाहता हूँ इस बात पर के  
मुसलमान होने की हालत में आपकी सुन्नत व मिल्लत  
पर मउं.”

## दूसरों की तरफ़ से रोज़-अे-अकदस पर सलाम

ईसके बाद जिन दोस्तोंने बुजुर्गोंने और अजीज़ोंने आपसे सलाम की इरमाईश की हैं, और बाज़ से आपने वादा भी कर लिया है, उनका सलाम हुज़ूर صلى الله عليه وسلم को पछोंयाअें, नाम याद हों तो नाम लेकर, या सबकी तरफ़ से ईस तरह कहेँ के : “या रसूलल्लाह ! आप पर ईमान रबनेवाले और आपका नाम लेनेवाले यंद बुजुर्गों और अजीज़ोंने सलाम अर्ज़ किया है, आप उनका सलाम कबूल इरमाअें और उनके लिये भी अपने रब से मगफ़िरत मांगें, वो भी आपकी शफ़अत के तलबगार और उम्मीदवार हैं.” (ये बात ध्यान में रहे के हुज़ूर صلى الله عليه وسلم की शफ़अत अल्लाह की ईजाज़त से ही होगी)

### उज़रत अबूबक़ सिदीक रद़ि. पर सलाम

हुज़ूर صلى الله عليه وسلم पर सलाम से इरिग़ डोकर अेक हाथ के बक़द़ दाअीं तरफ़ उटकर दूसरे उल्ले के पास जाअें और उज़रत अबूबक़ सिदीक رضي الله عنه पर ईस तरह सलाम पेश करें :

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ وَثَانِيَهُ فِي  
الْغَارِ وَرَفِيقَهُ فِي الْأَسْفَارِ وَآمِينَهُ عَلَى الْأَسْرَارِ أَبَا  
بَكْرٍ الصِّدِّيقِ جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا“

(فتح القدير: ٨١/٣)

तर्जमा : “आप पर सलाम हो औ अल्लाह के रसूल  
के भलीझा, गारमें उनके साथी, सफ़रों में उनके रफ़ीक,  
उनके राजों के अभीन अबूबक़ सिदीक आप पर सलाम  
हो, अल्लाह तआला आपको उम्मतें मुहम्मदियह की  
तरफ़ से जज़ा-अ-भैर अता इरमाअे.”

इर जिन लोगोंने सलाम कडा हो उनका सलाम  
पहोंयाहें.

उजरत उमरें इरक़ रदि. पर सलाम

उजरत अबूबक़ رضي الله عنه पर सलाम से इरिग होकर अक  
हाथ दाअी तरफ़ उटकर तीसरे उलके के पास जाअें और  
उजरत उमर رضي الله عنه को धन अल्लाज में सलाम अर्ज़ करें :

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ الْفَارُوقَ“

الَّذِي أَعَزَّ اللَّهُ بِهِ الْإِسْلَامَ إِمَامَ الْمُسْلِمِينَ مَرْضِيًّا  
 حَيًّا مَيِّتًا جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُّحَمَّدٍ خَيْرًا  
 (غزوة الحديد: ٣٨)

तर्जमा : “अै अभीरल मुअमिनीन उमरे इरुक !  
 आप पर सलाम हो, जिनके जरिअे अल्लाह ने इस्लाम  
 को गल्बा अता इरमाया, अै मुसलमानों के इमाम !  
 जिंदगी और मौत में अल्लाह के पसंदीदा, अल्लाह  
 तआला आपको उम्मते मुहम्मदियह की तरफ से जजा-  
 अे-भैर अता इरमाअे.”

किर जिन लोगोंने सलाम कडा हो उनका सलाम  
 पडोंयाहें. उसके बाद रियाजुल जन्नह में जाकर दो रकत  
 पढकर भूष दुआ मांगें.

मदीना के कियाम को गनीमत समजें, जहांतक हो सके  
 जियादा वक्त मस्जिद नब्वी में गुजरें और दुर्इ शरीफ  
 कसरत से पढते रहें, वक्त जायेअ न हो इसका प्याल रभें.

## जियारते जन्नतुल बकीअ

मदीना तथियबह में मस्जिद शरीफ और रोज-अे-

अकदस के बाद सभसे अहम मकाम वहां का कदीम  
 कब्रस्तान जन्नतुल बकीअ है. जो दरमे नब्वी से बिल्कुल  
 मिला हुआ है. कैसा भुश नसीब ये जन्नत का टुकड़ा है.  
 भुद रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने कितने मारनेवालों को अपने  
 हाथ से इसमें दफन किया है, आप صلى الله عليه وسلم की अकसर  
 अजवाजे मुतइहरात, आपकी साहबजादियां और  
 अहलेबैत के बहोत से मुमताज अइराद और कितने  
 जलीलुलकदर सहाबा, फिर बेशुमार ताबिअीन व तब्ये  
 ताबिअीन और बाद में अनगिनत अईम्म-अे-ईजाम  
 और अवलिया-अे-किराम इसमें आराम कर रहे हैं,  
 केहनेवाले ने सय कहा :

दफन लोगा न कहीं ऐसा भजाना हरगिज

जन्नतुल बकीअ में दाबिल होते ही दायीं तरफ  
 उजरते इतिमा, उजरत अब्बास, उजरत इसन, उजरत  
 हुसैन, उजरत जयनुलआबिदीन का सर मुबारक, फिर  
 कुछ इसले पर हुजूर صلى الله عليه وسلم की तीन बेटियां उजरत  
 जयनब, उजरत रुकय्या और उजरत उम्मे कुल्सूम, फिर  
 हुजूर صلى الله عليه وسلم की अजवाजे मुतइहरात (बीवियां)



ઉમ્મહાતુલ મુઅમિનાત હઝરત આઈશા, હઝરત  
 સૌદાઅ, હઝરત ઝયનબ બિન્તે જહશ, હઝરત ઝયાનબ  
 બિન્તે ખુઝયમા, હઝરત ઉમ્મે સલમા, હઝરત હફ્સા,  
 હઝરત ઉમ્મે હબીબા, હઝરત જુવયરિયહ, હુઝૂર ﷺ  
 કી સબસે પેહલી બીવી હઝરત ખદીજા મક્કા મેં જન્નતુલ  
 મઅલા મેં મદફૂન હૈં ઓર દૂસરી બીવી હઝરત મયમૂના  
 મકામે સરીફ મેં મદફૂન હૈં બાકી સબ બીવિયાં જન્નતુલ  
 બકીઅ મેં હૈં. (રદિયલ્લાહુ અન્હુન અજમઈન)

ફિર ઉનકે બાદ હઝરત અબ્દુલ્લાહ બિન જઅફર,  
 હઝરત અકીલ બિન અબી તાલિબ, ફિર થોડા આગે  
 બઢકર બાઆં તરફ હુઝૂર ﷺ કે સાહબઝાદે હઝરત  
 ઈબ્રાહીમ, ફિર થોડે આગે બઢેં તો સય્યિદુના ઉસ્માનગની  
 કા મઝાર હે, જન્નતુલ બકીઅ મેં સબસે ઊંચા ઓર બડા  
 મકામ હઝરત ઉસ્માન કા હે, ફિર બાઆં તરપ હઝરત  
 હલીમા સઅદિયહ કા હે, જો હુઝૂર ﷺ કી રઝાઆી માં  
 હૈં, ફિર ઉસકી દાઆં જાનિબ હઝરત અબૂ સઈદ ખુદરી,  
 હઝરત અલી કી વાલિદહ હઝરત ફાતિમા, ફિર દાહની  
 તરફ હુઝૂર ﷺ કી ફૂફિયાં હઝરત સફિય્યહ, હઝરત

आतिकल, उजरत उम्मे इजल, ऐसी मुबारक उस्तियां  
 बकीअ में आराम इरमा रडी हैं. (रदियल्लाहु अन्दुम  
 अजमईन)

## मस्जिदे नब्वी में नमाज का सवाब

मस्जिदे नब्वी में बाजमाअत नमाज पढने का बडोत  
 जियादा सवाब हे. अक उदीस में हुजूर صلى الله عليه وسلم का ईरशाह  
 हे : “मेरी ईस मस्जिद में अक नमाज का सवाब अक  
 उजार नमाजों से बेडतर हे, सिवाअे मस्जिदे उराम के  
 क्यूं के मस्जिदे उराममें बाजमाअत नमाज पढनेका  
 सवाब दूसरी मस्जिदों के मुकाबलेमें अक लाभ नमाजों  
 से अइजल हे. (तरगीब / तरडीब)

और अक रिवायत में मस्जिदे नब्वी की अक नमाज  
 का सवाब पयास उजार नमाजों के बराबर बताया गया  
 हे. (ईब्नेमाज्जा)

## मस्जिदे नब्वी में यालीस नमाजें

मदीना मुनव्वरह के कयाम में अइजल तरीन अमल  
 ये हे के सरकारे दौ आलम صلى الله عليه وسلم पर दुइद शरीफ़ कसरत

से पढा जाये और नमाजों को बाजमाअत मःजिदे नब्वी में अदा किया जाये. मस्जिदे नब्वी में यालीस नमाजों की बडी इजीवत है.

उत्तरत अनस ﷺ से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरमाया : “जिसने मेरी मस्जिद में यालीस नमाजें पढीं, उनमें से अेक भी शैत न हुई हो तो उसके लिये अल्लाह तआला की तरई से तीन किस्म की बराअत का अेलान है, यानी तीन किस्म की मुसीबतों से लिइअत का अेलान है.

(१) जहन्नम से लिइअत. (२) अजाबे ईलाही से लिइअत. (३) निइक से लिइअत. (मुस्नदे अहमद)

## मदीना तय्यिबह से वापसी

मदीना तय्यिबह का कयाम जब पूरा हो जाये और वापसी का वक्त आ जाये तो यकीनन वो वक्त ईमान वाले के लिये अेक सानिडे से कम न होग़ा.

उस दिन आप पास अेडतेमाम से इप्सती ही के लिये रोज-अे-अकदस पर हाजिर हों, पेडले दो रकात रियाजुल जन्नह में पढकर ખૂબ हुआ करें, अपनी

दुआओं में ये ज़रूर करें के “अै अल्लाह ! तेरे महबूब रसूल और उनकी ईस मस्जिद और उनके ईस शहर और शहरवालों के छुक्क व आदाब की अदायगी में जो कोताहियां मुजसे छुई उनको अपने पास करम से माफ़ इरमा और मेरी ये छाजरी आपरी छाजरी न हो, ईसके बाद भी मुजे यहां की छाजरी की तौफ़ीक दे, कयामत के दिन अपने रसूल की शफ़ाअत और आपका कुर्ब नसीब इरमा.”

ईसके बाद रोज-अे-अकदस पर छाजिर हों, सलात व सलाम अर्ज करें, ईस्तिग़ा़र व शफ़ाअत की इ़र दरभास्त करें और ईसकी कोशिश करें के इ़प्सत के कुछ आंसू निकल आएं के ये कबूलियत की अलामात में से हें, इ़र रोना न आये तो रोनेवालों की सी सूरत बनाएं और यलते वक्त हो सके तो कुछ सदका करें और वापसी में सइर के आदाब की रिआयत के साथ वापस हों.

उठके साकिब गो यला आया हूं उसकी बज़्म से टिल की तस्कीन का मगर सामान उसी मेडफ़िल में हें

**उज्जे बदल के इज़ाईल व मसाईल**

उजरत ज़ाबिर  से रिवायत हें के छुज़ूरे अकरम

ﷺ ने ईरशाह फरमाया : “अल्लाह तआला (उज्जे  
 बदल में) अक उज की वजह से तीन आदमियों को  
 जन्नत में दाखिल फरमाते हैं, अक भरदूम (जिस की तरफ  
 से उज्जे बदल किया जा रहा है) दूसरा उज करनेवाला,  
 तीसरा वो शप्स जो उज को भेज रहा है. (तरगीब / तरहीब)

अक औरत अल्लाह के नबी के पास आयी और कहा  
 के अै अल्लाह के नबी ! मेरी मां मर गई और उसने उज  
 नहीं किया, तो क्या मैं उसकी तरफसे उज कर दूं ? आपने  
 फरमाया : “हां ! उसकी तरफ से उज करलो.” (मुस्लिम)

अबू रजीन केहते हैं के मैं हुजूर ﷺ के पास आया  
 और अर्ज किया के अै अल्लाह के नबी ! मेरे वालिद  
 बहोत बुढे हैं, उज व उमरह करने की उनमें ताकत नहीं  
 है, वो सफर भी नहीं कर सकते, तो आप ﷺ ने  
 ईरशाह फरमाया : “तुम अपने बाप की तरफ से उज व  
 उमरह करलो.” (तिर्मिजी व मुस्लिम)

## ईबादत की तीन किसमें हैं

ईबादतें तीन तरह की हैं :

(१) माली ईबादत जैसे : जकात, सदक-अ-कित्र, ईनमें

दूसरे को नाएँब बनाकर अढा करा देना जाँरु डे.

(२) बदनी ँबादत जैसे : नमाज, रोजड, ँनमें किसी को नाएँब नहीं बनाया जा सकता, यानी कोँर किसी की तरफ से नमाज नहीं पढ सकता रोजा नहीं रभ सकता.

(३) वो ँबादत जो बदनी भी डे माली भी डे जैसे : डज, ँसमें नाएँब उस वक्त बनाया जा सकता डे जब भुद वो शप्स जिस पर डज इरु डे अढा करने की कुदरत न रभता डो, अगर भुद डज करनेकी ताकत रभता डे तो दूसरे से नहीं करवा सकता.

अलबत्ता नईल डज और नईल उमरड करवा सकता डे डर सूरत में, याडे करानेवाला कुदरत रभता डो या न रभता डो.

मसअला : जिस शप्स पर डज इरु डो गया और उसको डज करने का वक्त भी मिला और कुदरत भी थी, मगर किसी वजड से नहीं किया, इर वो डज करने से मा'जूर और आजिड डो गया और आँरुढा भी वो डज कर सके अैसी कुदरत डोने की बजाडिर कोँर उम्मीद भी

नहीं रही. मसलन : कोई ऐसा बीमार हो गया के जिससे शिक्षा की उम्मीद नहीं, या नाबीना या लंगडा या अपाहिज हो गया, या बुढापे की वजह से ऐसा कमजोर हो गया के भुद सवारी पर सवार नहीं हो सकता, तो उसके जिम्मे ईर्ज है के वो अपनी तरफ से किसी दूसरे को भेज कर उज्जे भदल भुद कराटे या वसियत करटे के मेरे मरने के बाद मेरी तरफ से मेरे माल से उज्जे भदल करा टेना. (अडकामे उज)

मस्अला : अगर ऐसे मा'जूर आदमी ने अपना ईर्ज उज किसी को भेज कर अपनी जिंदगी में करवाया, बाद में ईत्तेफ़ाक से वो तंदुरस्त और अख़्त हो गया तो अब भुद अदा करना उस पर ईर्ज है, और पेडला जो उज्जे भदल करवाया था वो नईली हो जायेगा. (अयज़न)

मस्अला : उसी तरह अगर औरत के पास उज कर सके उतना रुपिया है, मगर साथ जाने के लिये कोई महरम नहीं मिलता या मिलता तो है मगर वो अपना धर्य नहीं कर सकता, उसके पास माल नहीं है और औरत के पास भी ईतनी गुंजाईश नहीं है के वो उसका

ભી ખર્ચ બરદાશત કરે, તો ઉસ ઓરત પર ઝરૂરી હે કે  
અપની તરફ સે કિસી કો ભેજ કર હજજે બદલ કરાએ યા  
વસિયત કરે. (અયઝન)

મસ્અલા : બેહતર યે હે કે હજજે બદલ એસે આદમી  
સે કરાયા જાએ જો અપના હજ કર ચુકા હો, અગર કિસી  
એસે આદમી સે હજજે બદલ કરાયા જિસને અભી તક  
હજ નહીં કિયા હે ઓર ઉસ પર ફર્ઝ ભી નહીં તો હજજે  
બદલ હો જાએગા મગર ખિલાફે અવલા હોગા.

અગર ઉસકે ઝિમ્મે અપના હજ ફર્ઝ હોને કે બાવજૂદ  
હજ નહીં કિયા તો ઉસકે લિયે દૂસરે કે વાસ્તે હજજે બદલ  
પર જાના જાઈઝ નહીં હે, મકરૂહે તહરીમી ઓર ગુનાહ  
હે, મગર હજજે બદલ કરાનેવાલે કા હજ ફિર ભી અદા  
હો જાએગા. (અહકામે હજ)

## મકામાતે કબૂલિયતે દુઆ

યૂં તો મક્કા મુકર્મહ મેં હર જગહ દુઆ કબૂલ હોતી  
હે, લેકિન બાઝ ખાસ ખાસ મકામાત પર ખુસૂસિયત સે  
દુઆ કબૂલ હોતી હે, ઈસ લિયે ઉન મકામાત પર ખાસ  
તૌર સે દુઆ માંગની યાહિયે, વો મકામાત યે હૈં :



- (૧) બયતુલ્લાહ પર પેહલી નિગાહ પડને કે વક્ત.
- (૨) મતાફ યાની તવાફ કરને કી જગહ.
- (૩) મુલતઝિમ યાની બયતુલ્લાહ કી દીવાર કા હિસ્સા.
- (૪) મીઝાબે રહમત યાની બયતુલ્લાહ કે પરનાલે કે નીચે.
- (૫) બયતુલ્લાહ કે અંદર.
- (૬) હતીમ કે અંદર. (જો બયતુલ્લાહ કા હિસ્સા હે)
- (૭) હજરે અસ્વદ્દ ઓર રુકને યમાની કે દરમ્યાન.
- (૮) મુસ્તજાર યાની રુકને યમાની ઓર 1-એ-કઅબા કે ઈસ બંદ દરવાઝે કે દરમ્યાન જો મૌજૂદહ દરવાઝે કી પુશ્ત પર યાની ગર્બી જાનિબ થા.
- (૯) ઝમઝમ કે કૂવેં કે પાસ.
- (૧૦) મકામે ઈબ્રાહીમ કે પીછે.
- (૧૧) સફા પર.
- (૧૨) મરવહ પર.
- (૧૩) મસ્આ યાની સઘી કરને કી જગહ.
- (૧૪) મીલૈન અખઝરૈન યાની દો હરે સુતૂન કે દરમ્યાન.
- (૧૫) અરફાત મેં, ખાસકર જબલે રહમત કે પાસ.

(૧૬) મુઝદલિફા મેં, ખાસકર મશઅરે હરામ કે પાસ.

(૧૭) મિના મેં.

(૧૮) જમરાત કે પાસ.

ઈન સબ જગહોં પર ખુસૂસિયત સે દુઆએં કબૂલ હોતી હેં.

## મક્કા કે તારીખી વ મુતબરક મકામાત

(૧) જન્નતુલ મઅલા : મક્કા મુકર્રમહ કા કબ્રસ્તાન હે, બકીઅ યાની મદીના કે કબ્રસ્તાન કે સિવા બાકી તમામ કબ્રસ્તાન સ અફઝલ હે, ઈસકી ઝિયારત ભી મુસ્તહબ હે.

(૨) જબલે અબૂ કુબૈસ : મસ્જિદે હરામ સે બાહર સફા સે મુતસિલ એક પહાડ હે, જિસ પહાડ પર ચઢકર હુઝૂર ﷺ ને કુરૈશ કો ઈસ્લામ કી દઅવત દી થી, યહાં બનૂ હાશિમ આબાદ થે, ઔર ઈસીમેં વો ઘાટી થી જિસમેં ત્રીન સાલ તક હુઝૂર ﷺ કે સાથ બનૂ હાશિમ કા બાયકાટ હુવા થા, ઈસ જગહ આજ શાહી મહલ બના હુવા હે.

(उ) भवल्लिदुन्नभी : वो जगह जहां हुजूर صلى الله عليه وسلم की पैदाईश हुई, सड़ा से मोअल्लात जानेवाले रास्ते पर सीधी जानिब शिअबे बनी आमिर में सडक के किनारे वाकेअ हे, अब यहां अेक लाईब्रेरी काईम हे.

(ख) गारे हिरा : जबले नूर में वो गार हे जहां हुजूर صلى الله عليه وسلم नुबुव्वत मिलने से पेहले कयाम इरमाते थे और ईसी गार में पेहली वही नाजिल हुई थी, ताईफ़ के रास्ते पर मक्का से तकरीबन ढेढ भील के इंसले पर हे.

(ग) उजरत भदीजतुल कुबरा रहि. का मकान : जब आप सड़ा से भरवह की तरफ़ आएं तो आपके सीधी जानिब की सडक पर अेक बाजार हे जिसको भवल्लिदे सय्यिदह इतिमा कहा जाता हे, ईसी बाजारमें अेक गली हे जिसमें दोनों जानिब सोने

यांटीकी दुकानें हैं (ये सब कुछ अब तो भत्म कर दिया गया, ईसके निशानात भी बाकी नहीं हैं) वहीं उजरत भदीजा رضي الله عنها का मकान था, जिसमें शादी के बाद आप صلى الله عليه وسلم ने कयाम इरमाया था

और पेहली वही के बाद आप ﷺ इसी घर में आये थे और उजरत ખદીજا رضی اللہ عنہا ने तसल्ली दीथी , इसी मकानमें उजरत इतिमा और दीगर साहबजादियां और साहबजादे कासिम, अब्दुल्लाह पैदा हुअे थे.

(६) उजरत अबूभक رضي الله عنه का मकान : महल्ला मुसईलल के लुकाक सवागयन नामी गली में उजरत अबूभक رضي الله عنه का मकान था, जहां अब मस्जिदे अबूभक बनी हुई हे, डिजरत की रातमें आप ﷺ इसी मकान में तशरीफ ले गअे थे.

(७) गारे सौर : डिजरत के सइर में आप ﷺ ने तीन रोज इसी गार में कयाम किया था, ये गार जबले सौर में वाकेअ हे, ये पहाड मक्का से तकरीबन ६/ भील के इस्ले पर हे.

(८) उजरत अली رضي الله عنه का मकान : महल्ला सिवाकुल्लयल में आप رضي الله عنه के मकामे पैदाईश से जहां लाईब्रेरी हे योथा मकान उजरत अली رضي الله عنه का था.

(९) उजरत उमजल رضي الله عنه का मकान : मक्का में जहां

મસ્જિદે હમઝહ હે, વહીં પર હઝરત હમઝહ ﷺ કા મકાન થા, ઈસી મકાન મેં હઝરત હમઝહ કી પૈદાઈશ હુઈ થી.

(૧૦) બનૂ હાશિમ કા મોહલ્લા : જબલે અબૂ કુબૈસકે દામન મેં આપ ﷺ કી જાએ-પૈદાઈશ કે મશિર કી ગલી મેં જહાં આજ કલ હિફઝે કુર્આન કા મદ્રસા હે, ઈસી જગહ પર બનૂ હાશિમ કા મોહલ્લા આબાદ થા, યહાં “શારિએ બની હાશિમ” કે નામ સે એક સડક બની હુઈ હે, યહીં પર કભી કુરૈશ રહા કરતે થે.

(૧૧) દારે અરકમ : હઝરત અરકમ કા વો મકાન જહાં ઈસ્લામ કે ઈબ્તિદાઅી ઝમાને મેં મુસલમાન હુઝૂર ﷺ કે સાથ છુપકર નમાઝ પઢા કરતે થે ઓર કુર્આન ઓર દીન કો સીખા કરતે થે, અબ યે મકાન સઅી કી જગહ પર દરવાઝે મેં તબદીલ હો ગયા હે, ઈસકા નામ હે “બાબે અરકમ” ઈસી જગહ હઝરત ઉમર ﷺ ઈસ્લામ લાએ થે, મુસ્અબ ઈબ્ને ઉમૈર ભી ઈસી જગહ આકર મુસલમાન હુએ થે.

(૧૨) મસ્જિદે જિન : તાઈફ સે વાપસી પર મક્કા સે

करीब आप صلى الله عليه وسلم ने नमाज पढी तो कुरआन सुन कर जिन्नात जमा हो गये और मुसलमान हो गये, इस जगह पर मस्जिदें जिन बनी हुई है जो दो सड़कों के बीच में है, दरम से शिअबे आमिर की तरफ आते वक्त मोहल्ला शिअबे आमिर और मोहल्ला सुलयमानियह के दरम्यान सड़क पर नजर आती है, वोही “मस्जिदें जिन” है.

(१३) मस्जिदें रअयह : रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने इत्हे मक्का के रोज इस जगह जंदा नसब इरमाया था, जन्नतुल मअला के रास्ते में है, इस जगह अब मस्जिद बनी हुई है.

(१४) मस्जिदें तन्भीम : जिस जगहसे हजरत आइशा ने अहराम बांधकर उमरह किया था, मक्का से शिमाल की जनिब तीन मील पर है, इसको मस्जिदें आइशा भी कहते हैं.

(१५) मस्जिदें गैम : वादि-अ-मुहस्सब के पास मोहल्ला मआबदह में वाकेअ है, इसको मस्जिदें इज्जबह भी कहते हैं.

(१६) मस्जिद ज़ी तुवा : तन्वीम के रास्ते में है, रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم डालते अहराम में इसी जगह उतरते थे.

(१७) मस्जिद भैरु : मिना में बड़ी मस्जिद है, केहते हैं इसमें सतर (७०) नबी मद्फून हैं.

(१८) मस्जिद नमिरुड : अरफ़ात के किनारे पर बड़ी मस्जिद है.

(१९) मस्जिद मशअरुल हराम : मुअदलिफ़ामें बड़ी मस्जिद है, हज्जतुल वदाअमें हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم पूरी रात जिक व डिक और इबादत में मशगूल रहे.

(२०) मस्जिद इस्तिराहड : मिना से वापसी पर मक्का में दाबिल होने से पेडले जो मोहल्ला मआबदह है, इसी इलाके में अक मस्जिद है, १३/ जिल डिज्जा को हज से वापसी पर आप صلی اللہ علیہ وسلم ने जोहर और असर पढी थी और कुछ देर आराम भी किया था, इस लिये इसको “मस्जिद इस्तिराहड” केहते हैं.

(२१) मस्जिद कभश : हजरत अब्राहीम عليه السلام ने अपने

બેટે ઈસ્માઈલ عليه السلام કો જિસ જગહ પર કુર્બાન કરને કે લિયે લિટાયા થા ઓર અલ્લાહ ને કુર્બાની કો કબૂલ ફરમાકર હુંબા ભેજ દિયા થા, ઉસ જગહ હઝરત મુઆવિયહ رضي الله عنه ને મસ્જિદ તા'મીર કરવાઈ થી ઉસકો “મસ્જિદે કબ્શ” કેહતે હેં.

(૨૨) ગારે મુરસલાત : મસ્જિદે ખેફ કે જુનૂબી હિસ્સે મેં એક છોટા ગાર હે, આપ صلى الله عليه وسلم ને ઈસ પહાડીકી છાંવમેં આરામ ફરમાયા થા, ઈસી જગહ સૂર-એ-મુરસલાત નાઝિલ હુઈ થી, ઈસ લિયે ઈસકો “ગારે મુરસલાત” કેહતે હેં.

(૨૩) મસ્જિદે જોઅરાનહ : તાઈફ કે રાસ્તે મેં હરમ કી હદ હે. તાઈફ સે આતે હુએ આપ صلى الله عليه وسلم ને ઈસ જગહ એહરામ બાંધા થા, યહાં અબ મસ્જિદ બની હુઈ હે “મસ્જિદે જોઅરાનહ.”

## મદીના કે તારીખી ઓર મુતબરક

### મકામાત

(૧) જન્નતુલ બકીઅ : મદીના મુન્વરહ કા કદીમ



કબ્રસ્તાન હે, જિસમેં બેશુમાર બડે બડે સહાબા  
 ઓર અવલિયા મદફૂન હેં, યે કબ્રસ્તાન દુન્યા કે  
 સારે કબ્રસ્તાનોં સે અફઝલ હે.

(૨) ઉહદ પહાડ : મદીનાસે તીન મીલ પર એક પહાડ  
 હે જિસકે બારેમેં હુઝૂર ﷺ ને ફરમાયા : **“يُحِبُّنَا”**  
**“وَنُحِبُّهُ”** તર્જમા : “યે હમસે મોહબ્બત કરતા હે  
 ઓર હમ ઉસ સે મોહબ્બત કરતે હેં” યહાં પર  
 મશહૂર જંગ હુઈ થી, જિસમેં હુઝૂર ﷺ ઝખ્મી  
 હુએ ઓર સત્તર (૭૦) સહાબા શહીદ હુએ.

(૩) મસ્જિદે કુબા : મદીના સે દો મીલ કે ફારસે પર  
 મસ્જિદ હે, ઈસ મસ્જિદ કા ઝિક કુઆન મેં ભી  
 આયા હે, ઈસ મેં દો રકાત નમાઝ કા સવાબ  
 ઉમરહ કે બરાબર હે.

(૪) મસ્જિદે જુમ્અહ : કુબા સે મદીના આતે હુએ રાસ્તે  
 મેં મોહલ્લા બનૂ હાશિમ થા જહાં આપ ﷺ ને  
 હિજરત કે વક્ત પેહલા જુમ્અહ અદા કિયા થા,  
 ઈસ જગહ મસ્જિદ બની હુઈ હે.

(૫) મસ્જિદે મુસલ્લા યા ગમામહ : વો જગહ હે જહાં

रसूलुल्लाह ﷺ ईदैन की नमाज पढा करते थे,  
और इस जगह आपने ईस्तिस्काअ की नमाज  
पढाई थी.

- (६) मस्जिदे अहज़ाब या मस्जिदे इत्ह : गज़व-अ-  
अहज़ाब में इस जगह भंडक षोदी गई थी,  
अल्लाह तआला ने हुआ कबूल की और  
मुसलमानों को इत्ह लुई.
- (७) मस्जिदे जुबाब : गज़व-अ-भंडक में इस जगह  
पर रसूलुल्लाह ﷺ का ज़ैमा नसब था और  
आपने नमाज भी पढी थी.
- (८) मस्जिदे डिप्लतैन : वादि-अ-अकीक के करीब अक  
टीले पर ये मस्जिद है. इसमें अक मेहराब  
भयतुल मकदिस की तरफ़ है और दूसरी कअबा की  
जानिब, कअबा की तब्दीली का वाकिआ इसी  
मस्जिदमें हुआ था, इस लिये इसको मस्जिदे  
डिप्लतैन केहते हैं.
- (९) मसाजिदे भमसा : जिस जगह भंडक की लडाई  
हुई थी उस जगह पांच मस्जिदें बनी हुई हैं,

મસ્જિદે ફત્હ, મસ્જિદે સલમાન ફારસી ﷺ મસ્જિદે  
અબૂબક સિદીક ﷺ મસ્જિદે ઉમર ફારુક ﷺ મસ્જિદે  
અલી ﷺ.

(૧૦) મસ્જિદે ફઝીહ : અવાલી મેં હે. રસૂલુલ્લાહ ﷺ  
ને ઈસ જગહ યહૂદ બની નઝીર કે મુહાસરે કે વક્ત  
નમાઝ પઢી થી, ફઝીહ ખજૂરકી શરાબ કો કેહતે  
હેં. હઝરત અબૂ અય્યૂબ અન્સારી રદિ એક  
જમાઅતકે સાથ શરાબ પીને મેં મશ્ગૂલ થે, જબ  
શરાબ કી હુર્મત નાઝિલ હુઈ તો ઉન્હોને સારે મટકે  
ગિરા દિયે, ઈસ લિયે ઈસ મસ્જિદ કો મસ્જિદે  
ફઝીહ કેહતે હેં, ઈસકા નામ મસ્જિદે શમ્સ ભી હે.

(૧૧) મસ્જિદે બની કુરયઝહ : મસ્જિદે ફઝીહ સે  
મશ્રિકમેં થોડે ફાસ્લે પર હે. યહૂદ બની કુરયઝહકે  
મુહાસરે કે વક્ત રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને ઈસ જગહ  
કયામ ફરમાયા થા ઓર હઝરત સઅદ બિન  
મઆઝ કો યહૂદ ને હકમ મુકરર ફયમાયા થા,  
ઉન્હોને ઈસી જગહ ફૈસલા સુનાયા થા કે મદોં કો  
ક્તલ કિયા જાએ, બચ્ચોં ઓર ઓરતોં કો કેદ કિયા

જાએ.

(૧૨) મસ્જિદે ઈજાબહ : જન્નતુલ બકીઅ સે શિમાલ કી જાનિબ હે. યે મસ્જિદ આબાદી કે દરમ્યાન વાકેઅ હે, ઈસકો મસ્જિદે બનૂ મુઆવિયહ ભી કહા જાતા હે, ક્યૂં કે કભી યહાં બનૂ મુઆવિયહ રહા કરતે થે. એક દિન રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને ઈસમે નમાઝ પઢી ઔર દેર તક દુઆ કી, ઉસકે બાદ ફરમાયા : “મૈને અપને રબ સે તીન દુઆએં કીં એક યે કે મેરી ઉમ્મત કહતસાલી સે હલાક ન હો, દૂસરી યે કે મેરી ઉમ્મત ઈજિતમાઅી તૌર પર ગર્ક ન હો, યે દો દુઆએં કબૂલ હુઈ, તીસરી યે કે બાહમ ઈપ્તેલાફ ઔર ખાનાજંગી ન હો, યે કબૂલ ન હુઈ.

(૧૩) મસ્જિદે ઉબય બિન કઅબ : બકીઅ સે મુત્તસિલ હે, ઈસ જગહ ઉબય બિન કઅબ કા મકાન થા, રસૂલુલ્લાહ ﷺ યહાં અકસર તશરીફ લાતે થે ઔર નમાઝ પઢતે થે.

(૧૪) બિઅરે અરીસ : મદીના મેં કુબા કે કરીબ એક કુંવાં હે ઉસકા પાની નિહાયત સાફ શફફાફ ઔર મીઠા

था, रसूलुल्लाह ﷺ अके भरतभा तशरीफ़ लाअे, पांव लटकाकर मन पर बैठ गअे, उसके भाठ डरत अबूभक व उस्मान तशरीफ़ लाअे, वो भी डुर की एतेभाअ में एसी तरड बैठ गअे, आप ने उसका पानी पिया, वुजू किया और लुआजे दडन उसमें डाला, एसको बिअरे भातम भी केडते डै, क्यूं के डरत उस्मान के डथ से भातमे नुबुवत गिर गई थी, आप ने बडोत तलाश करवाई मगर न मिली.

(१५) बिअरे बिदाअड : ये कुंवां मदीना मुनव्वरड में था, जहां आप ﷺ और सहाभा गुस्ल इरमाते थे, और यहां आप तशरीफ़ लाकर कपडे धोते थे, तिर्मिजी और अबू दावूद में एसका जिक डे, मगर अब ये कुंवां मौजूद नहीं डे.

(१६) बिअरे इमड : मदीना से तीन मील पर कुंवां था, पेडले यडूदी का था, मुसलमानों की तकलीफ़ पर डरत उस्मानने डरीद कर वकई कर दिया था.

(१७) बिअरे एडून : ये भी कुंवां था, एसी तरड

“बिअरे बुस्सड” और “बिअरे गरस” भी था.

(१८) बिअरे भरडा : ये उजरत अबू तल्डा का भाग था, हुजूर ﷺ अकसर यहाँ तशरीफ़ लाते थे और इसका पानी पीते.

ये सात कुंवे मशहूर थे, इसके अलावा मदीना में और भी कुंवे थे, जिनका पानी हुजूर ﷺ और सहाबाने इस्तेमाल किया था. मसलन : बिअरे अन, बिअरे अवाइ, बिअरे अनस, बिअरुलउज्जरिम, बिअरु रिसकायड, बिअरे अबू अय्यूब, बिअरे उरवड, बिअरे जरदान (जिसमें लबीद यडूदीने हुजूर ﷺ पर ज़हू करके बाल कंधे में बांधकर दफ़न कर दिये थे) बिअरुल कदीम, बिअरुस्सकिथ्यड, बिअरे मुवयतड, बिअरे फ़ातिमा.

(१९) मकामे गजव-अे-बदर : बदर अेक गांव का नाम हे जो पहाडियों में आबाद हे, इसी गांव की अेक वादी में इस्लाम की सभसे पेडली जंग हुइ, जिसका नाम गजव-अे-बदर हे. ये बस्ती मक्का से तीन सौ कीलो भीटर और मदीना से दैठ सौ कीलो भीटर दूर हे, अब इस जगड बडी आबादी हे

और अेक मस्जिद भी बनी हुई है, जिसका नाम  
 “मस्जिद अरीस” है, इसी के करीब अेक बडार  
 दीवारी में शुद्धा-अे-बदर मढ़ून हैं.

## तवाइ के सात इेरों की और मोका मडल की दुआअें

डमें डर मोका मडल पर अमल का तरीका और  
 दुआअें बताई गई हैं, जिससे वो अमल इबादत और  
 अल्लाड के कुर्ब का जरिया बनता है, लिडाज् इस सइर  
 में सुन्नत की और मोका मडल की दुआओं की पूब  
 रियायत करना याडिये.

### डर से निकलने की दुआ

डर या क्यामगाड से निकलते वक्त ये दुआ पढे तो  
 इन्शा अल्लाड शयतान और दुश्मनों से डिइज्जत डोगी  
 और डर मुश्किल आसान डो जाअेगी.

“بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ”

[तिर्बिजी : २/१८१]

तर्जमा : अल्लाह के नाम से सफ़र शुरू करता हूँ, अल्लाह ही पर भरोसा करता हूँ, गुनाहों से डिफ़ाजत और एभाहत पर कुदरत अल्लाह तआला की मदद के बगैर नहीं हो सकती.

”اللَّهُمَّ بِكَ أَصُولٌ وَبِكَ أَحْوَالٌ وَبِكَ أَسِيرٌ“

(حصن حصين - १८०)

तर्जमा : ओ अल्लाह ! तेरी मदद से उम्मा करता हूँ और तेरी मदद से तदबीर करता हूँ और तेरी मदद से सफ़र करता हूँ, चलता हूँ.

सवारी पर सवार होने की दुआ

सवारी पर ये दुआ पढकर सवार हो जाये :

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرْنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ

وَأَنَا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ (مسلم १/ ४३४)

तर्जमा : अल्लाह की ज़ात पाक है, जिसने इसको हमारे इफ्तियार में दिया है और हम इसको अपने काबू में करने के अहल नहीं थे और हम अपने रब के पास ज़रूर लौटनेवाले हैं.



## दौराने सफ़र पढते रहें

दौराने सफ़र ये दुआ पढते रखा करें :

” اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَ نَا هَذَا وَاطْوِعْنَا بَعْدَهُ  
اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصّٰحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي  
الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ  
الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ “

(مشکوٰۃ: ۱/ ۲۱۳)

तर्जुमा : ओ अल्लाह ! हमारे इस सफ़र को हम पर आसान फ़रमा और इसकी दूरी को हम पर समेट दे. ओ अल्लाह ! आपही सफ़र में हमारे रफ़ीक हें और आपही हमारे अहल व अयाल की देखभाल करनेवाले हें, ओ अल्लाह ! मैं आपके दरबार में सफ़र की मशक़त से पनाह याहता हूं, और पनाह याहता हूं भुरी डालत देखने से, और वापस आकर घरमें बरियों में और माल में भुरी डालत देखने से.



وَوَفَاءٌ بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِسُنَّتِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ  
 وَسَلَّمَ“ (तासी खान १/ ३१५)

तर्जुमा : अल्लाह के नाम से तवाफ़ करता शुरु करता  
 हूँ, अल्लाह बख़ोत बडा है, अल्लाह ही के लिये हर  
 ता'रीफ़ है, और दुरुद व सलाम अल्लाह के रसूल صلى الله عليه وسلم  
 पर नाज़िल हो. ओ अल्लाह ! तुज़ पर धिमान लाते हुअे  
 और तेरी किताब की तस्दीक और तेरे अहद को पूरा  
 करने और तेरे नबी की सुन्नत की धित्तिबाअ में हज़रे  
 अस्वद को यूमता हूँ.

### तवाफ़ के सात डेरों की दुआअें

ये बात याद रभें के तवाफ़ के सात डेरों की अलग  
 अलग दुआअें उलमाने लिभी हें, ये सारी दुआअें ला  
 अलतअयीन हुज़ूर صلى الله عليه وسلم से साबित हें, लेकिन धिस  
 पास तरतीब से मन्कूल नहीं हें, धिस लिये धनके अलावा  
 भी दुआअें पढी जा सकती हें, अलबत्ता रुकने यमानी  
 और हज़रे अस्वद के दरम्यान की दुआ पास धिस  
 तरतीब से साबित है.

## तवाफ़ के پہلے یکرر کی دُعا

تواف کے پہلے یکرر میں یہ دُعا پڑھ :

” سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ  
 أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ،  
 وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ  
 وَسَلَّمَ اللَّهُمَّ إِيْمَانًا بِكَ وَتَصْدِيقًا بِكَلِمَاتِكَ وَوَفَاءً  
 بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِسُنَّتِ نَبِيِّكَ وَحَبِيبِكَ سَيِّدِنَا  
 مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ “ (قاضی خان ۱/۳۱۶)

” اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمَعَاوَةَ  
 الدَّائِمَةَ فِي الدِّينِ وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ  
 وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ “ (حصن حصین ۲۲۲ منتخب شدہ)

تواف میں : اذکار کی جات اور اہل سے پاک ہے اور  
 تمام تا'ریکے اذکار کے لیے ہے، اذکار کے سوا کوئی  
 عبادت کے لایک نہیں، اذکار بڑھت بڑا ہے، اسکی

मदद के बगैर गुनाहों से बचा नहीं जा सकता, और उसी की मदद से ईबादत पर कुदरत होती है, अल्लाह बहोत बडा है और बहोत बडी अजमतवाला है, हुजूर ﷺ पर दुइद व सलाम नाजिल हो, ऐ अल्लाह ! हम तुज पर ईमान लाने की हालत में और तेरे कलिमात की तस्दीक करके और अहद को पूरा करते हुअे और तेरे नबी की सुन्नत की ईत्तेबाअ में तवाइ करते हैं.

ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुजसे अइव और सलामती का सवाल करता हूं, और दीन और दुन्या और आभिरत में दाईमी दरगुजर और हुसूले जन्नत और जहन्नम से नजात के साथ काम्याबी की दरभास्त करता हूं.

**रुकने यमानी और उजरे अस्वद के**

**दरम्यान पढने की दुआ**

तवाइ के सात यक्करो में जो अलग अलग दुआओं हैं वो रुकने यमानी तक पूरी करलें, फिर रुकने यमानी और उजरे अस्वद के दरम्यान ये दुआ पढे, ये उस वक्त में पढना उटीस से साबित है, लिहाजा सातों यक्करो में

रुकने यमानी और उजरे अस्वद के दरम्यान ये दुआ पढे  
 ”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعُفُوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا  
 وَالْآخِرَةِ، رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ  
 حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (تبيين الحقائق: ۱۸/۲) وَأَدْخِلْنَا  
 الْجَنَّةَ مَعَ الْأَبْرَارِ يَا عَزِيزُ يَا غَفَّارُ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ“

तर्जमा : ओ अल्लाह ! मैं आपसे दुन्या व आभिरत  
 की भलाई और माफी यादता हूँ, ओ हमारे रब ! हमको  
 दुन्या और आभिरत की भलाई अता इरमा और  
 जहन्नम के अजाब से हमको बचावे और जन्नत में नेक  
 लोगों के साथ हमको दाखिल इरमा, तू बडा गालिब और  
 बडा बहिशश करनेवाला, दोनों जहां का पालनहार हे.

### तवाफ़ के दूसरे यक्कर की दुआ

तवाफ़ के दूसरे यक्कर में ये दुआ पढे :

”اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا الْبَيْتَ بَيْتِكَ وَالْحَرَمَ حَرَمُكَ  
 وَالْأَمْنَ أَمْنُكَ وَالْعَبْدَ عَبْدُكَ وَأَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ

عَبْدِكَ وَهَذَا مَقَامُ الْعَائِدِيكَ مِنَ النَّارِ، فَحَرِّمُ  
لُحُومَنَا وَبِشْرَتَنَا عَلَى النَّارِ، اللَّهُمَّ حَبِّبِ إِلَيْنَا  
الْإِيمَانَ وَزَيِّنْهُ فِي قُلُوبِنَا وَكَرِهْهُ إِلَيْنَا الْكُفْرَ  
وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ“

(حصن حصين: مترجم ۱۹۳)

”اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ“

(حصن حصين ۸۷)

”اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي جَنَّتَكَ بِغَيْرِ حِسَابٍ“

تہجما : اے اے اللہ ! یہ دہر تیرا ہی دہر ہے، ہر م  
تیرا ہی ہر م ہے، یہاں کا امان و امان تیرا ہی کاہم  
کیا ہوا ہے اور ہر ہندا تیرا ہی ہندا ہے اور میں  
تیرا ہی ہندا ہوں اور تیرا ہی ہندا جاہل ہوں، یہ مکام  
تیری مدد سے جہنم کی آگ سے پناہ اور لیکڑت  
کا ہے، پس ہمارے گوشت اور ہمڈے کو جہنم پر  
ہرام کرہے۔ اے اے اللہ ! ہمیں ہمان کی موہبت اتا

इरमा, और हमारे दिलों को ईमान के नूर से मुनव्वर करदे और कुई व कुसूक से हमें नइरत अता इरमा और हमको खिदायत याइता लोगों में शामिल इरमा.

औ अल्लाह ! मुजको कयामत के दिन के अजाब से बया, जिस दिन तू अपने बंदों को दो बारह जिंदा इरमायेगा.

औ अल्लाह ! मुजको बगैर खिसाब किताब जन्त अता इरमा.

## तवाइ के तीसरे यक्कर की दुआ

तवाइ के तीसरे यक्कर में ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشَّرِكِ وَالشِّقَاقِ

وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْءِ الْمُنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ

فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ “ (تبيين الحقائق: ۲/ ۱۷)

” اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَاَعُوْذُبِكَ

مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخِزْيِ



“ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ”  
(تبيين الحقائق: ۱۷/۲)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं तेरे दीन और अहकाम में शक करने से पनाह मांगता हूँ, मैं पनाह मांगता हूँ किसी को तेरा हमसर बनाने से और तेरे अहकाम की मुआलफत करने से और निझाक से, सूअे अप्लाक से, भुरी थीऊ देभने से, और पनाह मांगता हूँ माल, अहल व अयाल और अवलाद की तब्दीली से.

ऐ अल्लाह ! मैं कभ्र के इत्ने से तेरे दरबार में पनाह मांगता हूँ, और जिंदगी और सकराते मौत की सप्तियों से पनाह मांगता हूँ, और दुन्या और आभिरत की उस्वाँ से मैं तेरी पनाह याहता हूँ.

तवाइ के योथे यक्कर की दुआ

तवाइ के योथे यक्कर में ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُورًا وَسَعِيًّا مَشْكُورًا  
وَذَنْبًا مَغْفُورًا وَعَمَلًا صَالِحًا مَقْبُولًا وَتِجَارَةً لَّنْ  
تَبُورَ (زيلعي: ۱۷/۲) يَا عَلِيْمُ مَا فِي الصُّدُوْرِ اٰخِرِ جِنِّي

يَا اللَّهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ  
 مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ  
 كُلِّ إِثْمٍ وَالْغَنِيمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ “ (ترمذی: ۱۰۹/۱) وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ  
 وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ “ (حسن حصین: ۳۲۱) رَبِّ قَنَعْنِي بِمَا  
 رَزَقْتَنِي وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَنِي وَاخْلُفْ عَلَيَّ كُلَّ  
 غَائِبَةٍ لِي مِنْكَ بِخَيْرٍ “ (کتاب المناسک : ۳۹)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे इस उज को उज्जे मबउर  
 और मकबूल बना, और मेरी इस कोशिश को ठिकाने पर  
 लगा, और मेरे गुनाहों की बप्शिश इरमा, और मेरे  
 इस अमल को कबूलतरीन अमले सालेह बना, और  
 इसको ऐसी तिज्जरत बना जिसमें कोई घाटा न हो. ऐ  
 दिलों की बातों को ज्ञाननेवाले ! ऐ अल्लाह ! मुजको  
 तारीकी से निकालकर उज्जले में दाबिल इरमा.

ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तेरी रहमत के उसूल के  
 उरायेअ और तेरी बप्शिश के रास्ते और गुनाह से  
 सलामती की इल्तेमास करता हूं, और हर नेकी पर

કાઈમ રેહને ઔર જન્નત કી કામ્યાબી ઔર જહન્નમ સે નજાત કી ઇસ્તેમાસ કરતા હૂં.

ઐ મેરે રબ ! ઇસ રોઝી પર કનાઅત અતા ફરમા જો તૂને મુજે દી હે, ઔર મુજે બરકત અતા ફરમા ઉન ચીઝોં મેં જો તૂને મુજે અતા ફરમાઈ હેં, ઔર તૂ ખૈર કે સાથ મેરી હર ઉસ ચીઝ કા નિગેહબાન બનજા જો મુજસે ગાઈબ હે.

## તવાફ કે પાંચવેં ચક્કર કી દુઆ

તવાફ કે પાંચવેં ચક્કર મેં યે દુઆ પઢે :

”اللَّهُمَّ أَظْلَنِي تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَلَا بَاقِيَ إِلَّا وَجْهَكَ، وَاسْقِنِي مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شُرْبَةً هَنِيئَةً مَرِيئَةً لَا نَظْمًا بَعْدَهَا أَبَدًا“ (یعنی: ۱۷/۲)

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلْتُكَ مِنْهُ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ  
 وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ“ (ترمذی: ۱۹۲/۲)

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعِيمَهَا وَمَا يَقْرَبُنِي  
 إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ  
 وَمَا يَقْرَبُنِي إِلَى النَّارِ مِنْ قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ“

(حسن حسین: ۳۲۰)

तर्जमा : ओ अल्लाह जिस दिन तेरे अर्श के साये के अलावा कोई साया न होगा उस दिन मुझे अर्श के साये के नीचे जगह अता इरमा, और तेरी जात के अलावा कोई बाकी रेहनेवाला नहीं है, और मुजको अपने नबी صلی اللہ علیہ وسلم के डौज से सैराब करदे, और ऐसा भुश जायका पानी पिलादे जिसके बाद इर प्यास न लगे.

ओ अल्लाह ! मैं तुजसे डर उस थीज का सवाल करता हूं जिसका तेरे नबी मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم ने सवाल किया था, और मैं डर उस थीज के शर से पनाह मांगता हूं जिससे तेरे नबी मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم ने पनाह मांगी है, और तू ही

मददगार और तू ही काड़ी है, और अल्लाह की मदद के  
 बगैर मुसीबत से लिफाजत और ध्वाहत की कुदरत नहीं  
 हो सकती.

औ अल्लाह ! बेशक मैं तुजसे जन्नत और उसकी  
 नेअमतों का सवाल करता हूँ और उस चीज का सवाल  
 करता हूँ कौल इल और अमल में से जो मुजको जन्नत में  
 पड़ोयादे, और मैं जहन्नम के अजाब से पनाह मांगता  
 हूँ और कौल इल अमल में से हर उस चीज से पनाह  
 मांगता हूँ जो मुजको जहन्नम से करीब करदे.

### तवाइ के छटे यक्कर की दुआ

तवाइ के छटे यक्कर में ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اِنَّ لَكَ عَلٰى حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِىْمَا بَيْنِيْ  
 وَبَيْنِكَ، وَحُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِىْمَا بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَلْقِكَ،  
 اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا فَاغْفِرْهُ لِيْ وَمَا كَانَ لِخَلْقِكَ  
 فَتَحَمَّلْهُ عَنِّيْ وَاغْنِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنِ حَرَامِكَ  
 وَبِطَاعَتِكَ عَنِ مَعْصِيَّتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنَّ بَيْتَكَ عَظِيْمٌ  
 وَوَجْهَكَ كَرِيْمٌ وَاَنْتَ يَا اَللّٰهُ حَلِيْمٌ كَرِيْمٌ عَظِيْمٌ  
 تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ “ (کتاب المناک: ۴۵)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! बेशक तेरे मेरे ठीपर बेशुमार  
 डुकूक हैं जो तेरे और मेरे दरम्यान में हैं, और बेशुमार  
 डुकूक मेरे और तेरी मप्लूक के दरम्यान में हैं, ऐ अल्लाह  
 ! धनमें से जो डुकूक तेरे हैं तू उसे माफ़ इरमादे, और जो  
 तेरी मप्लूक के डुकूक हैं उन को अपनी मप्लूक से  
 बपशवाने की जिम्मेदारी ले ले, और मुजको उलाल  
 कमाई की तौझीक अता इरमा और डराम से डिफ़ाजत  
 इरमा ऐ अल्लाह ! तेरी धताअत के जरिअे से  
 मअसियत से डिफ़ाजत और तेरे इजल से गैरों के  
 मोडताज बनने और अेडसानमंद डोने से डिफ़ाजत  
 इरमा, ऐ बडोत जियादा बपशनेवाले ! ऐ अल्लाह !  
 बेशक तेरा घर बडी अजमतवाला डे, और तेरी ज़ात  
 करमवाली डे, ऐ अल्लाह ! तू बडा बुईबार करमवाला  
 डे और अजमतवाला डे, माफ़ करने को पसंद इरमाता डे

लिहाजा मुजे माफ़ करदे.

## तवाफ़ के सातवें यक्कर की दुआ

तवाफ़ के सातवें यक्कर में ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا كَامِلًا وَيَقِيْنًا صَادِقًا  
وَرِزْقًا وَّاسِعًا وَقَلْبًا خَاشِعًا وَلِسَانًا ذَاكِرًا وَحَلَالًا  
طَيِّبًا وَتَوْبَةً نَّصُوْحًا وَ تَوْبَةً قَبْلَ الْمَوْتِ وَرَاحَةً  
عِنْدَ الْمَوْتِ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ  
عِنْدَ الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ  
بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ، رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا  
(كتاب المناسك: ۴۹) ” وَالْحَقْنَىْ بِالصَّالِحِيْنَ “

तर्जुमा : ओ अल्लाह ! भेशक मै आपसे कामिल  
ईमान और सख्या यकीन और वसीअ रिजक का सवाल  
करता हूं, और भुशूअ करनेवाला हिल और जिक  
करनेवाली ज़भान, पाक उलाल कमाई, और सखी तौबा  
और मरने से पेहले तौबा की तौफ़ीक, और मौत के वक्त

आसानी, और मरने के बाद मग़ि़रत और रहमत, और हिसाब व किताब के वक्त माफ़ी और दरगुज़र, और जन्नत की काम्याबी, और जहन्नम से तेरी रहमत से नज़ात याहता हूँ. अै बडे ग़ालिब और बडे बख़्शिश करनेवाले ! अै मेरे रब ! मेरे इल्म में इजाज़ कर और मुज़को आबिरत में नेक लोगों के साथ शामिल कर.

तवाइ़ की दौ रकात के बाद

मक़ामे इब्राहीम पर पढने की दुआ

तवाइ़ की दौ रकात पढकर मक़ामे इब्राहीम पर जाकर आदम عليه السلام वाली दुआ पढे :

दुआ-अे-आदम عليه السلام की इज़ीलत ये हे के जो इस दुआ को पढेगा अल्लाह उसके तमाम गुनाहों को माफ़ करेगा, और उसकी तमाम परेशानी दूर करेगा, फिर कभी इंक व इका की नौबत न आयेगी, और दुन्या जलील छोकर उसके पास आयेगी.

” اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعَلَّمُ سِرِّي وَعَلَانِيَتِي فَاَقْبِلْ  
مَعْدِرَتِي وَتَعَلَّمُ حَاجَتِي فَاَعْطِنِي سُوْلِي وَتَعَلَّمُ



مَا فِي نَفْسِي فَاعْفِرْ لِي ذُنُوبِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ  
 إِيمَانًا يُبَاشِرُ قَلْبِي وَيَقِينًا صَادِقًا حَتَّى أَعْلَمَ أَنَّهُ لَا  
 يُصِيبُنِي إِلَّا مَا كَتَبْتَ لِي وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِي يَا  
 أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ “  
 (فتح القدير: ۲/۳۵۷)

तर्जमा : ऐ अल्लाह तू मेरे जाहिर और बातिन को  
 भूख जानता है मेरा उज कबूल इरमा, तू मेरी हाजत को  
 जानता है लिहाजा मेरी तलब पूरी इरमा, और तू मेरे  
 दिल की बात जानता है, मेरा गुनाह माफ़ इरमा, ऐ  
 अल्लाह ! मैं तुजसे ईमाने रासिख और यकीने सादिक  
 का सवाल करता हूँ, जो मेरे दिल में उतर जाये, उताके मैं  
 जान लूँ के मुजको सिर्फ़ ईतनी मिकदार पछोय सकती है  
 जितना तूने मेरे लिये लिख दिया है, और मैं तुजसे उस  
 चीज पर रजामंदी तलब करता हूँ जितना तूने मेरे मुकदर  
 में रखा है, ऐ तमाम रहम करने वालों में ज़ियादा रहम  
 करने वाले.

## मुलतजिम पर पढने की दुआ

मुलतजिम जान-अे-कअबा के दरवाजे और उजरे अस्वद के दरम्यान बयतुल्लाह की दीवार का हिस्सा हे. हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم एस जगह बरये की तरह लिपट कर दुआ करते थे, एस जगह अगर भोका मिल जाये तो ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا بَيْتِكَ الَّذِي جَعَلْتَهُ مُبَارَكًا وَهُدًى  
لِّلْعٰلَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ كَمَا هَدَيْتَنِيْ لَهٗ فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ وَلَا  
تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَيْتِكَ وَاَرْزُقْنِي الْعُوْدَ  
اِلَيْهِ حَتّٰى تَرْضٰى عَنِّي بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ “  
(مراقى الفلاح: ۳۰۱)

तर्जमा : अै अल्लाह ! बेशक ये तेरा वो घर हे जिसको तूने तमाम आलम के लिये बरकत और हिदायत का जरिया बनाया हे. अै अल्लाह ! जिस तरह तूने मुझे एस उज के लिये हिदायत दी एस तरह मेरी तरफ से कभूल इरमा, और मेरे एस सइर को अपने घर का

आपरी सड़र न बना, और ढो भरल लौट कर आना  
नसीब इरमा, यहाँ तक के तू मुजसे राजी हो जाओ, औ  
अरुभर राखीमीन.

## मीजाबे रलमत के नीये पढने की दुआ

बयतुल्लाह के परनाले के नीये भी दुआओं कबूल  
होती हैं, उसको मीजाबे रलमत केहते हैं, उस जगह ये  
दुआ पढे :

” اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيْمَانًا لَا يَزُولُ وَيَقِينًا  
لَا يَنْفَدُ وَمُرَافَقَةً نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،  
اللَّهُمَّ أَظْلِنِي تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّ  
عَرْشِكَ وَأَسْقِنِي بِكَاسِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ  
وَسَلَّمَ شَرْبَةً لَا أَظْمَأُ بَعْدَهَا أَبَدًا “ (تبيين الحقائق: ۱/۲)

तर्जमा : औ अल्लाह मैं तुजसे औसा ईमान मांगता  
हूँ जो कभी भत्म न हो, और तेरे नबी صلی اللہ علیہ وسلم का साथ  
मांगता हूँ. औ अल्लाह ! मुजे उस दिन अपने अर्श का  
साया अता इरमा जिस दिन अर्श के साये के अलावा कोई

साया न होगा, और मुहम्मद ﷺ के प्याले से औसा शरबत पि्लादे के उसके बाद कभी प्यास न लगे.

## ठमठम पीने की दुआ

ठमठम का पानी पीते वक्त ये दुआ पढे :

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا وَشِفَاءً

مِنْ كُلِّ دَاءٍ“ (قاضى غان: 1/139)

तर्जमा : ओ अल्लाह ! मैं तुजसे नफ़ा देनेवाला ईल्म, वसीअ रिजक और हर भीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूँ.

## सफ़ा पर यठने की दुआ

सफ़ा पहाडी पर यठते वक्त ये दुआ पढे :

”بِسْمِ اللَّهِ أَبَدًا بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ

مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ“ (غنية الناسك: 48)

तर्जमा : मैं अल्लाह का नाम लेकर वहां से शुरु करता हूँ जहां से अल्लाह तआला ने शुरु इरमाया, भेशक सफ़ा और मरवह अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं.

सझ और मरवड पर ञडे डोकर

पढने की दुआ

सझ पछाडी पर ञडे डोकर ञयतुल्लाड की तरङ्ग रुढ करके तीन मरतढा ये दुआ पढ कर अल्लाड से दुआ ढांगे और मरवड पर ढी यही दुआ पढे :

” لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا إِلَهَ  
إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعُدَّاهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ  
الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ“  
(مسلم: ३११/१: فتاوى الناسك: ५१)

तर्जुमा : अल्लाड के सिवा कोरु ँढादत के लायक नही, वो तन्हा डे उसका कोरु डमसर नही, उसी के लिये मुल्क डे, उसीके लिये तढाढ ता'रीङ्गे हैं, वही जिंदा करता डे वही ढारता डे, वही डर थील पर कादिर डे. अल्लाड के सिवा कोरु ँढादत के लायक नही, वो तन्हा डे, उसने अपना वाअदा पूरा इरढाया, और अपने ञंढे की ढदड की, और तन्हा उसने लशकरो को शिकस्त दी.

मीलैन अफ़्ज़रैन के दरभ्यान पढने की दुआ

सभी करते हुअे जब उरे सुतूनों के पास पढीये तो ये पढे :

” رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعَلَّمَ إِنَّكَ أَنْتَ

الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ “ (यू. २०/४)

तर्जमा : ओ मेरे परवरदिगार ! मेरी मगफ़िरत  
इरमा, और मुज पर रहम इरमा, और उन गुनाहों को  
माफ़ परमा जो तेरे इल्म में हे, बेशक तूही सब पर  
गालिब और ज़ियादा करम करनेवाला हे.

मीलैन अफ़्ज़रैन के बाद मरवह की तरफ़

यलने की दुआ

जब उरे सुतूनों से मरवह की तरफ़ बढे तो ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اسْتَعْمِلْنِيْ بِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِيْ عَلٰى مِلَّتِهِ وَاَعِزَّنِيْ مِنْ مُضَلَّاتِ

الْفِتَنِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ “ (तैयिन् अल्हात्तः २०/४)

तर्जमा : ॐ अल्लाह ! मुजको मुहम्मद ﷺ की सुन्नत का पाबंद बना, और मुजको आप ﷺ के दीन पर मौत अता इरमा, और हर गुमराहकुन इतनों से अपनी रहमत के जरिये से मेरी लिफाजत इरमा, ॐ सबसे ज़ियादा रहम करनेवाले मुजे अपनी रहमत से नवाज.

अरफ़ात की तरफ़ जाते हुअे पढने की दुआ

८/ ज़िल डिज्जल को अरफ़ात की तरफ़ रवाना डोते वक़्त ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَوَجَّهَكَ  
 اَرَدْتُ فَاجْعَلْ ذَنْبِيْ مَغْفُوْرًا وَّحَاجًّا مَّبْرُوْرًا وَاِرْحَمْنِيْ  
 وَلَا تُخَيِّبْنِيْ وَبَارِكْ فِيْ سَفَرِيْ لِىْ وَاَقْضِ بَعْرَفَاتِ  
 حَاجَتِيْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ “  
 (زيلى: ۲/۲۳)

तर्जमा : ॐ अल्लाह ! मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जे डोता हूँ और तुज पर भरोसा करता हूँ और तेरी जात का इरादा रभता हूँ, लिडाजा मेरे गुनाह माफ़ इरमा और मेरे डज

को कबूल इरमा और मुज पर रहम इरमा, और मुजे  
नामुराह न बना और मेरे सइर में भरकत अता इरमा  
और मैदाने अरफ़ात में मेरी डाजत पूरी इरमा, बेशक तू  
हर थीज पर कादिर है.

## जबले रहमत पर नज़र पडते वक़्त पढने की दुआ

मैदाने अरफ़ात में जब जबले रहमत पर नज़र पडे  
तो ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَوَجَّهَكَ  
اَرَدْتُ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَتُبْ عَلَيَّ وَاَعْطِنِيْ سُوْلِيْ  
وَوَجِّهْ لِي الْخَيْرَ اَيْنَمَا تَوَجَّهْتُ سُبْحَانَ اَللّٰهِ  
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ “ (زيلى ۲/۲۳)

तर्जमा : ओ अल्लाह ! मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जहे डोता हूँ  
और तुज पर भरोसा करता हूँ और तेरी जात का धरदा  
करता हूँ, ओ अल्लाह ! मेरे गुनाह माफ़ इरमा और मेरी  
तौबा कबूल इरमा और मेरी मुराह मुजे अता इरमा, हर



કિસ્મ કી ખૈર કો મેરી તરફ મુતવજજે ફરમા જિધર મૈં મુતવજજે હોતા હું, અલ્લાહ કી ઝાત પાક હે, હર તા'રીફ અલ્લાહ કે લિયે હે, અલ્લાહ કે સિવા કોઈ ઈબાદત કે લાયક નહીં ઓર અલ્લાહ બહોત બડા હે.

**મૈદાને અરફાત મેં સબસે અફઝલ દુઆ**

હુઝૂર ﷺ ને ઈરશાદ ફરમાયા : “મૈંને ઓર મુજસે પેહલે નબિયોને મૈદાને અરફાત મેં જો દુઆએં કી હૈં ઉનમેં સબસે અફઝલ દુઆ-એ-તૌહીદ હે, વો યે હે :

” لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ “

(તરમઝી: ૧૧૧/૨, હસન હસીન: ૧૮૩)

તર્જમા : અલ્લાહ કે સિવા કોઈ ઈબાદત કે લાયક નહીં, વો તન્હા હે, ઉસકા કોઈ શરીક નહીં, ઉસી કે લિયે મુલ્ક હે ઓર ઉસી કે લિયે તમામ તા'રીફેં હૈં, ઉસીકે હાથ મેં તમામ ભલાઈ હે, વો હર ચીઝ પર કાદિર હે.

અગર હો સકે તો ઈસ દુઆ કો અરફાત મેં સૌ (૧૦૦) મરતબા પઢે, યે ચોથા કલિમા હે.

હઝરત જાબિર બિન અબ્દુલ્લાહ رضي الله عنه સે મન્કૂલ હે,  
عليه السلام ને ફરમાયા : “જો મુસલમાન અરફે કે દિન ઝવાલ કે  
 બાદ મૈદાને અરફાત મેં કિબ્લા રુખ હોકર

” لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
 الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ “

(૧૦૦ મરતબા)

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ لَمْ يُولَدْ ۝  
 { ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ }

(૧૦૦ મરતબા)

” اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا  
 صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ  
 مَجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ  
 وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ  
 إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ “

(૧૦૦ મરતબા)

पढेगा तो अल्लाह तआला इरिशतो से इरमाअेंगे :

औ मेरे इरिशतो ! उस बंदे की क्या जजा हे जिसने मेरी तस्बीह व तहलील, तकबीर व ता'जीम, ता'रीफ व सना की और मेरे रसूल صلى الله عليه وسلم पर दुइद भेजा.

औ मेरे इरिशतो ! तुम गवाह रहो, मैंने उसको बप्श दिया और उसकी शफाअत कबूल की और अगर वो अहले अरफात के लिये शफाअत करता तो भी कबूल करता. (तइसीर दुर्रे मन्सूर बहवाला बयहकी)

मुजदलिफा की रात में पढने की दुआ

मुजदलिफा की रात में ये दुआ कसरत से पढे :

” اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ اَنْ تَرَزُقْنِىْ فِيْ هٰذَا الْمَكَانِ  
جَوَامِعَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ وَاَنْ تَصْرِفَ عَنِّى السُّوْءَ كُلَّهُ فَاِنَّهٗ  
لَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ غَيْرُكَ وَلَا يَجُوْدُ بِهٖ اِلَّا اَنْتَ “

(زيلى: ۲/۲۷)

तर्जमा : औ अल्लाह ! भेशक मैं तुजसे इस जात का सवाल करता हूं के मुजको इस मुकदस मकाम में तमाम

नेकियों और भलाइयों का मजमूआ अता इरमा और मुजसे उर किस्म की बुराईयों को दूर इरमा, भेशक तेरे अलावा ये काम कोई नहीं कर सकता, और न तेरे सिवा कोई दूसरा ईस भलाई की बज्शिश कर सकता हे.

## मुजदलिझ से मिना पड़ोंयकर

### पढने की दुआ

जब मुजदलिझ से मिना पड़ोंय जाअे तो जमरात तक पड़ोंयने से पेहले तख्बियह कसरत से पढे और ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ هٰذِهِ مِنِّيْ قَدْ اَتَيْتُنَا وَاَنَا عَبْدُكَ وَاِبْنُ

عَبْدِكَ اَسْئَلُكَ اَنْ تَسُنَّ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهِ عَلَيَّ

اَوْلِيَّائِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ “ (قااضى غان: ۱/۳۱۷)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! ये मकामे मिना हे जिसमें मैं डालिर हुवा हूँ, और मैं तेरा बंदा हूँ और तेरा बंदाआदल हूँ, मैं तुजसे सवाल करता हूँ के तू मुज पर ऐसा अेहसान इरमा जैसा के तूने अपने अवलिया और नेक बंदों पर किया हे ऐ सबसे बढकर रहम करनेवाले.

## जमरात की रमी के बाद की दुआ

जमरात की रमी के बाद ये दुआ पढे :

”اللَّهُمَّ اجْعَلْ حَجَّامَبْرُورًا وَذَنْبًا مَغْفُورًا وَسَعْيًا

مَشْكُورًا“ (زیلعی: ۳۰/۲)

तर्जमा : ॐ अल्लाह ! इसको मेरे लिये उज्ज्वले मज्जर बना और मेरे गुनाह माफ़ इरमा और मेरी कोशिश को कबूल इरमा.

## उलक की दुआ

कुर्बानी के बाद सर मुंडवाते वक्त ये दुआ पढे :

”اللَّهُمَّ بَارِكْ فِي نَفْسِي وَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَاجْعَلْ لِي

بِكُلِّ شَعْرَةٍ مِنْهَا نُورًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ“ (قاضی غان: ۳۱۹/۱)

तर्जमा : ॐ अल्लाह ! मेरे अंदर भरकत अता इरमा और मेरे गुनाह माफ़ इरमा और सर के धन बालों में से हर बाल के बटले में कयामत के दिन अकेके नूर अता इरमा.

## मक्का मोअज़्ज़मा से वापसी की दुआ

तवाफ़े विद्याअ के बाद द्वा रक़ात पढ़े, फिर उज़रे अस्वद को भोसा दे, उसके बाद कअबतुल्लाह की जुदाई पर अइसोस व उसरत के साथ ખૂબ गिडगिडाकर रोअे, रोना न आअे तो रोने की सी सूरत बनाअे और उसरत की निगाह से अयतुल्लाह की तरफ़ देਖता हुवा रोता हुवा मस्जिद उराम से बाहर निकले और दरवाजे पर अडे डोकर ये दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَيْتِنَا  
 وَارْزُقْنِي الْعُوْدَ اِلَيْهِ “  
 (قااضى غان: ३/११)

” لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
 الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عَاقِدٌ اَبْبُوْنَ  
 تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ سَاجِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ صَدَقَ  
 اللهُ وَعْدُهُ وَنَصَرَ عَبْدُهُ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهُ “  
 (مسلم: १/२३५)

तर्जमा : अै अल्लाह ! मेरे ईस सइर को अपने घर

का आपरी सफ़र न बना मेरे लिये दो बार लौट कर आना मुक़दर इरमा, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वो तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिये बादशाहत है, उसी के लिये हर किस्म की ता'रीफ़ है, वही हर चीज़ पर कादिर है. हम लौटनेवाले हैं, तौबा करनेवाले हैं, इबादत करनेवाले हैं, अपने रब की ता'रीफ़ करनेवाले हैं. अल्लाह ने अपना वाअदा सय कर दिभाया और अपने भंटे की मदद इरमाई और उसने तने तन्हा लश्करों को शिकस्त दी.

## मदीना मुनव्वरह के करीब

### पहोंयकर पढने की दुआ

जब मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हों तो रास्ते में कसरत से दुइइ शरीफ़ पढते रहें, और जब मदीना के करीब पहोंय ज़अें तो ये दुआ पढे :

” اَللّٰهُمَّ هٰذَا حَرَمٌ رَّسُوْلِكَ فَاَجْعَلِ الدُّخُوْلَ وَقَايَةً  
مِّنَ النَّارِ وَاَمَانًا مِّنَ الْعَذَابِ وَسُوْءِ الْحِسَابِ “

(फ़ासि ख़ान: १/१३९)

તજમા : ઐ અલ્લાહ ! યે આપકે નબી ﷺ કા હરમે પાક હે, ઈસ હરમ કો મેરે લિયે જહન્નમ સે બયાવ કા ઝરિઆ બના ઔર ઈસકો મેરે લિયે અઝાબ ઔર બુરે હિસાબ કિતાબ સે હિક્કાઝત કા ઝરિઆ બના.

## મદીના મુનવ્વરહ મેં દાખલે

### કે વક્ત પઢને કી દુઆ

જબ મદીના મુનવ્વરહ મેં દાખિહ હો જાએ તો યે દુઆ પઢે :

” بِسْمِ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ  
 رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ  
 صِدْقٍ وَأَرْزُقْنِي مِنْ زِيَارَةِ رَسُولِكَ مَا رَزَقْتَ  
 أَوْلِيَاءَكَ وَأَهْلَ طَاعَتِكَ وَأَنْقِذْنِي مِنَ النَّارِ  
 وَاعْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي يَا خَيْرَ مَسْئُولٍ اللَّهُمَّ اجْعَلْ  
 لَنَا فِيهَا قَرَارًا وَرِزْقًا حَسَنًا “

(غزوة التناك: ۳۷۶)



“अल्लाह का नाम लेकर दाबिल होता हूँ, जो अल्लाह ने याहा वही होगा, अल्लाह की मदद के बगैर गुनाहों से बचना और ईबादत की तौफ़ीक नहीं होती. मैं मेरे रब ! मुझको ईमान की सलामती के साथ दाबिल इरमा, और ईमान की सलामती के साथ मुझे वापस लौटा, और मुझे अपने रसूल ﷺ की ऐसी ज़ियारत नसीब इरमा जैसी तूने अपने अवलिया और नेक बंधों को नसीब इरमाई, और जहन्नम की आग से बचा, और मेरी मग़फ़िरत इरमा, और मुझ पर रहम इरमा. मैं अल्लाह ! तू उनमें सबसे बेहतर है जिनसे मांगा जाता है. मैं अल्लाह ! हमारे लिये मदीना मुनव्वरह में बेहतरीन ठिकाना बना और अर्र्छा रिज़क मुक़दर इरमा.

रोज़-ओ-अक़दस पर सलात व सलाम

” الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ، الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ، الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ

يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ مِنْ جَمِيعِ خَلْقِ اللَّهِ، الصَّلَاةُ  
وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ وُلْدِ آدَمَ، الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ  
عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ- يَا رَسُولَ  
اللَّهِ إِنِّي أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
وَأَشْهَدُ أَنَّكَ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَأَشْهَدُ أَنَّكَ يَا رَسُولَ  
اللَّهِ قَدْ بَلَغْتَ الرِّسَالََةَ وَأَدَّيْتَ الْأَمَانَةَ وَنَصَحْتَ  
الْأُمَّةَ وَكَشَفْتَ الْغُمَّةَ وَجَزَاكَ اللَّهُ عَنَّا خَيْرًا  
جَزَاكَ اللَّهُ عَنَّا أَفْضَلَ وَأَكْمَلَ مَا جَزَى بِهِ نَبِيًّا  
عَنْ أُمَّتِهِ اللَّهُمَّ أَعْطِ الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ  
وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي  
وَعَدْتَهُ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ وَأَنْزِلْهُ الْمَنْزِلَ  
الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ إِنَّكَ سُبْحَانَكَ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ  
(فتح القدير)

तर्जमा : सलात व सलाम हो आप पर औ अल्लाह के  
 रसूल, सलात व सलाम हो आप पर औ अल्लाह के  
 उबीय, सलात व सलाम हो आप पर औ अल्लाह की  
 मज्लूक में सबसे बेहतर, सलात व सलाम हो आप पर  
 औ तमाम मज्लूक में सबसे बरगुजीदह, सलात व  
 सलाम हो आप पर औ अवलादे आदम के सरदार, दुरुद  
 व सलाम हो आप पर औ अल्लाह के नबी और उसकी  
 रहमतें और उसकी बरकतें. या रसूलल्लाह ! बेशक मैं  
 इसकी गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई इबादत  
 के लायक नहीं, वो तन्हा है उसका कोई हमसर नहीं,  
 और मैं इस बात की गवाही देता हूँ के आप उसके बंदे  
 और उसके रसूल हैं, और इस बात की गवाही देता हूँ के  
 बेशक आपने या रसूलल्लाह ! रिसालत का हक अदा कर  
 दिया और अमानत अदा कर दी और उम्मत की भैर  
 ज्वाली इरमाई और उम्मत की बेयेनी दूर इरमाई,  
 अल्लाह तआला आपको हमारी तरफ से बेहतरीन  
 बहला अता इरमाये, अल्लाह तआला आपको हमारी  
 तरफ से अइजल और कामिल तरीन बहला अता  
 इरमाये जैसा के किसी नबी को उसकी उम्मत की तरफ से

दिया जाता है. ओ अल्लाह ! तू आप ﷺ को वसीला और इज़ीलत और बुलंद दर्ज़ अता इरमा और उसको मकामे महमूद पर पहुँचा दे, जिसका तूने वाअदा किया था, बेशक तू वाअदा ज़िलाज़ी नहीं करता, और आप ﷺ को अपने नज़दीक मुकररब दर्ज़ अता इरमा, बेशक आप पाक जात हैं और अज़ीम तरीन इज़ल और अहसानवाले हैं.

**रसूल सल. के वसीले से शफ़ाअत की दुआ**

सलात व सलाम के बाद हुज़ूर ﷺ से एन अल्लाज से शफ़ाअत की दरभास्त करे :

”يَا رَسُولَ اللَّهِ اسْأَلُكَ الشَّفَاعَةَ وَأَتَوَسَّلُ بِكَ إِلَى اللَّهِ فِي أَنْ أَمُوتَ مُسْلِمًا عَلَى مِلَّتِكَ وَسُنَّتِكَ“

(فتح القدير: ۱/۱۸۱/۳)

तर्ज़मा : “या रसूलल्लाह ! मैं आपसे शफ़ाअत का तलबगार हूँ और अल्लाह के दरबार में आपका वसीला याहता हूँ इस बात पर के मुसलमान होने की हालत में आपकी सुन्नत व भिल्लत पर मरूँ.”

## दूसरों की तरफ़ से सलाम

दूसरोंने अगर सलाम पेश करने के लिये कहा है तो  
 खुशूर ﷺ की भिदमत में इस तरफ़ सलाम पेश करे :

”الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْ فُلَانٍ“

بُنِ فُلَانٍ يَسْتَشْفِعُ بِكَ إِلَى رَبِّكَ “ (معلم الحج)

तर्जमा : “या रसूलल्लाह ! आप पर दुइद व सलाम  
 हो कुलां धुंने कुलां (इस जगह उसका नाम लें) की तरफ़  
 से, वो आपसे अपने रब के दरबार में शफ़ाअत का  
 तलबगार है, लिहाजा आप उसके लिये और तमाम  
 मुसलमानों के लिये शफ़ाअत इरमाअें.”

अगर बडोत सारे लोगोंने सलाम पेश किया है और  
 नाम याद नहीं है तो इस तरफ़ पेश करे :

”الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْ جَمِيعٍ“

مَنْ أَوْصَانِي بِالسَّلَامِ عَلَيْكَ “ (معلم الحج)

तर्जमा : या रसूलल्लाह ! आप पर दुइद व सलाम  
 हो उन तमाम लोगों की तरफ़ से जिन्होंने मुजको आप  
 पर सलाम पेश करने की लिदायत की है.

હઝરત અબૂબક સિદીક રદિ. પર સલામ

હઝરત અબૂબક સિદીક ﷺ પર ઈસ તરહ સલામ  
પેશ કરે :

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ وَثَانِيَهُ فِي  
الْغَارِ وَرَفِيقَهُ فِي الْأَسْفَارِ وَآمِينَهُ عَلَى الْأَسْرَارِ أَبَا  
بَكْرٍ الصِّدِّيقِ جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا“

(فتح القدير: ۸۱/۳)

તર્જમા : “આપ પર સલામ હો એ અલ્લાહ કે રસૂલ  
કે ખલીફા, ગારમાં ઉનકે સાથી, સફરોં મેં ઉનકે રફીક,  
ઉનકે રાઝોં કે અમીન અબૂબક સિદીક આપ પર સલામ  
હો, અલ્લાહ તઆલા આપકો ઉમ્મતે મુહમ્મદિયહ કી  
તરફ સે જઝા-એ-ખૈર અતા ફરમાએ.”

હઝરત ઉમરે ફારુક રદિ. પર સલામ

હઝરત ઉમર ﷺ કો ઈન અલ્લાઝ મેં સલામ અઝ કરે :

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ الْفَارُوقَ“

الَّذِي أَعَزَّ اللَّهُ بِهِ الْإِسْلَامَ إِمَامَ الْمُسْلِمِينَ مَرْضِيًّا  
 حَيًّا مَيِّتًا جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا“  
 (غزوة الحديد: ٣٨)

તર્જમા : “ઐ અમીરલ મુઅમિનીન ઉમરે ફારુક !  
 આપ પર સલામ હો, જિનકે ઝરિએ અલ્લાહ ને ઇસ્લામ  
 કો ગલ્બા અતા ફરમાયા, ઐ મુસલમાનોં કે ઇમામ !  
 ઝિંદગી ઓર મૌત મેં અલ્લાહ કે પસંદીદા, અલ્લાહ  
 તઆલા આપકો ઉમ્મતે મુહમ્મદિયહ કી તરફ સે  
 જઝા-એ-ખેર અતા ફરમાએ.”

જન્નતુલ બકીઅવાલોં પર અલ્લાઝે

સલામ

”السَّلَامُ عَلَيْكَ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ فَإِنَّا إِن شَاءَ  
 اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ (ابوداؤد: ٣٦٢/٢) اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَهْلِ  
 الْبَقِيْعِ الْغَرَقَدِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ“

તર્જમા : ઐ ઇમાનવાલી કૌમ ! તુમ પર સલામ હો,

बेशक हम ईशा अल्लाहु तआला तुमसे मिलनेवाले हैं.

ऐ अल्लाह ! अहले बकीअ की मगफ़िरत इरमा. ऐ अल्लाह ! हमारी और उनकी मगफ़िरत इरमा.

## मदीना मुनव्वरह से वापसी की दुआ

जब मदीना मुनव्वरह से वापसी का इरादा हो तो मस्जिदए नब्वी में रियाजुल जन्नह में दो रक़ात पढ़कर रोज़-अ-अतहर पर हाज़िर होकर सलात व सलाम पढ़े, उसके बाद भूष दुआएं करे, और फिर ये दुआ पढ़े :

” اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْ هَذَا آخِرَ الْعَهْدِ بِنَبِيِّكَ  
وَمَسْجِدِهِ وَحَرَمِهِ وَيَسِّرْ لِي الْعُودَ إِلَيْهِ وَالْعُكُوفَ  
لَدَيْهِ وَارْزُقْنِي الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ  
وَرُدَّنَا إِلَى أَهْلِنَا سَالِمِينَ غَانِمِينَ آمِنِينَ بِرَحْمَتِكَ  
يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ “

(तासीफान: ३११/१)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तेरे नबी के साथ और मस्जिदए नब्वी के साथ और हरमे नब्वी के साथ इस



जियारत को आपरी जियारत न बना, और मेरे लिये दो बारह लौटकर आने के सामान आसानी के साथ इरमाटे, और यहाँ आकर ठेहरना आसान इरमाटे, और दुन्या व आपिरत में मेरे लिये आकियत और सलामती मुकदर इरमा, और हमको अपने अहल व अयाल के पास सहीह सालिम और अज व सवाब के साथ वापस इरमाटे, या अरहमराहिमीन अपनी रहमत से मेरी दुआ कभूल इरमा.

### ખતમશુદ

બિફઝલિહી તઆલા હજ કા રિસાલા પૂરા હુવા, આપિર મેં અહકર નાકારહ તમામ ઝાચિરીન સે બસદ ઇલ્તિજા ગુઝારિશ કરતા હે કે ઇસ મુબારક સફર મેં મૌકા મહલ પર જહાં આપ અપને લિયે દુઆએં કરેં, તો વહાં અહકર કો ભી અપની દુઆઓં મેં શામિલ રખેં.

يأرب صل وسلم دائماً ابدا  
على حبيبك خير الخلق كلهم

اللهم تقبل منا انك انت السميع العليم وتب

علينا انك انت التواب الرحيم

الله اكبر كبيرا

والحمد لله كثيرا وسبحان الله بكرة واصيلا

والله الموفق والمستعان-

تاليفه دُعا

حيدرآباد پالانپوری (کاکوسی)

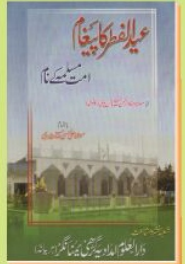
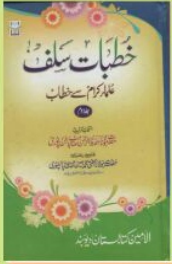
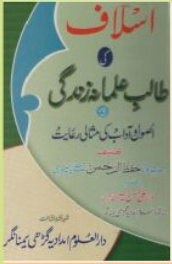
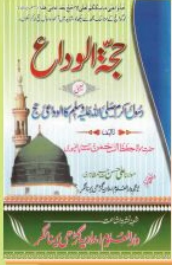
۰۷۳۲۳۷۹۲۹۴۹

## મોઅલ્લિક્ કી દીગર મુફીદ કિતાબેં

૧	અસ્લાફ કી તાલિબે ઈલ્માના ઝિંદગી	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે
૨	મોહબ્બતે રસૂલ નકલ વ અકલ કી રૌશની મેં	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે
૩	આસાન હજ (ઉર્દૂ, હિંદી, ગુજરાતી)	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે
૪	ઈદુલ ફિત્ર કા પૈગામ ઉમ્મતે મુસ્લિમા કે નામ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે
૫	ખુત્બાતે દઅવત (જિલ્દ અવ્વલ) બયાનાત મવલાના અહમદ લાટ સાહબ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે
૬	શબે બરાઅત કા પૈગામ ઉમ્મે મુસ્લિમા કે નામ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે
૭	રમઝાનુલ મુબારક તરબિયત કા મહીના	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે
૮	ઈદુલ અદહા કા પૈગામ ઉમ્મતે મુસ્લિમા કે નામ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હે

૯	હજજતુલ વદાઅ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હ
૧૦	શબે કદ્ર કા પૈગાર ઉમ્મતે મુસ્લિમા કે નામ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હ
૧૧	હજ કા પૈગાર ઉમ્મતે મુસ્લિમા કે નામ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હ
૧૨	પુત્બાતે સલફ (જિલ્દ વ્વલ) ઉલમા-એ-કિરામ સે ખિતાબ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હ
૧૩	પુત્બાતે સલફ (જિલ્દ દૌમ) ઉલમા-એ-કિરામ સે ખિતાબ	મન્ઝરે આમ પર આ ચુકી હ
૧૪	પુત્બાતે સલફ (જિલ્દ સૌમ) ઉલમા-એ-કિરામ સે ખિતાબ	ઝેરે તબઅ
૧૫	પુત્બાતે સલફ (જિલ્દ ચહારુમ) તલબા-એ-કિરામ સે ખિતાબ	ઝેરે તબઅ
૧૬	રસૂલુલ્લાહ ﷺ કી અખ્લાકી ઝિંદગી	ઝેરે તબઅ
૧૭	નફહતુદ દઅવહ વતબ્લીગ (અરબી)	ઝેરે તબઅ
૧૮	મેઅરાજ કા સફર	ઝેરે તબઅ

# مؤلف کی دیگر مطبوعات



مکتبہ ابن عباس (مسیبی)

Mobile: 9967300274  
9323872161